केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

निपुण भारत मिशन
हर बच्चे को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

अध्ययन सामग्री / Study Material

शैक्षिक सत्र / Session - 2023-24

कक्षा / Class - नौवीं

विषय / Subject - हिन्दी (अ)

विषय कोड / Subject Code - 002

तैयारकर्ता : संतोष कुमार कुशवाहा, सह-प्रशिक्षक (हिन्दी)

Prepared By: SANTOSH KUMAR KUSHWAHA, TA (HINDI)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

सेक्टर-33 सी, चंडीगढ़ / **SECTOR-33C, CHANDIGARH**

वेबसाइट / Website : zietchandigarh.kvs.gov.in

ई-मेल / e-mail :kvszietchd@gmail.com दूरभाष / Phone : 0172-2921841, 2921994

विषय-सूची / INDEX

क्र.सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
1.	अपठित बोध : गद्य व पद्य (बहुविकल्पी प्रश्न)	1
2.	व्याकरण भाग : निर्धारित प्रकरण (बहुविकल्पी प्रश्न)	8
3.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-1) : गद्य भाग (बहुविकल्पी प्रश्न)	21
4.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-1) : पद्य भाग (बहुविकल्पी प्रश्न)	33
5.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-1) : गद्य भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	42
6.	पाठ्य पुस्तक (क्षितिज-1) : पद्य भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	58
7.	पाठ्य पुस्तक (कृतिका-1) : पूरक भाग (वर्णनात्मक प्रश्न)	74
8.	रचनात्मक लेखन : अनुच्छेद लेखन व पत्र लेखन	83
9.	लघुकथा-लेखन तथा ई-मेल : सृजनात्मक लेखन	87
10.	संवाद-लेखन तथा सूचना-लेखन : सृजनात्मक लेखन	89
11.	सीबीएसई पाठ्यक्रम विनिर्देशन	94
12.	संदर्भ एवं विशेष आभार	97

खंड- क (वैकल्पिक प्रश्न)

अपठित बोध

अपठित बोध का अर्थ - अपठित शब्द का अर्थ है जो पढ़ा हुआ न हो। अर्थात ऐसा अवतरण जो पाठ्य पुस्तक से नहीं लिया गया है। यह शब्द 'अ' उपसर्ग, 'पठ्' धातु (क्रिया) तथा 'इत' प्रत्यय से मिलकर बना है। यहाँ 'अ' का अर्थ है 'नहीं' और 'पठित' का अर्थ है 'पढ़ा हुआ' या 'पढ़ा गया' अर्थात पहले नहीं पढ़ा हुआ। 'बोध' शब्द का अर्थ है 'समझ'। आशय यह है कि विद्यार्थियों को वह गद्यांश अथवा पद्यांश पढ़कर समझना है जो उनकी पाठ्य पुस्तक में नहीं है। अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश को समझने के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए।

✓ अपठित अवतरण का ध्यानपूर्वक मौन वाचन करते हुए उसे समझने का प्रयास करें।
✓ महत्त्वपूर्ण पंक्तियों, वाक्यांशों एवं शब्दों को पेंसिल से रेखांकित करें।
✓ अवतरण से संबंधित दिए गए प्रश्नों को पढ़कर उत्तर के लिए संभावित पंक्तियों को चिह्नांकित करें।
✓ जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने के लिए गद्यांश को पुन: ध्यान से पढ़ें।
✓ उत्तर हमेशा प्रश्न के अनुसार समुचित शब्दावली में देने का प्रयास करें।
✓ उत्तर संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली भाषा में होना चाहिए।
✓ सदैव ध्यान रखें कि शीर्षक मूल कथ्य से संबंधित होना चाहिए।
✓ उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास एवं मुहावरों पर ध्यान देना चाहिए।

अपठित गद्यांश (1)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवताः" अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है, यानी वहाँ सुख-समृद्धि शांति होती है। यह बात प्राचीनकाल में मनुस्मृति में कही गई थी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और यह बात नारी के सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी। बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी। प्राचीन काल में हमारे देश में नारी, समाज की बहुत सम्माननीय सदस्या थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ है। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरुषों के बराबर बैठती रही हैं और समाज के निर्माण कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

किंतु मध्यकाल तक आते-आते देश पर जल्दी जल्दी और कई आक्रमण हुए जिससे पूरी समाज व्यवस्था बिगड़ गई। ऐसे में नारी के प्रति लोगों की दृष्टि भी बदली तब नारी की सीमाएँ, धीरे-धीरे पर की चारदीवारी तक ही सिमटकर रह गई। आज हम जिस पुरुष प्रधान समाज की बात करते है, वह एक प्रकार के मध्यकाल की ही देन है। शायद यही कारण है कि मध्यकाल में मीरा के अलावा बहुत कम प्रतिष्ठित नारियों के नाम हमारे सामने आते है। प्राचीनकाल में यह स्थिति इतनी जटिल नहीं थी बल्कि उस काल में तो मातृसत्तात्मक समाज के भी प्रमाण मिलते हैं, यानी समाज में नारी को निर्णय लेने का पूरा अधिकार प्राप्त था।

i- "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवताः" इसका उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है?

(क) रामायण में

(ख) महाभारत में

(ग) विष्णु पुराण में

(घ) मनुस्मृति में

ii- किस काल में नारी हमारे देश में समाज की बहुत सम्माननीय सदस्या थी?

(क) आधुनिक काल में

(ख) मध्यकाल में

(ग) प्राचीन काल में

(घ) इनमें से कोई नहीं

iii- निम्नलिखित में से कौन प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ है?

(क) मैत्रेयी

(ख) गार्गी

(ग) गौतमी

(घ) उक्त सभी

iv- किस कारण से मध्य काल में सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ गई थी?

(क) जल्दी जल्दी कई आक्रमण होने से

(ख) नारियों का वर्चस्व बढ़ने से

(ग) समाज के क्षीण होने से

(घ) धर्म का उदय होने से

v- 'सुख-समृद्धि' में कौन-सा समास है?

(क) द्विगु समास

(ख) द्वंद्व समास

(ग) तत्पुरुष समास

(घ) कर्मधारय समास

उत्तर- i. (घ) मनुस्मृति में ii. (ग) प्राचीन काल में iii. (घ) उक्त सभी iv. (क) जल्दी जल्दी कई आक्रमण होने से v. (ख) द्वंद्व समास

अपठित गद्यांश (2)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

लोभी मनुष्य की मानसिक स्थिति विचित्र सी होती है। धन के प्रति उसकी ललक की तीव्रता और उत्कटता को देखकर ऐसा लगता है मानो वह सामान्य इनसान नहीं हो। सामान्य इनसान ललक की तीव्रता का शिकार होकर, तज्जन्य अशांति एवं अस्थिरता को स्वीकार कर ही नहीं सकता। धन इकट्ठा करना सभी चाहते हैं, लेकिन लोभी का धन इकट्ठा करना कुछ और ही है। वह बहुधा धन इसलिए इकट्ठा करता है जिसमे उसे किसी समय उसकी कमी न हो, परंतु उसे उसकी कमी हमेशा बनी ही रहती है।

पहले उसकी कमी कल्पित होती है, परंतु पीछे वह यथार्थ, असली हो जाती है, क्योंकि घर में धन रहने पर भी वह उसे काम में नहीं ला सकता। लोभ से असंतोष की वृद्धि होती है और संतोष का सुख खाक में मिल जाता है। लोभ से भूख बढ़ती है और तृप्ति घटती है। लोभ से मूलधन व्यर्थ बढ़ता है और उसका उपयोग कम होता है। लोभी का धन देखने के लिए, वृथा रक्षा करने के लिए और दूसरों को छोड़ जाने के लिए होता है। ऐसे

धन से क्या लाभ? ऐसे धन को इकट्ठा करने में अनेक कष्ट उठाने की अपेक्षा संसार भर में जितना धन है उसे अपना ही समझना अच्छा है।

i- किस मनुष्य की मानसिक स्थिति विचित्र सी होती है?

(क) वृद्ध मनुष्य की

(ख) संतोषी मनुष्य की

(ग) लोभी मनुष्य की

(घ) सामान्य मनुष्य की

ii- लोभी मनुष्य को किस चीज की कमी हमेशा बनी ही रहती है?

(क) प्रतिष्ठा की

(ख) धन की

(ग) कौशल की

(घ) इनमें से सभी

iii- किस कारण से संतोष का सुख खाक में मिल जाता है?

(क) लोभ के कारण

(ख) धन के कारण

(ग) ज्ञान के कारण

(घ) इनमें से सभी

iv- लोभी व्यक्ति का धन किसलिए होता है?

(क) लोभी का धन देखने के लिए होता है

(ख) वृथा रक्षा करने के लिए होता है

(ग) दूसरों को छोड़ जाने के लिए होता है

(घ) उक्त सभी

v- 'उपयोग' शब्द में मूल शब्द कौन-सा है?

(क) योग

(ख) उप

(ग) पयोग

(घ) उपयो

उत्तर- i. (ग) लोभी मनुष्य की ii. (ख) धन की iii. (क) लोभ के कारण iv. (घ) उक्त सभी v. (क) योग

अपठित गद्यांश (3)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

हर व्यक्ति में एक समूचा ब्रह्मांड वैसे ही बसा है जैसे छोटे से बीज में पूरा वृक्ष छिपा है। आदमी इस 'ब्रह्मांड की रचनात्मक और क्रियात्मक इकाई है। इस बात से विज्ञान भी सहमत है। वैज्ञानिक कहते हैं कि विश्व के प्रत्येक जीव की क्रिया और उसका स्वभाव अलग-अलग होता है। किन्हीं भी दो में एकरूपता नहीं होती। विभिन्न प्राणियों का समावेश ही संसार है।

इसी प्रकार से करोड़ों कोशिकाओं (सेल्स) से इस शरीर का निर्माण हुआ है। प्रत्येक का स्वभाव तथा कर्म भिन्न है, फिर भी यह मानव शरीर बाहर से एक दिखाई पड़ता है। प्रत्येक कोशिका जीवित है। कुछ सुप्त अवस्था में हैं, तो कुछ जाग्रत में। जैसे ही कुछ कोशिकाएँ मरती हैं, उनका स्थान दूसरी कोशिकाएँ स्वतः ले लेती हैं। सभी अपने-अपने काम में सतत लगी हुई हैं। वे कभी विश्राम नहीं करतीं। यदि इनमें से एक भी कोशिका काम करना बंद कर दे, तो इस शरीर का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

हालाँकि ये कोशिकाएं कार्य में तथा व्यवहार में एक-दूसरे से भिन्न हैं, परंतु ध्यान की विधि द्वारा इनमें उसी प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है जैसे सूर्य की किरणें चारों तरफ़ फैली होने के बावजूद, वे सौर बैटरी द्वारा एकत्र कर विद्युत तरंगों में बदली जा सकती हैं। जिस प्रकार आप इन्हें एक जगह एकत्र कर, केंद्रित और नियंत्रित कर बड़े-से-बड़ा काम ले सकते हैं ठीक उसी तरह से आदमी ध्यान के माध्यम से शरीर की सभी कोशिकाओं की ऊर्जा को एकत्र कर ऊर्ध्वगामी कर लेता है।

i- हर व्यक्ति में एक समूचा ब्रहमांड किस तरह से बसा हुआ है?

(क) जैसे संसार में अनेक तरह के जीव होते हैं

(ख) जैसे शरीर में कोशिकाएं बनी होती हैं

(ग) जैसे छोटे से बीज में पूरा वृक्ष छिपा है

(घ) जैसे मनुष्य का व्यवहार एक-दूसरे से भिन्न है

ii- विश्व के प्रत्येक जीव की क्रिया और उसका स्वभाव के संबंध में वैज्ञानिकों का क्या मत है?

(क) एक समान होता है

(ख) अलग-अलग होता है

(ग) कुछ में समान और कुछ में अलग

(घ) इनमें से कोई नहीं

iii- कुछ सुप्त अवस्था में हैं, तो कुछ जाग्रत में - यह कथन किससे संबंधित है?

(क) कोशिका से

(ख) मनुष्य से

(ग) ब्रहमांड से

(घ) जीव से

iv- कब शरीर का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा?

(क) लोभी का धन देखने के लिए होता है

(ख) वृथा रक्षा करने के लिए होता है

(ग) दूसरों को छोड़ जाने के लिए होता है

(घ) उक्त सभी

v- 'उपयोग' शब्द में मूल शब्द कौन-सा है?

(क) योग

(ख) उप

(ग) पयोग

(घ) उपयो

उत्तर- i. (ग) जैसे छोटे से बीज में पूरा वृक्ष छिपा है ii. (ख) अलग-अलग होता है iii. (क) लोभ के कारण iv. (घ) उक्त सभी v. (क) योग

अपठित काव्यांश - 1

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

भई, सूरज
जरा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,

यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेखबर
सपनों में खोया पड़ा है।
वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं।
उन्हें पाने घबरा कर भागेगा यह।
घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है जो सही क्षण में सजग है
सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ।

i- 'जरा इस आदमी को जगाओ' - इस पंक्ति में जगाने से क्या आशय है?

(क) सोते हुए आदमी को जगा देना

(ख) कर्तव्यहीन को सचेत करना

(ग) चारपाई पर पड़े व्यक्ति को उठा देना

(घ) मनुष्य के विषय में बता देना

ii- कवि के अनुसार कौन-सा आदमी सच से बेखबर है?

(क) जो एक स्थान पर बैठा है

(ख) जो नींद से जाग उठा है

(ग) जो कल्पनाओं में खोया पड़ा है

(घ) जो अपने पथ पर दौड़ रहा है

iii- बेवक्त जागने का हमारे ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) प्रगति करने वालों से हम पीछे हो जाते हैं

(ख) कुछ लोग हमसे पीछे रह जाते हैं

(ग) हमसे कोई आगे नहीं जा पाता है

(घ) सब लोग आगे चले जाते हैं

iv- कवि ने क्षिप्र किसे माना है?

(क) जो दूसरों के साथ रहता है

(ख) जो हमेशा आराम करता है

(ग) जो दूसरों से सदा आगे है

(घ) जो सही क्षण में सजग है

v- निम्नलिखित में से 'पवन' शब्द का समानार्थी शब्द नहीं है?

(क) समीर

(ख) वायु

(ग) निर्झर

(घ) अनिल

उत्तर- i. (ख) कर्तव्यहीन को सचेत करना ii. (ग) जो कल्पनाओं में खोया पड़ा है iii. (क) प्रगति करने वालों से हम पीछे हो जाते हैं iv. (घ) जो सही क्षण में सजग है v. (ग) निर्झर

अपठित काव्यांश - 2

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊ
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना बनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

i- किसके गहनों में गूथे जाने की पुष्प की इच्छा नहीं है?

(क) राजकुमारियों को पहनाए जाने वाले गहनों में
(ख) युवतियों के गले के हारों में
(ग) महारानी को पहनाए जाने वाले आभूषणों में
(घ) सुरबाला को चढ़ाये जाने वाले गहनों में

ii- सम्राटों के शव पर डाले जाने की किसकी कामना नहीं है?

(क) हरि की
(ख) पुष्प की
(ग) सम्राट की
(घ) देवी की

iii- भाग्य पर इठलाना- मुहावरे का क्या अर्थ है?

(क) भाग्य पर चढ़ना
(ख) किस्मत पर भरोसा करना
(ग) भाग्य पर प्रसन्न होना
(घ) किस्मत को कोसना

iv- अनेक वीर मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या करते हैं?

(क) अपना बलिदान देते हैं
(ख) अपना काम निकालते हैं
(ग) वे फूल चुनकर चलते हैं
(घ) वे शोक मनाते हैं

v- 'भाग्य' शब्द का विलोम शब्द है?

(क) सौभाग्य
(ख) सुभाग्य
(ग) अभाग्य
(घ) दुर्भाग्य

उत्तर- i. (घ) सुरबाला को चढ़ाये जाने वाले गहनों में ii. (ख) पुष्प की iii. (ग) भाग्य पर प्रसन्न होना iv. (क) अपना बलिदान देते हैं v. (घ) दुर्भाग्य

अपठित काव्यांश - 3

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

शब्दों की दुनिया में मैंने
हिन्दी के बल अलख जगाये।
जैसे दीप-शिखा के बिरवे
कोई ठण्डी रात बिताये।
जो कुछ हूँ हिन्दी से हूँ मैं
जो हो लूँ हिन्दी से हो लूँ॥
हिन्दी सहज क्रान्ति की भाषा
यह विप्लव की अकथ कहानी।
मैकॉले पर भारतेन्दु की
अमर विजय की अमिट निशानी।
शेष गुलामी के दागों को
जब धोलूँ हिन्दी में धोलूँ॥

i- शब्दों की दुनिया में कवि ने क्या किया है?

(क) अंग्रेजी भाषा को महत्त्व को महत्त्व दिया है
(ख) हिन्दी के प्रति चेतना जाग्रत की है
(ग) हिन्दी शब्दों को उन्नत बनाया है
(घ) जीवन को कठोर बनाया है

ii- हिन्दी के प्रति कवि के मन में कैसी भावना है?

(क) दया की
(ख) स्वार्थ की
(ग) समर्पण की
(घ) अज्ञानता की

iii- कवि ने हिन्दी को किस तरह की भाषा माना है?

(क) सहज क्रांति की भाषा
(ख) विप्लव की अकथ कहानी
(ग) मैकाले पर भारतेंदु की जीत
(घ) उपर्युक्त सभी

iv- 'अमर विजय की अमिट निशानी' - यह पंक्ति किसके लिए है?

(क) हिन्दी भाषा के लिए
(ख) मैकाले के लिए
(ग) भारतेंदु जी के लिए
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- कवि किस दाग को हिन्दी में धो लेना चाहता है?

(क) विजय की निशानी को
(ख) बची हुई यादों को
(ग) गुलामी के दागों को

(घ) पिछड़ेपन के दागों को

उत्तर- i. (ख) हिन्दी के प्रति चेतना जाग्रत की है ii. (ग) समर्पण की iii. (घ) उपर्युक्त सभी iv. (घ) (क) हिन्दी भाषा के लिए v. (ग) गुलामी के दागों को

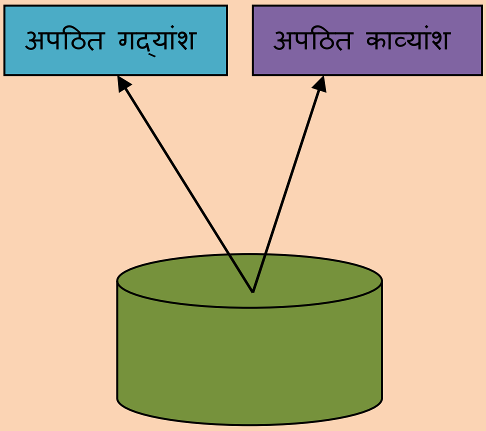

व्याकरण : उपसर्ग

उपसर्ग- 'उपसर्ग' शब्द 'उप' और 'सर्ग' के योग से बना है। 'उप' पास या समीप के लिए प्रयुक्त होता है और 'सर्ग' का अर्थ होता है रचना या बनाना। इस तरह से उपसर्ग का अर्थ हुआ पास आकर नया शब्द रचना या बनाना।

परिभाषा- वह शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पहले आकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देता है, उपसर्ग कहलाता है। जैसे - 'चार' एक शब्द है उसके पहले 'प्र' आने से 'प्रचार' शब्द बनता है। यहाँ 'चार' का अर्थ (चार संख्या) बदल कर 'प्रचार' (विज्ञापन) हो गया। इसी तरह से वि + मान = विमान, उप + चार = उपचार, आ + मरण = आमरण इत्यादि।

ध्यातव्य- उपसर्ग का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है। एक उपसर्ग के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं क्योंकि उपसर्ग शब्द से जुड़ने के बाद ही अर्थ देता है। इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है।

क्र.	उपसर्ग	मूल शब्द	नए शब्द
1.	अ	शांति, मन, सत्य, काल, डिग	अशांति, अमन, असत्य, अकाल, अडिग
2.	अध	पका, खिला, मरा, जला, भरा	अधपका, अधखिला, अधमरा, अधजला, अधभरा
3.	अन	पढ़, देखा, बन, मोल, भल	अनपढ़, अनदेखा, अनबन, अनमोल, अनभल
4.	उन	तीस, साठ,	उनतीस, उनसठ,
5.	अव	गुण, सर,	अवगुण, अवसर,
6.	क	चोट, पूत, चौड़ी, मल,	कचोट, कपूत, कचौड़ी, कमल,
7.	कु	चक्र, पुत्र, मार्ग, चाल, तंत्र	कुचक्र, कुपुत्र, कुमार्ग, कुचाल, कुतंत्र
8.	दु	बला, लार, गुना, पट्टा,	दुबला, दुलार, दुगुना, दुपट्टा
9.	नि	डर, यम, वास, हत्था, पूत	निडर, नियम, निवास, निहत्था, निपूत
10.	पर	लोक, सर्ग, हित,	परलोक, परसर्ग, परहित,
11.	बिन	देखा, ब्याहा, बाप, सुना	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनबाप, बिनसुना
12.	भर	पेट, दिन, पूर, मार,	भरपेट, भरदिन, भरपूर, भरमार
13.	सु	फल, कर्म, डौल, मति, धार	सुफल, सुकर्म, सुडौल, सुमति, सुधार
14.	अति	क्रमण, रिक्त, वृष्टि,	अतिक्रमण, अतिरिक्ति, अतिवृष्टि
15.	अधि	नायक, पति, सूचना, कार	अधिनायक, अधिपति, अधिसूचना, अधिकार
16.	अभि	मान, यान, प्राय, मुख, ज्ञान	अभिमान, अभियान, अभिप्राय, अभिमुख, अभिज्ञान

17.	अनु	क्रम, वाद, सार, राग, करण	अनुक्रम, अनुवाद, अनुसार, अनुराग, अनुकरण
18.	अप	मान, कार, यश, हरण, शब्द	अपमान, अपकार, अपयश, अपहरण, अपशब्द
19.	आ	जीवन, कंठ, गमन, क्रमण, दान	आजीवन, आकंठ, आगमन, आक्रमण, आदान
20.	उत्	कृष्ट, थान, सर्ग, पाद, पन्न	उत्कृष्ट, उत्थान, उत्सर्ग, उत्पाद, उत्पन्न
21.	उप	कार, वास, हार, देश, ग्रह	उपकार, उपवास, उपहार, उपदेश, उपग्रह
22.	दुर्	बल, दशा, गुण, गम, भाग्य	दुर्बल, दुर्दशा, दुर्गुण, दुर्गम, दुर्भाग्य
23.	निर्	जल, गुण, भय, दोष, यात	निर्जल, निर्गुण, निर्भय, निर्दोष, निर्यात
24.	परा	भव, क्रम, जय, मर्श,	पराभव, पराक्रम, पराजय, परामर्श
25.	परि	पूर्ण, श्रम, जन, कल्पना, तोष	परिपूर्ण, परिश्रम, परिजन, परिकल्पना, परितोष
26.	प्र	हार, बल, सिद्‌ध, गति, दान	प्रहार, प्रबल, प्रसिद्‌ध, प्रगति, प्रदान
27.	प्रति	कूल, निधि, रूप, वर्ष, वाद	प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रतिरूप, प्रतिवर्ष, प्रतिवाद
28.	वि	जय, शेष, योग, भेद, संगति	विजय, विशेष, वियोग, विभेद, विसंगति
29.	सम्	वाद, चार, कीर्ण, बंध , भव	संवाद, संचार, संकीर्ण, संबंध, संभव
30.	अल	सुबह, विदा, गरज, बत्ता	अलसुबह, अलविदा, अलगरज, अलबत्ता
31.	कम	ज़ोर, बख्त, अक्ल	कमजोर, कमबख्त, कमअक्ल
32.	खुश	दिल, नसीब, हाल, बू	खुशदिल, खुशनसीब, खुशहाल, खुशबू
33.	गैर	क़ानूनी, हाज़िर, जिम्मेदार, मुल्क	गैरक़ानूनी, गैरहाज़िर, गैरजिम्मेदार, गैरमुल्क
34.	दर	असल, हक़ीकत, म्यान	दरअसल, दरहक़ीकत, दरम्यान
35.	ना	लायक, समझ, पसंद, राज	नालायक, नासमझ, नापसंद, नाराज
36.	ब	नाम, दौलत, दस्तूर, गैर	बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
37.	बद	किस्मत, नसीब, नाम, जुबान	बदकिस्मत, बदनसीब, बदनाम, बदजुबान
38.	बर	दाश्त, खाश्त, बस	बरदाश्त, बरखाश्त, बरबस
39.	बा	इज्ज़त, क़ायदा, मौक़ा,	बाइज्ज़त, बाक़ायदा, बामौक़ा
40.	बे	वकूफ़, चारा, इज्ज़त, ईमान, वजह	बेवकूफ़, बेचारा, बेइज्ज़त, बेईमान, बेवजह
41.	बिल	कुल,	बिलकुल
42.	ला	परवाह, इलाज़, वारिश, जवाब,	लापरवाह, लाइलाज़, लावारिश, लाजवाब,
43.	सर	ताज, दार, पंच, फ़रोश, जमीं	सरताज, सरदार, सरपंच, सरफ़रोश, सरजमीं
44.	हम	वतन, दर्द, राह, सफ़र, उम्र	हमवतन, हमदर्द, हमराह, हमसफ़र, हमउम्र
45.	हर	दिन, बार, दिल, एक	हरदिन, हरबार, हरदिल, हरएक

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

i- 'प्रयत्न' शब्द में उपसर्ग बताइए।

(क) परा

(ख) प्रति

(ग) प्र

(घ) पर

ii- 'अभि' उपसर्ग से कौन-सा शब्द नहीं बना है?

(क) अभियान

(ख) अभिमान

(ग) अभिप्राय

(घ) अभिन्न

iii- 'बदकिस्मत' शब्द में मूल शब्द बताइए।

(क) बद

(ख) किस्मत

(ग) मत

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- 'निर्गुण' शब्द में उपसर्ग बताइए।

(क) नि

(ख) निर्

(ग) गुण

(घ) ण

v- 'अधि' उपसर्ग से बना शब्द कौन-सा है?

(क) अधिक

(ख) अधिकार

(ग) अधम

(घ) अधीन

उत्तर- i. (ग) प्र ii. (घ) अभिन्न iii. (क) बद iv. (ख) निर् v. (ख) अधिकार

व्याकरण : प्रत्यय

प्रत्यय- 'प्रत्यय' शब्द 'प्रति' और 'अय' के योग से बना है। 'प्रति' के बाद या अंत के लिए प्रयुक्त होता है और 'अय' का अर्थ होता है आना या चलना। इस तरह से प्रत्यय का अर्थ हुआ शब्द के बाद में आना और नया शब्द बनाना।

परिभाषा- वह शब्दांश जो किसी मूल शब्द के बाद में लगकर उस शब्द के अर्थ या व्याकरणिक कोटि में परिवर्तन कर देता है, प्रत्यय कहलाता है। जैसे - 'पत्थर' एक शब्द है उसके बाद 'ईला' आने से 'पथरीला' शब्द बनता है। यहाँ 'पत्थर' शब्द व्याकरण की एक कोटि (संज्ञा) से बदलकर 'पथरीला' (विशेषण) हो गया। इसी तरह से मनुष्य + ता = मनुष्यता, संसार + इक = सांसारिक, आ + मरण = आमरण इत्यादि।

ध्यातव्य- प्रत्यय का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है। एक प्रत्यय भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ जुड़कर भिन्न अर्थ देता है। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता है।

प्रत्यय के भेद: प्रत्यय के दो भेद हैं- (1) तद्धित प्रत्यय (2) कृत प्रत्यय

(1) तद्धित प्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों के अंत में लगने वाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। इस प्रत्यय के संयोग से बने शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं।

जैसे: देश + ई = देशी, अपना + पन = अपनापन, अच्छा + आई = अच्छाई।

क्र. सं.	मूल शब्द	प्रत्यय	निर्मित शब्द
1.	मनु, कुरु, गर्व,	अ	मानव, कौरव, गौरव
2.	भूख, प्यास,	आ	भूखा, प्यासा,
3.	बुरा, दवा, भला	आई	बुराई, दवाई, भलाई
4.	सोना, लोहा,	आर	सोनार, लोहार
5.	जुआ, खेल	आड़ी	जुआड़ी, खिलाड़ी

6.	ससुर	आल	ससुराल,
7.	कृपा, दया, श्रद्धा	आलु	कृपालु, दयालु, श्रद्धालु
8.	मीठा, गीला,	आस	मिठास, गिलास
9.	राम, नर	आयन	रामायण, नारायण
10.	समाज, अर्थ	इक	सामाजिक, आर्थिक
11.	पुष्प, विकास, प्रकाश	इत	पुष्पित, विकसित, प्रकाशित
12.	लाल, नीला, काला	इमा	लालिमा, नीलिमा, कालिमा
13.	लोटा, खाट	इया	लुटिया, खटिया
14.	स्नेह, फेन	इल	स्नेहिल, फेनिल
15.	वर, बल	इष्ठ	वरिष्ठ, बलिष्ठ
16.	सरकार, देश	ई	सरकारी, देशी
17.	नमक,	ईन	नमकीन
18.	केन्द्र, भारत	ईय	केन्द्रीय, भारतीय
19.	पत्थर, रोब	ईला	पथरीला, रोबिला
20.	मामा, चाचा	एरा	ममेरा, चचेरा
21.	नशा,	एड़ी	नशेड़ी
22.	बाप, बुढ़ा	औती	बपौती, बुढ़ौती
23.	ढोल, कटु	क	ढोलक, कटुक
24.	मुख, दुख	ड़ा	मुखड़ा, दुखड़ा
25.	रंग, संग, पंग	त	रंगत, संगत, पंगत
26.	पशु, मातृ	त्व	पशुत्व, मातृत्व
27.	मूर्ख, लघु, प्रभु	ता	मूर्खता, लघुता, प्रभुता
28.	उच्च, श्रेष्ठ, निम्न	तम	उच्चतम, श्रेष्ठतम, निम्नतम
29.	उच्च, श्रेष्ठ, निम्न	तर	उच्चतर, श्रेष्ठतर, निम्नतर
30.	समझ, गोटा, घेर	दार	समझदार, गोटेदार, घेरदार
31.	गति, श्री,	मान	गतिमान, श्रीमान
32.	बच्चा, अपना, सयाना	पन	बचपन, अपनापन, सयानापन
33.	दिति,	य	दैत्य
34.	सज्जा,	वट	सजावट
35.	बेटा, मन, तिल	वा	बेटवा, मनवा, तिलवा
36.	गुण, धन, दया	वान	गुणवान, धनवान, दयावान
37.	दूध, सब्जी	वाला	दूधवाला, सब्जीवाला
38.	माया,	वी	मायावी
39.	मधु,	र	मधुर
40.	छाता, कोठा	री	छतरी, कोठरी
41.	वत्स,	ल	वत्सल
42.	सोना, एक	हरा	सुनहरा, इकहरा
43.	पालन, सृजन	हार	पालनहार, सृजनहार
44.	चिकना,	हट	चिकनाहट

45.	नाना,	हाल	ननिहाल
46.	रूप, गुण, धन	हीन	रूपहीन, गुणहीन, धनहीन
47.	एक, सर्व	त्र	एकत्र, सर्वत्र

(2) कृत प्रत्यय- क्रिया शब्दों के मूल में लगने वाले प्रत्यय को कृत प्रत्यय कहते हैं। इस प्रत्यय के संयोग से बने शब्दों को कृदंत शब्द कहते हैं।
जैसे: पढ़ना (पढ़) + आकू = पढ़ाकू, तैरना (तैर) + आक = तैराक, मिलना (मिल) + आन = मिलान।

क्र.सं.	मूल शब्द	प्रत्यय	निर्मित शब्द
1.	दौड़ना, लिखना	अ	दौड़, लेख,
2.	भूलना, बूझना	अक्कड़	भुलक्कड़, बुझक्कड़
3.	ढकना,	अन	ढक्कन
4.	रटना, गढ़ना	अंत	रटंत, गढंत
5.	झूलना, मटकना	आ	झूला, मटका
6.	लड़ना, कूटना	आई	लड़ाई, कुटाई
7.	बिकना, टिकना	आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ
8.	पटकना,	आका	पटाका,
9.	पढ़ना, लड़ना	आकू	पढ़ाकू, लड़ाकू
10.	खेलना,	आड़ी	खिलाड़ी,
11.	मिलना,	आप	मिलाप
12.	अपनाना	आपा	अपनापा
13.	उठना, चलना	आन	उठान, चालान
14.	मथना,	आनी	मथानी,
15.	झगड़ना,	आलू	झगड़ालू,
16.	खींचना, बचना	आव	खिंचाव, बचाव
17.	देखना, मिलना	आवा	दिखावा, मिलावा
18.	लिखना, मिलाना	आवट	लिखावट, मिलावट
19.	डरना, लुभाना	आवना	डरावना, लुभावना
20.	डरना, लुभाना	आवनी	डरावनी, लुभावनी
21.	सोना, लोटना,	आस	सोआस, लोटास
22.	घबराना, टकराना	आहट	घबराहट, टकराहट
23.	बढ़ना,	इया	बढ़िया,
24.	मरना, सड़ना	इयल	मरियल, सड़ियल
25.	रेतना, हँसना	ई	रेती, हँसी
26.	लूटना, बसना	एरा	लुटेरा, बसेरा
27.	बहना	ऐत	बहेत
28.	रखना, गाना	ऐया	रखैया, गवैया
29.	भागना,	ओड़ा	भगोड़ा,
30.	फूँकना,	औटा	फूँकौटा
31.	कूटना	औटी	कुटौती

32.	समझना	औता	समझौता,
33.	मनाना	औती	मनौती,
34.	बिछाना, खिलना	औना	बिछौना, खिलौना
35.	बिछाना, पठना	औनी	बिछौनी, पठौनी

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

i- 'समझौता' शब्द में प्रत्यय बताइए।

(क) सम

(ख) समझ

(ग) औता

(घ) ता

ii- 'आवट' प्रत्यय से कौन-सा शब्द नहीं बना है?

(क) मिलावट

(ख) लिखावट

(ग) सजावट

(घ) पंचावट

iii- 'मरियल' शब्द में मूल शब्द बताइए।

(क) मर

(ख) मरा

(ग) मार

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- 'रंगत' शब्द में प्रत्यय बताइए।

(क) रंग

(ख) त

(ग) गत

(घ) ग

v- 'पन' प्रत्यय से बना शब्द कौन-सा है?

(क) लड़कपन

(ख) पचपन

(ग) छप्पन

(घ) ढक्कन

उत्तर- i. (ग) औता ii. (घ) पंचावट iii. (क) मर iv. (ख) त v. (क) लड़कपन

व्याकरण : समास

समास- समास का शाब्दिक अर्थ है संक्षेप या छोटा रूप। दो या दो अधिक शब्दों को मिलाकर लिखने से जो छोटा रूप बनता है, वह समास कहलाता है।

परिभाषा- दो या दो से अधिक पदों को संक्षेप में लिखने के ढंग को समास कहते हैं। जैसे- रात और दिन = रात-दिन, आनंद में मग्न = आनंदमग्न, कमल रूपी नयन = कमलनयन, रात ही रात में = रातोंरात।

समास के लिए निम्नलिखित बातों को समझना बहुत जरूरी होता है-

(1) सामासिक पद- जिन पदों को मिलाकर लिखा जाता है- देश के लिए भक्ति

(2) समस्त पद- वह जो एक पद बनता है- देशभक्ति
(3) पूर्व पद- सामासिक पद का पहला पद - देश
(4) उत्तर पद- सामासिक पद का अंतिम पद - भक्ति
(5) समास विग्रह- समस्त पद को विस्तार पूर्वक लिखना ही समास विग्रह कहलाता है।
जैसे- देशभक्ति = देश के लिए भक्ति

समास के भेद: समास के छह भेद हैं- (1) अव्ययीभाव समास (2) द्विगु समास (3) द्वंद्व समास (4) बहुब्रीहि समास (5) कर्मधारय समास (6) तत्पुरुष समास।

(1) अव्ययी भाव समास- जिस समास में पहला पद अव्यय और प्रधान होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे-
i- यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
ii- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
iii- आजीवन = जीवन तक
iv- हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ में

(2) द्विगु समास- जिस समास में पहला पद संख्यावाची और प्रधान होता है तथा जिससे किसी समूह का बोध होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे-
i- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समूह
ii- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
iii- पंचवटी = पाँच वटों का समूह
iv- चौराहा = हाथ ही हाथ में

(3) द्वंद्व समास- जिस समास में पहला व दूसरा दोनों पद प्रधान होता है तथा ‘और’ शब्द का लोप होता है, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-
i- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
ii- माता-पिता = माता और पिता
iii- स्त्री-पुरुष = स्त्री और पुरुष
iv- गुण-दोष = गुण और दोष

(4) बहुब्रीहि समास- जिस समास में न ही पहला और न ही दूसरा बल्कि कोई तीसरा पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। जैसे-
i- गजानन = गज का आनन है जिसका अर्थात् गणेश जी
ii- चतुर्भुज = चार भुजाएँ हैं जिनकी अर्थात् श्रीविष्णु
iii- मुरलीधर = मुरली धारण करने वाला श्रीकृष्ण
iv- वीणापाणि = वीणा है हाथ में जिसके अर्थात् सरस्वती जी

(5) कर्मधारय समास- जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा उसमें विशेषण और विशेष्य का संबंध होता है, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-
i- महात्मा = महान है जो आत्मा
ii- नीलमणि = नीली है जो मणि
iii- कमलनयन = कमल के समान नयन
iv- स्वर्णलता = स्वर्ण रूपी लता है जो

(6) तत्पुरुष समास- जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा उसमें कारक चिह्नों का लोप होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे-
i- राजमहल = राजा का महल

ii- वनगमन = वन को गमन

iii- धनहीन = धन से हीन

iv- रोगमुक्त = रोग से मुक्त

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

i- 'लंबोदर' शब्द में कौन-सा समास है?

(क) द्विगु
(ख) तत्पुरुष
(ग) बहुब्रीहि
(घ) कर्मधारय

ii- 'द्विगु' समास वाला शब्द कौन-सा है?

(क) शताब्दी
(ख) गंगातट
(ग) देवात्मा
(घ) दसकंधर

iii- 'लालमणि' शब्द का समास-विग्रह बताइए।

(क) लाल और मणि
(ख) लाल मणि है जिसके पास
(ग) लाल मणियों वाला
(घ) लाल है जो मणि

iv- 'आनंदमग्न' शब्द में समास बताइए।

(क) द्वंद्व
(ख) तत्पुरुष
(ग) बहुब्रीहि
(घ) कर्मधारय

v- किस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं?

(क) द्वंद्व
(ख) तत्पुरुष
(ग) बहुब्रीहि
(घ) कर्मधारय

उत्तर- i. (ग) बहुब्रीहि ii. (क) शताब्दी iii. (घ) लाल है जो मणि iv. (ख) तत्पुरुष v. (क) द्वंद्व

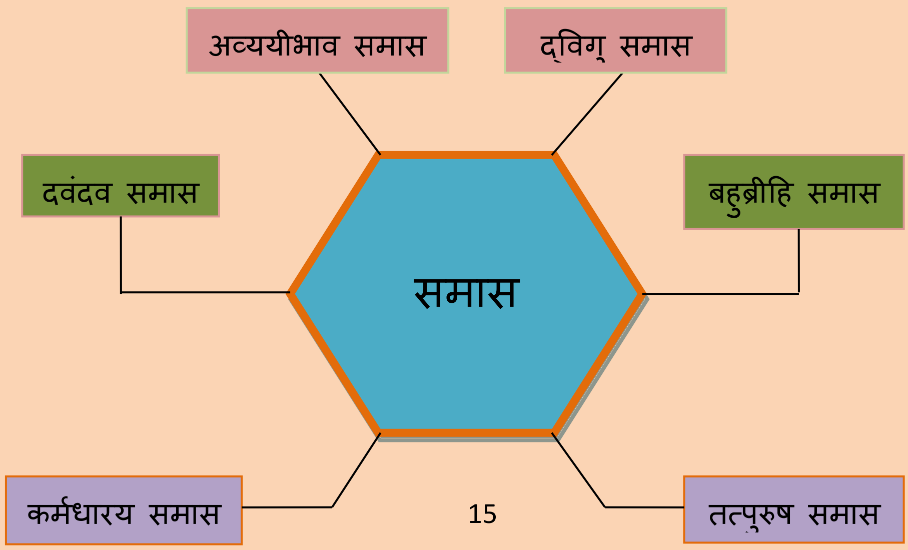

व्याकरण : अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद

<u>वाक्य</u>- शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता हो, उसे वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) शेर जंगल का राजा है। (2) वहाँ एक घना जंगल था। (3) विद्यालय में खेल दिवस मनाया जाएगा।

<u>वाक्य के भेद-</u> वाक्य-भेद के दो आधार हैं - (1) अर्थ का आधार (2) रचना का आधार

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं।

(2) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं - सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र या मिश्रित वाक्य। इनके विषय में आप कक्षा दसवीं में पढ़ेंगे ।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हैं-

विधानवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी विषय, वस्तु या कार्य के होने का बोध हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- हमारे देश का नाम भारत है।

ii- अशोक चक्रवर्ती सम्राट थे।

iii- कल से तापमान में गिरावट होगी।

iv- बच्चों को अच्छी शिक्षा की जरुरत है।

निषेधवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी विषय, वस्तु या कार्य के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- मछलियाँ जमीन पर नहीं रहती हैं।

ii- मध्यकाल में कुछ लोग नियम नहीं मानते थे।

iii- कुछ दिन तक बारिश नहीं होगी।

iv- किसान उन्नत खेती की तकनीकी नहीं अपनाते हैं।

प्रश्नवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी विषय, वस्तु या कार्य के विषय में प्रश्न पूछने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- क्या बिना आक्सीजन के रह सकते हैं?

ii- यह खबर किस अख़बार में छपी थी?

iii- दिन में तारे कौन देख सकेगा?

iv- सभी बच्चे कहाँ पढ़ने जाते हैं?

आज्ञावाचक वाक्य- जिस वाक्य से आज्ञा अथवा निवेदन का बोध हो, उसे आज्ञा या विधिवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- दरवाजा तुरंत बंद करो।

ii- यहाँ कुछ मत बोलो।

iii- कृपया लेखनी उठा दीजिए।

iv- आप अपने स्थान पर बैठ जाइए।

इच्छावाचक वाक्य- जिस वाक्य से इच्छा, शुभकामना या आशीर्वाद के भाव का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- नववर्ष मंगलमय हो।

ii- आपको जन्मदिन की हार्दिक बधाई।

iii- ईश्वर करे, आप स्वस्थ हो जाएँ।

iv- प्रसन्न रहो और दीर्घायु बनो।

संकेतवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी विषय, वस्तु या कार्य के होने का संकेत हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- यदि बादल आये तो बारिश होगी।

ii- अगर मैं गाँव जाऊँगा तो अवश्य मिलूँगा।

iii- यदि वह मिला होता तो मैं पहचान जाता।

iv- अगर तुम बल्लेबाजी करते तो हम जीट जाते।

संदेहवाचक वाक्य- जिस वाक्य से किसी विषय, वस्तु या कार्य के होने में संदेह का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- शायद आज शाम को बारिश हो।

ii- संभवत: मैं न मिल सकूँ।

iii- हो सकता है फ़रवरी में परीक्षा शुरू होगी।

iv- शायद भारत विश्वकप जीट जाए।

विस्मयसूचक वाक्य- जिस वाक्य से प्रसन्नता, दुःख, आश्चर्य एवं उत्साह जैसे भाव प्रकट होते हैं, विस्मयसूचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

i- ओह, ऐसा कैसे हो गया।

ii- वाह! आप बाजी जीत गए।

iii- शाबाश! आगे बढ़ो।

iv- छिः! छिः! यह नाली बहुत गंदी है।

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

i- इच्छावाचक वाक्य बताइए।

(क) दरवाजा मत खोलो।
(ख) हो सकता है कि आज पानी बरसे।
(ग) आपके घर मेहमान आये हैं।
(घ) आपकी आयु लंबी हो।

ii- 'मैंने प्रयोगशाला में कोई प्रयोग नहीं किया है'- वाक्य का प्रकार बताइए।

(क) विधानवाचक वाक्य
(ख) प्रश्नवाचक वाक्य
(ग) निषेधवाचक वाक्य
(घ) संकेतवाचक वाक्य

iii- किसी विषय, वस्तु या कार्य के होने का बोध करने वाला वाक्य क्या कहलाता है?

(क) विधानवाचक वाक्य
(ख) प्रश्नवाचक वाक्य
(ग) संकेतवाचक वाक्य
(घ) संदेहवाचक वाक्य

iv- 'कृपया यहाँ बैठ जाइए' - यह वाक्य का कौन-सा प्रकार है?

(क) इच्छावाचक वाक्य
(ख) विधिवाचक वाक्य
(ग) निषेधवाचक वाक्य

(घ) संकेतवाचक वाक्य

v- निम्नलिखित में संदेहवाचक वाक्य बताइए?

(क) वहाँ कौन रहता है?

(ख) सभी लोग बाजार गए हैं।

(ग) संभवत: वे लोग न आये हों।

(घ) आइए, आपका स्वागत है।

उत्तर- i. (घ) आपकी आयु लंबी हो। ii. (ग) निषेधवाचक वाक्य iii. (क) विधानवाचक वाक्य iv. (ख) विधिवाचक वाक्य v. (ग) संभवत: वे लोग न आये हों।

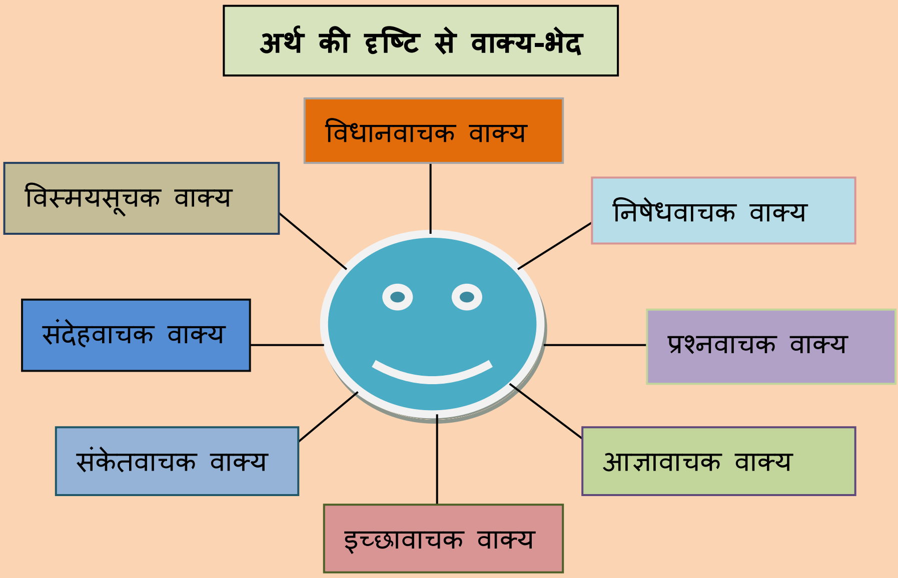

व्याकरण : अलंकार

अलंकार- 'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'आभूषण' यानी गहना। अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम्' का अर्थ है 'शोभा' तथा 'कार' का अर्थ हैं 'करने वाला'। अर्थात् काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभाकारक तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे- (1) बालकु बोलि बधौ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

(2) प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी।

काव्य का सौन्दर्य दो रूपों अर्थात शब्द एवं अर्थ की सुन्दरता में वृद्धि अथवा चमत्कार उत्पन्न करने वाले कारकों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार का महत्त्व- अलंकारों के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है। भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है। अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है। जिस तरह से आभूषण नारियों का श्रृंगार है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में 'अलंकार' काव्य का श्रृंगार है।

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यत: दो भेद हैं- (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

जैसे- (1) अवधि अधार आस आवन की, तन मन विथा सही।

(2) चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

शब्दालंकार के प्रकार- शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं-

(1) अनुप्रास अलंकार

(2) यमक अलंकार

(3) श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार- काव्य में जहाँ एक ही वर्ण बार-बार दोहराया जाए अर्थात् वर्णों की आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे- (1) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

(2) भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्हीं।।

यमक अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) काली घटा का घमंड घटा, नभ मंडल तारक वृंद खिले।

(2) तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

श्लेष अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) नर की अरु नलनीर की **गति** एकै करि जोए। जेतो नीचे ह्वै चलै तेतो ऊँचो होए।।

(2) रावन सिर सरोज बनचारी। चल रघुवीर **शिलीमुख** धारी।।

अर्थालंकार- जहाँ काव्य में अर्थ के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

जैसे- (1) चरण कमल बन्दौ हरि राई।

(2) कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

अर्थालंकार के प्रकार- अर्थालंकार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

(1) उपमा अलंकार (2) रूपक अलंकार (3) मानवीकरण अलंकार

उपमा अलंकार- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इस अलंकार में सा, सी, से, सम, समान, इव, सदृश, सरिस इत्यादि शब्दों का प्राय: प्रयोग हुआ रहता है।

जैसे- (1) पीपर पात सरिस मन डोला।

(2) हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।

रूपक अलंकार- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का आरोप किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु में की जाए कि उनमें कोई भेद न रहे, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इस अलंकार में प्राय: का, की, के, रूपी, अथवा योजक चिहन का प्रयोग हुआ रहता है।

जैसे- (1) मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।

(2) पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

मानवीकरण अलंकार- जहाँ काव्य में प्रकृति की वस्तुओं में मानवीय कार्य-व्यवहार दिखाया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- (1) मेघ आए बड़े बन-ढन के सँवर के।

(2) दिवसावसान का समय
मेघ आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-

i- मोहनि मूरति सांवली सूरति, नैना बने बिसाल। इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) रूपक अलंकार

(ख) अनुप्रास अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) यमक अलंकार

ii- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन अर्थ भिन्न-भिन्न हो, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(क) रूपक अलंकार

(ख) अनुप्रास अलंकार

(ग) यमक अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

iii- कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) यमक अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

iv- निम्नलिखित में रूपक अलंकार का उदाहरण बताइए।

(क) चरण कमल बंदौ हरि राई

(ख) काली घटा का घमंड घटा

(ग) हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।

(घ) चारू चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में

v- जहाँ किसी उपमेय की तुलना किसी उपमान से की जाती है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) यमक अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

vi- 'जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन'- **इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**

(क) यमक अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) अनुप्रास अलंकार

(घ) उपमा अलंकार

उत्तर- i. (ख) अनुप्रास अलंकार ii. (ग) यमक अलंकार iii. (घ) उपमा अलंकार iv. (क) चरण कमल बंदौ हरि राई v. (घ) उपमा अलंकार vi. (ग) अनुप्रास अलंकार

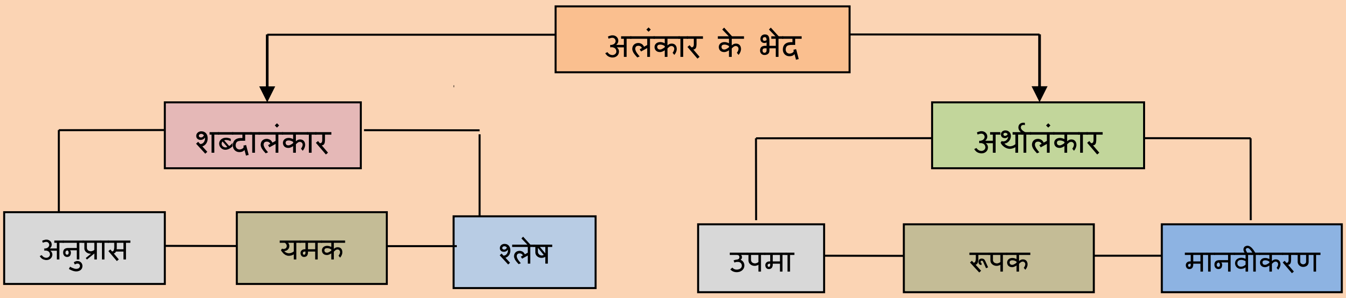

गद्य खंड

दो बैलों की कथा

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्यों दुर्दशा हो रही है? क्यों अमेरिका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर ग़म खा जाते हैं, फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल समाने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया। लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अडियल बैल भी देखने में आता है और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है, अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

i- लेखक के अनुसार किस देश के निवासियों को अमेरिका में घुसने नहीं दिया जाता था?

(क) अविकसित देशों के लोगों को
(ख) विकसित देशों के लोगों को
(ग) भारतवासियों को
(घ) अफ्रीकी लोगों को

ii- भारतवासियों के विषय में लेखक की क्या धारणा है?

(क) चार बातें सुनकर ग़म खा जाते हैं
(ख) किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते हैं
(ग) जी तोड़कर काम करते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी

iii- लेखक ने जापान का नाम क्यों लिया है?

(क) पिछड़ा देश होने के कारण
(ख) शत्रु देश पर विजय पाने के लिए
(ग) भारत का मित्र होने के कारण
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- गधे का छोटा भाई किसे माना गया है?

(क) गधे को
(ख) बैल को
(ग) गाय को
(घ) कुत्ते को

v- लेखक ने बैल का स्थान गधे से नीचे क्यों रखा?

(क) बैल कभी-कभी मारता भी है
(ख) कभी-कभी वह अड़ियल भी होता है

(ग) वह अपना असंतोष भी प्रकट करता है

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर- i. (ग) भारतवासियों को ii. (घ) उपर्युक्त सभी iii. (ख) शत्रु देश पर विजय पाने के लिए iv. (ख) बैल को v. (घ) उपर्युक्त सभी

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

एक दिन मोती ने मूक भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता हीरा! "क्या करना चाहते हो?" "एकाध को सीगों पर उठाकर फेंक दूँगा।" "लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?" "तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।" "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।" "तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।" "हाँ, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?" "इसका उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।" रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे। सहसा घर का द्वार खुला और वही बालिका निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली- "खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाएँ।"

i- "एकाध को सीगों पर उठाकर फेंक दूँगा।"- यह कथन किसका है?

(क) हीरा का

(ख) मोती का

(ग) झूरी का

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii- "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।" यह किसने कहा?

(क) मोती ने

(ख) गया ने

(ग) हीरा ने

(घ) झूरी ने

iii- हीरा और मोती ने रस्सी तोड़ने का क्या उपाय निकाला?

(क) रस्सी चबाकर झटके देना

(ख) ताकत लगाकर रस्सी खींचना

(ग) लड़की से रस्सी तोड़ने के लिए कहना

(घ) गले से रस्सी निकालकर तोड़ना

iv- सहसा घर का द्वार खुलने पर कौन बाहर निकला?

(क) हीरा

(ख) मोती

(ग) गया

(घ) बालिका

v- बैलों के माथे सहलाकर बालिका ने उनसे क्या कहा?

(क) चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे

(ख) यहाँ कभी भागने की कोशिश मत करना

(ग) जो मिले चुपचाप खाकर यहीं पड़े रहो

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर- i. (ख) मोती का ii. (ग) हीरा ने iii. (क) रस्सी चबाकर झटके देना iv. (घ) बालिका v. (क) चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे

ल्हासा की ओर

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी-कलिंङपोंङ का रास्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीजें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी। यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फौजी चौकियां और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत से तकलीफें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति छुआछूत, का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते; नहीं तो आप बिल्कुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिल्कुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोङगी में कूटकर उसे दूध वाली चाय के रंग की बनाके मिट्टी के टोटीदार बर्तन (खोटी) में रखकर आपको दे देगी।

i- नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता कौन-सा है?

(क) फरी-कलिंङपोंङ

(ख) ल्हासा

(ग) भारत

(घ) बस्तियाँ

ii- जगह-जगह बनी फौजी चौकियों और किलों में कहाँ की पलटन रहा करती थी?

(क) चीन की

(ख) नेपाल की

(ग) भारत की

(घ) तिब्बत की

iii- लेखक अपने साथियों के साथ कहाँ चाय पीने के लिए ठहरा?

(क) व्यापारिक बस्तियों में

(ख) फरी-कलिंङपोंङ में

(ग) परित्यक्त चीनी किले में

(घ) मित्र के घर में

iv- तिब्बत के लोग बहुत निम्नश्रेणी के भिखमंगों को अपने घर के भीतर क्यों नहीं आने देते?

(क) ठहरने के भय से

(ख) सत्कार के इरादे से

(ग) चोरी के डर से

(घ) झगड़े के डर से

v- तिब्बत में बिल्कुल अपरिचित होने पर भी किसी घर की बहू या सासु आपके लिए क्या कर देगी?

(क) लजाकर भाग जाएगी

(ख) कठोर बात कह देगी

(ग) चुपचाप खड़ी रहेगी

(घ) आपके लिए चाय पका देगी

उत्तर- i. (ख) ल्हासा ii. (क) चीन की iii. (ग) परित्यक्त चीनी किले में iv. (ग) चोरी के डर से v. (घ) आपके लिए चाय पका देगी

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

अब हम तिङरी के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिङरी-समाधि-गिरि। आसपास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बत्तियों के गंडे खत्म नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खत्म हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा, यह तो हफ्ता-भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो, मगर आसपास के गाँव में मत जाओ; इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुंचकर रुपए दे दूंगा। सुमति ने स्वीकार किया। दूसरे दिन हमने भरिया ढूंढने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था, लेकिन अब 10-11 बजे की तेज धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप भी बहुत कड़ी मालूम होती है, यद्यपि थोड़े से भी मोटे कपड़े से सिर को ढांक लें, तो गर्मी खत्म हो जाती है। आप 2:00 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बर्फ हो रहा है। फिर हमने पीठ पर अपनी-अपनी चीजें लादी, डंडा हाथ में लिया और चल पड़े।

i- लेखक को तिङरी का विशाल मैदान कैसा मालूम होता था?

(क) बर्फीली चोटियों-सा

(ख) ल्हासा के पठार-सा

(ग) परित्यक्त चीनी किले-सा

(घ) पहाड़ों से घिरा टापू-सा

ii- इस अनुच्छेद में उल्लिखित तिङरी-समाधि-गिरि क्या है?

(क) लेखक के ठहरने की जगह

(ख) ल्हासा एक छोटा गाँव

(ग) एक छोटी पहाड़ी

(घ) एक छोटी पहाड़ी नदी

iii- बोधगया से लाए कपड़े के गंडे खत्म हो जाने पर गाँव के लोग क्या करते थे?

(क) उसे वहीं तक रहने देते थे

(ख) किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे

(ग) बोधगया जाकर गंडा लाते थे

(घ) बिलकुल शांत हो जाते थे

iv- ल्हासा के लिए सुबह ही न चलने से लेखक को क्या कठिनाई हो रही थी?

(क) तेज धूप में चलना पड़ रहा था

(ख) सिर चकरा रहा था

(ग) सुमति चलने के लिए तैयार नहीं था

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बर्फ हो रहा है- ऐसा क्यों?

(क) सुमति अपने यजमानों के यहाँ चला गया था

(ख) लेखक को गंतव्य स्थान दिखाई दे रहा था

(ग) सभी दोपहर 2:00 बजे सूरज की ओर मुँह किए चल रहे हैं

(घ) सभी लोग थक गए हैं और आगे नहीं जाना चाहते हैं

उत्तर- i. (घ) पहाड़ों से घिरा टापू-सा ii. (ग) एक छोटी पहाड़ी iii. (ख) किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे iv. (क) तेज धूप में चलना पड़ रहा था v. (ग) सभी दोपहर 2:00 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं

उपभोक्ता वाद की संस्कृति

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

टूथ-पेस्ट चाहिए? यह दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, यह मुँह की दुर्गंध हटाता है। यह मसूड़ों को मजबूत करता है और यह 'पूर्ण सुरक्षा' देता है। वह सब करके जो तीन-चार पेस्ट अलग-अलग करते हैं, किसी पेस्ट का 'मैजिक' फार्मूला है। कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है, कोई ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत तथा मान्य वनस्पति और खनिज तत्वों के मिश्रण से बना है। जो चाहे चुन लीजिए। यदि पेस्ट अच्छा है तो ब्रुश भी अच्छा होना चाहिए। आकार, रंग, बनावट, पहुंच और सफाई की क्षमता में अलग-अलग, एक से बढ़कर एक। मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए माउथवॉश भी चाहिए। सूची और भी लंबी हो सकती है पर इतनी चीजों का ही बिल काफी बड़ा हो जाएगा, क्योंकि आप शायद बहु विज्ञापित और कीमती ब्रांड खरीदना ही पसंद करें। सौंदर्य प्रसाधनों की भीड़ तो चमत्कृत कर देने वाली है- हर माह उसमें नए-नए उत्पाद जुड़ते जाते हैं। साबुन ही देखिए। एक में हल्की खुशबू है, दूसरे में तेज। एक दिन भर आपके शरीर को तरोताजा रखता है, दूसरा पसीना रोकता है, तीसरा जर्म्स से आपकी रक्षा करता है। यह लीजिए सिनेस्टार्स के सौंदर्य का रहस्य, उनका मनपसंद साबुन।

i- टूथ-पेस्ट की क्या उपयोगिता होती है?

(क) दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है

(ख) मुँह की दुर्गंध हटाता है

(ग) मसूड़ों को मजबूत करता है

(घ) उपर्युक्त सभी

ii- कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है- यह बात किसके लिए कही गयी है?

(क) टूथ-पेस्ट के लिए

(ख) मसूड़ों के लिए

(ग) पूर्ण सुरक्षा के लिए

(घ) इनमें से कोई नहीं

iii- मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए क्या चाहिए?

(क) बबूल

(ख) साबुन

(ग) माउथवॉश

(घ) नीम

iv- सौंदर्य प्रसाधनों की भीड़ क्यों चमत्कृत कर देने वाली है?

(क) सौंदर्य प्रसाधनों का बिल काफी बड़ा हो जाता है

(ख) हर माह नए-नए उत्पाद जुड़ते जाते हैं

(ग) ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत होता है

(घ) खनिज तत्वों के मिश्रण से बना होता है

v- नहाने के साबुन का विज्ञापन किस तरह होता है?

(क) यह हल्की खुशबू वाला है

(ख) यह आपके शरीर को तरोताजा रखता है,

(ग) यह जर्म्स से आपकी रक्षा करता है।

(घ) उपर्युक्त सभी तरह से

उत्तर- i. (घ) उपर्युक्त सभी ii. (क) टूथ-पेस्ट के लिए iii. (ग) माउथवॉश iv. (ख) हर माह नए-नए उत्पाद जुड़ते जाते हैं v. (घ) उपर्युक्त सभी तरह से

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

हैसियत जताने के लिए आप 50-60 हजार से लाख डेढ़ लाख की घड़ी भी ले सकते हैं। संगीत की समझ हो या नहीं कीमती म्यूजिक सिस्टम जरूरी है। कोई बात नहीं यदि आप उसे ठीक तरह चला भी ना सके, कंप्यूटर काम के लिए तो खरीदे ही जाते हैं। महज़ दिखावे के लिए उन्हें खरीदने वालों की संख्या भी कम नहीं है। खाने के लिए पाँच सितारा होटल हैं, वहाँ तो अब विवाह भी होने लगे हैं। बीमार पड़ने पर पाँच सितारा अस्पतालों में आइए, सुख सुविधाओं और अच्छे इलाज के स्तरीय अनुभव काफी समय तक चर्चा का विषय भी रहेगा। पढ़ाई के लिए पाँच सितारा पब्लिक स्कूल हैं। शीघ्र ही शायद कॉलेज और यूनिवर्सिटी भी बन जाए। भारत में तो यह स्थिति अभी नहीं आई, पर अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध भी कर सकते हैं। एक कीमत पर आप की कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे, चाहे तो वहां फव्वारे होंगे, और मंद ध्वनि में निरंतर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमेरिका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है। प्रतिष्ठा के अनेक रुप होते हैं चाहे वह हास्यास्पद ही क्यों ना हो।

i- लोग पचास-साठ हजार से लाख-डेढ़ लाख की घड़ी क्यों लेते हैं?

(क) फ़िज़ूलखर्ची के लिए

(ख) हैसियत जताने के लिए

(ग) ज़रूरत पूरी करने के लिए

(घ) उपहार देने के लिए

ii- संगीत की समझ न होने पर भी लोग कीमती म्यूजिक सिस्टम क्यों खरीदते हैं?

(क) मस्ती करने के लिए

(ख) गाना सुनने के लिए

(ग) महज़ दिखावे के लिए

(घ) कंप्यूटर चलाने के लिए

iii- लेखक के अनुसार बीमार पड़ने पर लोग पाँच सितारा अस्पतालों में इलाज़ क्यों करवाते हैं?

(क) वहाँ बिलकुल शांत माहौल मिल जाता है

(ख) वहाँ लोग जल्दी से ठीक हो जाते हैं

(ग) रोगियों की सुख-सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा जाता है

(घ) अच्छे इलाज का स्तरीय अनुभव काफी समय तक चर्चा में होता है

iv- किन देशों में मरने के पहले ही लोग अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध कर लेते हैं?

(क) अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में

(ख) एशिया और यूरोप के कुछ देशों में

(ग) अफ्रीका और एशिया के गरीब देशों में

(घ) दुनिया के अविकसित देशों में

v- प्रतिष्ठा के कितने रुप होते हैं चाहे वह हास्यास्पद ही क्यों न हो?

(क) सीमित रूप

(ख) अनेकानेक रूप

(ग) कुछ गिने-चुने रूप

(घ) बहुत थोड़े से रूप

उत्तर- i. (ख) हैसियत जताने के लिए ii. (ग) महज़ दिखावे के लिए iii. (घ) अच्छे इलाज का स्तरीय अनुभव काफी समय तक चर्चा में होता है iv. (क) अमेरिका और यूरोप के कुछ देशों में v. (ख) अनेकानेक रूप

साँवले सपनों की याद

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली जमीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नजरों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बांध लेता है। सालिम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने की बजाय प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफी हद तक मदद पहुंचाई थी। तहमीना स्कूल के दिनों में उनकी सहपाठी रही थीं।

अपने लंबे रोमांचकारी जीवन में ढेर सारे अनुभवों के मालिक सालिम अली एक दिन केरल की 'साइलेंट वैली' को रेगिस्तानी हवा के झोंकों से बचाने का अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले थे। वे प्रधानमंत्री थे। चौधरी साहब गांव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का असर जानने वाले नेता थे। पर्यावरण के संभावित खतरों का जो चित्र सालिम अली ने उनके सामने रखा, उसने उनकी आँखें नम कर दी थीं।

i- उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो- यह कथन किनसे संबंधित है?

(क) लेखक से

(ख) सालिम अली से

(ग) पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से

(घ) वर्तमान प्रधानमंत्री से

ii- सालिम अली के लिए प्रकृति में हर तरफ किस तरह की दुनिया पसरी थी?

(क) एकांत क्षणों से परिपूर्ण

(ख) कलरव करते पक्षियों से भरी हुई

(ग) एक हँसती-खेलती रहस्य भरी

(घ) खुले आसमान के नीचे फैली हुई

iii- स्कूल के दिनों में तहमीना सलीम अली की क्या थीं?

(क) शिक्षिका

(ख) प्रकृति-प्रेमी

(ग) जीवन-साथी

(घ) सहपाठी

iv- सलीम अली केरल की 'साइलेंट वैली' को किससे बचाना चाहते थे?

(क) चिलचिलाती धूप से

(ख) रेगिस्तानी हवा के झोंकों से

(ग) वर्षा की फुहारों से

(घ) बर्फीली हवाओं से

v- पर्यावरण के संभावित खतरों को सुनकर किनकी आँखें नम हो गई थीं?

(क) प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की

(ख) सलीम अली की

(ग) तहमीना की

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i. (ख) सालिम अली से ii. (ग) एक हँसती-खेलती रहस्य भरी iii. (घ) सहपाठी iv. (ख) रेगिस्तानी हवा के झोंकों से v. (क) प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे। बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गौरैया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही। जिंदगी की ऊंचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह, नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वह आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएंगे। जब तक वो नहीं लौटते, क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए! मेरी आंखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

i- सालिम अली किसके लिए हमेशा एक पहेली बने रहेंगे?

(क) प्रकृति के लिए

(ख) जिंदगी के लिए

(ग) गौरैया के लिए

(घ) जटिल प्राणियों के लिए

ii- बचपन के दिनों में उनकी एयरगन से कौन-सी पक्षी घायल हो गयी थी?

(क) एकांत में रहने वाली गौरैया

(ख) नीले कंठ वाली गौरैया

(ग) रहस्यमयी चिड़िया

(घ) जंगल में विचरण करने वाली चिड़िया

iii- सालिम अली प्रकृति की दुनिया में किस तरह उभरे थे?

(क) चंचल पक्षी बनकर

(ख) एक टापू की तरह

(ग) अथाह सागर बनकर

(घ) सहपाठी की तरह

iv- सालिम अली केरल की 'साइलेंट वैली' को किससे बचाना चाहते थे?

(क) चिलचिलाती धूप से

(ख) रेगिस्तानी हवा के झोंकों से

(ग) वर्षा की फुहारों से

(घ) बर्फीली हवाओं से

v- जब तक वो नहीं लौटते, क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए!- इस कथन का क्या आशय है?

(क) सालिम अली अब जीवित नहीं हैं

(ख) सालिम अली अभी जीवित हैं

(ग) सालिम अली का कोई अस्तित्व नहीं है

(घ) सालिम अली बहुत अच्छे थे

उत्तर- i. (घ) जटिल प्राणियों के लिए ii. (ख) नीले कंठ वाली गौरैया iii. (ग) अथाह सागर बनकर iv. (ख) रेगिस्तानी हवा के झोंकों से v. (क) सालिम अली अब जीवित नहीं हैं

प्रेमचंद के फटे जूते

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूँ-फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाके नहीं होंगी-इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।

मैं चेहरे की तरफ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका जरा भी एहसास नहीं है? जरा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी प्लीज' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुस्कान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुएं के तल में कहीं बड़ी मुस्कान को धीरे-धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुस्कान। यह मुस्कान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

i- लेखक की दृष्टि किस पर अटक गई?

(क) प्रेमचंद की पोशाक पर

(ख) प्रेमचंद के जूते पर

(ग) प्रेमचंद की मुस्कान पर

(घ) प्रेमचंद की कमीज पर

ii- लेखक ने प्रेमचंद को क्या संबोधित करके उलहने दिया है?

(क) साहित्यिक पुरखे

(ख) बेपरवाह आदमी

(ग) साहित्य के सेवक

(घ) समाज के चिंतक

iii- लेखक के अनुसार फोटोग्राफर के 'रेडी प्लीज' कहने पर प्रेमचंद ने क्या किया होगा?

(क) जूते को छिपा लिया होगा

(ख) हाव-भाव बनाने की कोशिश की होगी

(ग) चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश की होगी

(घ) चुपचाप बैठ गए होंगे

iv- यह मुस्कान नहीं,_____________________________**? रिक्त स्थान की पूर्ति करो।**

(क) इसमें लज्जा है, संकोच है!

(ख) इसमें चिंतन है, मनन है!

(ग) इसमें बेपरवाही है, मस्ती है!

(घ) इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

v- 'उपहास' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

(क) अप

(ख) उप

(ग) परि

(घ) परा

उत्तर- i. (ख) प्रेमचंद के जूते पर ii. (क) साहित्यिक पुरखे iii. (ग) चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश की होगी iv. (घ) इसमें उपहास है, व्यंग्य है! v. (ख) उप

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

फोटो ही खिंचाना था, तो ठीक जूते पहन लेते, या न खिंचाते। फोटो न खिंचाने से क्या बिगड़ता था। शायद पत्नी का आग्रह रहा हो और तुम 'अच्छा, चल भई' कहकर बैठ गए होंगे। मगर यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी' है कि आदमी के पास फोटो खिंचाने को भी जूता न हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते-देखते तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पड़ना चाहता हूँ। मगर तुम्हारी आँखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है।

तुम फोटो का महत्व नहीं समझते। समझते होते, तो किसी से फोटो खिंचाने के लिए जूते माँग लेते। लोग तो माँगे के कोट से वर-दिखाई करते हैं। और माँगे की मोटर से बारात निकालते हैं। फोटो खिंचाने के लिए तो बीवी तक माँग ली जाती है, तुमसे जूते ही माँगते नहीं बने! तुम फोटो का महत्व नहीं जानते। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो **खिंचाते** हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए! गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है!

i- लेखक ने प्रेमचंद के फोटो खिंचाने का क्या अनुमान लगाया?

(क) हो सकता है कोई ख्याल आया हो

(ख) शायद पत्नी का आग्रह रहा हो

(ग) पुस्तक पर तसवीर लगवानी रही हो

(घ) घर के बैठक में लगानी रही हो

ii- लेखक ने किस बात को 'ट्रेजडी' माना है?

(क) फोटो खिंचाने का महत्व न जानना

(ख) अनिच्छा से फोटो खिंचाना

(ग) फोटो खिंचाने के लिए जूता न हो

(घ) जैसा भी हो फोटो खिंचवा लेना

iii- फोटो खिंचाने के लिए लोग क्या लेते हैं?

(क) जूते माँग लेते हैं

(ख) बीवी माँग लेते हैं

(ग) केवल 'क'

(घ) 'क' और 'ख' दोनों

iv- व्यंग्य में कहा जाए तो लोग इत्र चुपड़कर फोटो क्यों खिंचाते हैं?

(क) जिससे फोटो में खुशबू आ जाए

(ख) जिससे फोटोग्राफर खुश हो जाए

(ग) जिससे फोटो बहुत अच्छी दिखे

(घ) जिससे फोटो देखने वाले को अच्छी लगे

v- 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के लेखक का क्या नाम है?

(क) सालिम अली

(ख) प्रेमचंद

(ग) हरिशंकर परसाई

(घ) राहुल सांकृत्यायन

उत्तर- i. (ख) शायद पत्नी का आग्रह रहा हो ii. (ग) फोटो खिंचाने के लिए जूता न हो iii. (घ) 'क' और 'ख' दोनों iv. (क) जिससे फोटो में खुशबू आ जाए v. (ग) हरिशंकर परसाई

मेरे बचपन के दिन

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएंगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊंचा रहा है। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फारसी सीख लूं, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रूचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवें दर्जे में भर्ती हुई। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था।

i- बाबा लेखिका को क्या बनाना चाहते थे?

(क) विदुषी

(ख) कवयित्री

(ग) समाज-सेविका

(घ) गायिका

ii- क्या सीखना लेखिका के वश की बात नहीं थी?

(क) संस्कृत

(ख) हिन्दी

(ग) बांग्ला

(घ) उर्दू-फारसी

iii- पूजा-पाठ के समय लेखिका बैठकर क्या सुनती थी?

(क) उर्दू-फारसी

(ख) हिन्दी

(ग) संस्कृत

(घ) बांग्ला

iv- मिशन स्कूल में लेखिका ने जाना क्यों बंद कर दिया?

(क) वहाँ का वातावरण दूसरा था

(ख) वहाँ की प्रार्थना दूसरी थी

(ग) वहाँ लेखिका का मन नहीं लगा

(घ) उपर्युक्त सभी

v- किस कॉलेज में हिंदू लड़कियाँ भी थीं और ईसाई लड़कियाँ भी थीं?

(क) मिशन स्कूल में

(ख) क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में

(ग) पुराने कॉलेज में

(घ) संस्कृत विद्यालय में

उत्तर- i. (क) विदुषी ii. (घ) उर्दू-फारसी iii. (ग) संस्कृत iv. (घ) उपर्युक्त सभी v. (ख) क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में

(2)

प्रश्न- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखाओ तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी और बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!' फिर बोलीं, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। जब तुम चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे-में। फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

i- आनंद भवन कहाँ स्थित है?

(क) वाराणसी में

(ख) लखनऊ में

(ग) प्रयागराज में

(घ) अयोध्या में

ii- लेखिका जब बापू से मिलने गई तो साथ में क्या लेकर गई?

(क) स्वरचित कविता

(ख) पुरस्कार में मिला कटोरा

(ग) दान में मिले हुए पैसे

(घ) घर में बना हुआ खाना

iii- बापू के कहने पर लेखिका ने कटोरे का क्या किया?

(क) बापू को दे दिया

(ख) मना कर दिया

(ग) सुभद्रा जी को दे दिया

(घ) अपने पास रख लिया

iv- सुभद्रा जी ने कहा, फिर बोलीं, '**।?**

(क) 'और जाओ दिखाने!'

(ख) देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी

(ग) चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे-में

(घ) उपर्युक्त सभी

v- लेखिका को मन ही मन प्रसन्नता क्यों हो रही थी?

(क) क्योंकि उसने पुरस्कार में मिला कटोरा बापू को दे दिया

(ख) क्योंकि उसने सुभद्रा जी को खीर खिलाई

(ग) क्योंकि बापू ने कटोरा ले लिया

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- i. (ग) प्रयागराज में ii. (ख) पुरस्कार में मिला कटोरा iii. (क) बापू को दे दिया iv. (घ) उपर्युक्त सभी v. (क) क्योंकि उसने पुरस्कार में मिला कटोरा बापू को दे दिया

काव्य-खंड

साखियाँ एवं सबद

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।।
पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।।
हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहूँ के निकटि न जाइ।।
काबा फिरि कासी भया, रामहि भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।
ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।।

i- कबीर ने स्वान (कुत्ते) के रूप में किसे चित्रित किया है?

(क) हाथी को

(ख) सांसारिक लोगों को

(ग) दुलीचा को

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii- कबीर ने सच्चे संत की क्या पहचान बताई है?

(क) जो अपने पक्ष का समर्थन करता है

(ख) जो विरोधी पक्ष की निंदा करता है

(ग) जो निष्पक्ष होकर कर ईश्वर का स्मरण करता है

(घ) जो दुनिया के चक्कर में भटकता रहता है

iii- संसार में किस तरह का व्यक्ति सदा जीवित रहता है?

(क) जो श्रीराम को दिन-रात याद करता है

(ख) जो अल्लाह को हमेशा पुकारता है

(ग) जो ईश्वर और अल्लाह में भेद करता है

(घ) जो ईश्वर और अल्लाह में बिना भेद किए उन्हें याद करता है

iv- किस स्थिति में काशी और काबा में कोई अंतर नहीं रह जाता है?

(क) ईश्वर के सच्चे रूप का दर्शन होने पर

(ख) काशी में ईश्वर की प्राप्ति होने पर

(ग) मक्का की यात्रा करने पर

(घ) उपर्युक्त सभी

v- किस कारण से ऊँचे खानदान में जन्म लेने पर भी जीवन व्यर्थ है?

(क) ईश्वर का ध्यान रखने पर

(ख) दिनचर्या ठीक नहीं होने पर

(ग) धर्म ऊँचा होने पर

(घ) कर्म अच्छा नहीं होने पर

उत्तर- i. (ख) सांसारिक लोगों को ii. (ग) जो निष्पक्ष होकर कर ईश्वर का स्मरण करता है iii. (घ) जो ईश्वर और अल्लाह में बिना भेद किए उन्हें याद करता है iv. (क) ईश्वर के सच्चे रूप का दर्शन होने पर v. (घ) कर्म अच्छा नहीं होने पर

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

मोकों कहाँ ढ़ूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने है क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तलास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वांसों की स्वांस में।।

i- मनुष्य को उसकी अंतरात्मा से क्या पुकार सुनाई देती है?

(क) मैं तीर्थों में निवास कर्ता हूँ

(ख) मुझे पाने के लिए मंदिर में आओ

(ग) मैं तुम्हारे ही ह्रदय में विद्‌यमान हूँ

(घ) कर्मकांड करने से मैं तुरंत मिल जाता हूँ

ii- 'देवल' शब्द का क्या मतलब है?

(क) देवालय

(ख) मस्जिद

(ग) काशी

(घ) कर्बला

iii- योग और वैराग्य धारण करने पर भी कौन नहीं मिल सकते हैं?

(क) कबीर

(ख) परमात्मा

(ग) ज्ञानी जन

(घ) कर्मकांडी लोग

iv- 'खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तलास में'- यह पंक्ति किससे संबंधित है?

(क) धर्म में भेद बताने वाले से

(ख) ईश्वर को सच्चे मन से याद करने वाले से

(ग) कर्मकांड करने वाले से

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- 'कहैं कबीर सुनो भई साधो' - इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) रूपक अलंकार

(घ) अनुप्रास अलंकार

उत्तर- i. (ग) मैं तुम्हारे ही हृदय में विद्यमान हूँ ii. (क) देवालय iii. (ख) परमात्मा iv. (ख) ईश्वर को सच्चे मन से याद करने वाले से v. (घ) अनुप्रास अलंकार

वाख

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।।

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

i- कवयित्री के अनुसार 'नाव खींचने' का क्या आशय है?

(क) ईश्वर का स्मरण करना

(ख) जीवन व्यतीत करना

(ग) दिखावा करना

(घ) पूजा-पाठ करना

ii- कौन दुःख रूपी सागर से हमारा उद्धार करता है?

(क) गुरु

(ख) भक्त

(ग) ईश्वर

(घ) ज्ञानी

iii- 'घर जाने की चाह है घेरे' इस पंक्ति का क्या आशय है?

(क) साधुओं से मिलने की इच्छा

(ख) परमात्मा से मिलने की इच्छा

(ग) तीर्थ यात्रा करने की चाह

(घ) कर्मकांड करने की चाह

iv- ईश्वर का स्मरण करने के लिए जीवन मिला किन्तु सांसारिक कार्यों में जीवन उलझ गया - यह भाव किस पंक्ति में निहित है?

(क) आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।

(ख) जेब टटोली, कौड़ी न पाई।

(ग) रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

(घ) माझी को दूँ, क्या उतराई?

v- 'जेब टटोली, कौड़ी न पाई' - इस पंक्ति का क्या भाव है?

(क) जीवन को बचाने का प्रयास किया लेकिन सफल न हो सकी।

(ख) ईश्वर को याद किया किन्तु साक्षात्कार न हो सका।

(ग) जीवन के रहस्य को समझने का प्रयत्न किया किन्तु समझ न सकी।

(घ) गुरु के पास जाकर साधना किया किन्तु सफल न हो सकी।

उत्तर- i. (ख) जीवन व्यतीत करना ii. (ग) ईश्वर iii. (ख) परमात्मा से मिलने की इच्छा iv. (क) आई सीधी राह से, गई न सीधी राह। v. (ग) जीवन के रहस्य को समझने का प्रयत्न किया किन्तु समझ न सकी।

सवैये

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

मानुष हौं तो वही रसखान ई बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

i- कवि मनुष्य रूप में जन्म लेने के बाद कहाँ बसना चाहता है?

(क) मथुरा के गाँव में

(ख) गोवर्धन पर्वत पर

(ग) ब्रज क्षेत्र के गाँव ग्वालों के बीच

(घ) श्रीकृष्ण के गाँव में

ii- किस रूप में जीवन मिलने पर कवि नंद की गायों के बीच चरना चाहेगा?

(क) मनुष्य के रूप में

(ख) पत्थर के रूप में

(ग) पक्षी के रूप में

(घ) पशु के रूप में

iii- यदि कवि को कभी पत्थर बनना पड़े तो वह कहाँ रहना चाहेगा?

(क) उस पर्वत पर जिसे हनुमान जी ने उठाया था

(ख) उस पर्वत पर जिसे श्रीकृष्ण ने शरण देने के लिए अँगुली पर उठा लिया था

(ग) उस पर्वत पर जहाँ नंद बाबा की गायें चरने जाती थीं

(घ) उपर्युक्त सभी

iv- जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) अनुप्रास अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

v- पक्षी होने पर कवि कहाँ निवास करना चाहता है?

(क) यमुना नदी के किनारे कदंब वृक्ष की डालों पर

(ख) यमुना नदी के पर्वत की चोटियों पर

(ग) यमुना नदी के किनारे बसे गाँवों में

(घ) गंगा नदी के किनारे घास के मैदानों में

उत्तर- i. (ग) ब्रज क्षेत्र के गाँव ग्वालों के बीच ii. (घ) पशु के रूप में iii. (ख) उस पर्वत पर जिसे श्रीकृष्ण ने शरण देने के लिए अँगुली पर उठा लिया था iv. (ग) अनुप्रास अलंकार v. (क) यमुना नदी के किनारे कदंब वृक्ष की डालों पर

कैदी और कोकिला

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं भर-पेट खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?
क्यों हूक पड़ी?
वेदना बोझ वाली-सी;
कोकिल बोलो तो!

i- ऊँची काली दीवारों के घेरे में कौन कैद है?

(क) कोयल

(ख) कवि

(ग) डाकू

(घ) भौंरा

ii- जेल में बंद कैदी को कौन भर-पेट खाना नहीं देता है?

(क) आज़ादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले क्रांतिकारी

(ख) शिकार करने वाला शिकारी

(ग) अंग्रेज शासकों के अधिकारी

(घ) अंग्रेजों से डरे हुए शहरी लोग

iii- कवि को हिमकर ने क्यों निराश किया है?

(क) कवि पर अंग्रेजों के अत्याचार असहनीय हैं

(ख) अमावस्या में चन्द्रमा भी दिखाई नहीं पड़ता है

(ग) कवि के लिए दुःख भरी रात काटना मुश्किल है

(घ) उपर्युक्त सभी

iv- कवि कोयल से क्या प्रश्न पूछता है?

(क) उसे किस बात का दुःख है और वह रात में क्यों जगी हुई है?

(ख) उसे किस बात का डर है?

(ग) उसे किसने कैद किया हुआ है?

(घ) क्या अंधेरी रात बहुत डरावनी है?

v- 'हिमकर निराश कर चला रात भी काली' - पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

उत्तर- i. (ख) कवि ii. (ग) अंग्रेज शासकों के अधिकारी iii. (घ) उपर्युक्त सभी iv. (क) उसे किस बात का दुःख है और वह रात में क्यों जगी हुई है? v. (ग) मानवीकरण अलंकार

ग्राम श्री

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की सी कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चांदी की सी उजली जाली!
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भूतल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!
रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली!

i- मखमल जैसी हरियाली कहाँ फैली हुई है?

(क) खेतों में

(ख) गाँवों में

(ग) घरों में

(घ) मैदानों में

ii- हरित रुधिर किनमें झलक रहा है?

(क) हरे हरे खेतों में

(ख) हिलते हुए पेड़ों में

(ग) हिलती हुई हरी-हरी घासों में

(घ) हरे हरे पत्तों में

iii- श्यामल भूतल पर किस तरह का फलक झुका हुआ है?

(क) हिल हरित रुधिर है रहा झलक,

(ख) मखमल की सी कोमल हरियाली,

(ग) चांदी की सी उजली जाली!

(घ) नभ का चिर निर्मल नील फलक

iv- धरती कब रोमांचित कर देने वाली-सी लगती है?

(क) जब धरती हरी-भरी होती है

(ख) जब गेहूँ और जौ में बालियाँ लग जाती हैं

(ग) जब नभ घिरा हुआ-सा दिखता है

(घ) जब सूर्य की किरणें धरती पर पड़ती हैं

v- लो, हरित धरा से झाँक रही

नीलम की कलि, तीसी नीली! **- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**

(क) यमक अलंकार

(ख) मानवीकरण अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

उत्तर- i. (क) खेतों में ii. (ग) हिलती हुई हरी-हरी घासों में iii. (घ) नभ का चिर निर्मल नील फलक iv. (ख) जब गेहूँ और जौ में बालियाँ लग जाती हैं v. (ख) मानवीकरण अलंकार

मेघ आए

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुध लीन्हीं'-
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

i- मेघ रूपी पाहुन के गाँव में आने पर किसने आगे बढ़कर सत्कार किया?

(क) लता ने

(ख) तालाब ने

(ग) बूढ़े पीपल ने

(घ) घटा ने

ii- अकुलाई लता ने किवाड़ की आड़ से क्या कहा?

(क) हमारे घर में आपका स्वागत है

(ख) आपने वर्ष भर बाद सुध लिया

(ग) आपके पैर धो देती हूँ

(घ) इनमें से कोई नहीं

iii- मेहमान के आने पर मग्न तालाब ने क्या किया?

(क) सामने आकार प्रणाम किया

(ख) शर्म के मारे दूर भाग गया

(ग) किवाड़ के पीछे छिप गया

(घ) परात में पानी भर लाया

iv- बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके - यह पंक्ति किससे संबंधित है?

(क) लता और मेघ से

(ख) बादल और बिजली से

(ग) बरगद और तालाब से

(घ) तालाब और लता से

v- 'मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के' **- इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?**

(क) यमक अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

उत्तर- i. (ग) बूढ़े पीपल ने ii. (ख) आपने वर्ष भर बाद सुध लिया iii. (घ) परात में पानी भर लाया iv. (क) लता और मेघ से v. (ग) मानवीकरण अलंकार

बच्चे काम पर जा रहे हैं

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन

खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल
पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

i- रंग-बिरंगी सारी किताबों को दीमकों के खाने के पीछे कवि का क्या कहना चाहता है?

(क) क्योंकि बच्चे पढ़ने जाने के बजाय कारखानों में काम करने जा रहे हैं
(ख) रंग-बिरंगी किताबें अधिक अच्छी लगती हैं
(ग) रंग-बिरंगी किताबों में दीमक जल्दी लगते हैं
(घ) किताबों रंग-बिरंग होना उनके कीमती होने की पहचान है

ii- बच्चों के काम पर जाने को देख कर कवि मदरसों के विषय में क्या कहता है?

(क) सरकार द्वारा मदरसे खोले जाने चाहिए
(ख) बच्चे मदरसों में पढ़ने क्यों जाते हैं
(ग) क्या किसी भूकंप में मदरसों की इमारतें ढह गई हैं
(घ) शिक्षा में मदरसों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है

iii- कवि किन किन बातों के एकाएक ख़त्म हो जाने से इस दुनिया में कुछ नहीं बचा मानता है?

(क) सारे मैदान
(ख) सारे बगीचे
(ग) सारे घरों के आँगन
(घ) उपर्युक्त सभी

iv- 'कितना भयानक होता अगर ऐसा होता' - कवि की चिंता किस विषय को लेकर है?

(क) अगर बच्चों को खेलने के खिलौने न होते
(ख) अगर बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशाला न होती
(ग) अगर बच्चों के पास रंग-बिरंगी किताबें न होतीं
(घ) इनमें से सभी

v- दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुजरते हुए बच्चे, बहुत छोटे बच्चे - इस पंक्ति में क्या अर्थ निहित है?

(क) बच्चों का कारखानों में काम करना विश्वव्यापी समस्या है
(ख) बच्चे कारखानों में काम नहीं करते हैं
(ग) माता-पिता कारखानों में बच्चों से काम करवाते हैं
(घ) सरकार बच्चों से कारखानों में काम करवाती है

उत्तर- i. (क) क्योंकि बच्चे पढ़ने जाने के बजाय कारखानों में काम करने जा रहे हैं ii. (ग) क्या किसी भूकंप में मदरसों की इमारतें ढह गई हैं iii. (घ) उपर्युक्त सभी iv. (घ) इनमें से सभी v. (क) बच्चों का कारखानों में काम करना विश्वव्यापी समस्या है

खंड - 'ब' वर्णनात्मक प्रश्न

गद्‌य भाग

दो बैलों की कथा

प्रश्न 1.कांजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर-कांजीहौस एक प्रकार से पशुओं की जेल थी। उसमें ऐसे आवारा पशु कैद होते थे जो दूसरों के खेतों में घुसकर फसलें नष्ट करते थे। अत: कांजीहौस के मालिक का यह दायित्व होता था कि वह उन्हें जेल में सुरक्षित रखे तथा भागने न दे। इस कारण हर रोज उनकी हाजिरी लेनी पड़ती होगी।

प्रश्न 2.छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर-छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी। इधर बैलों की भी यही स्थिति थी। गया उन्हें दिनभर खेत में जोतता, मारता-पीटता और शाम को सूखा भूसा डाल देता। छोटी बच्ची महसूस कर रही थी कि उसकी स्थिति और बैलों की स्थिति एक जैसी है। उनके साथ अन्याय होता देखा उसे बैलों के प्रति प्रेम उमड़ आया।

प्रश्न 3.कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभर कर आए हैं?

उत्तर-इस कहानी के माध्यम से निम्नलिखित नीतिविषयक मूल्य उभरकर सामने आए हैं

- सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील होना पाप है। बहुत सीधे इनसान को मूर्ख या 'गधा' कहा जाता है।
- इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए।
- आज़ादी बहुत बड़ा मूल्य है। इसे पाने के लिए मनुष्य को बड़े-से-बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिए।
- समाज के सुखी-संपन्न लोगों को भी आजादी की लड़ाई में योगदान देना चाहिए।

प्रश्न 4.प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख'का प्रयोग न करके किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर-गधा सबसे बुद्‌धिहीन प्राणी माना जाता है। यदि किसी को मूर्ख कहना चाहते हैं तो हम उसे गधा कह देते हैं। गधा 'मूर्ख' के अर्थ में रुढ़ हो गया है परंतु लेखक ने इसे सही नहीं माना क्योंकि गधा अपने सीधेपन और सहनशीलता से किसी को हानि नहीं पहुँचाता है। गाय, कुत्ता और बैल जैसे जानवर कभी-कभी क्रोध कर देते हैं पर गधा ऐसा नहीं करता है। गुणों के विषय में वह ऋषियों-मुनियों से कम नहीं है।

प्रश्न 5.किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर-इस कहानी में अनेक घटनाएँ ऐसी हैं जिनसे पता चलता है कि मोती और हीरा में गहरी दोस्ती थी।

1. **पहली घटना-**दोनों एक-साथ गाड़ी में जोते जाते थे तो यह कोशिश करते थे कि गाड़ी का अधिक भार दूसरे साथी के कंधे पर न आकर उसके अपने कंधे पर आए।
2. **दूसरी घटना-**गया ने हीरा के नाक पर डंडा मारा तो मोती से सहा न गया। वह हल, रस्सी, जुआ, जोत सब लेकर भाग पड़ा। उससे हीरा का कष्ट देखा न गया।
3. **तीसरी घटना-**जब मटर के खेत में मटर खाकर दोनों मस्त हो रहे तो वे सींग मिलाकर एक-दूसरे को ठेलने लगे। अचानक मोती को लगा कि हीरा क्रोध में आ गया है तो वह पीछे हट गया। उसने दोस्ती को दुश्मनी में बदलने से रोक लिया।

4. **चौथी घटना-**जब उनके सामने विशालकाय साँड आ खड़ा हुआ तो उन्होंने योजनापूर्वक एक-दूसरे का साथ देते हुए उसका मुकाबला किया। साँड एक पर चोट करता तो दूसरा उसकी देह में अपने नुकीले सींग चुभा देता। आखिरकार साँड बेदम होकर गिर पड़ा।
5. **पाँचवीं घटना-**मोती मटर के खेत में मटर खाते-खाते पकड़ा गया। हीरा उसे अकेला विपत्ति में देखकर वापस आ गया। वह भी मोती के साथ पकड़ा गया।
6. **छठी घटना-**काँजीहौस में हीरा ने दीवार तोड़ डाली। उसे रस्सियों से बाँध दिया गया। इस पर मोती ने उसका साथ दिया। पहले तो उसने बाड़े की दीवार तोड़कर हीरा का अधूरा काम पूरा किया, फिर उसका साथ देने के लिए उसी के साथ बँध गया।

प्रश्न 6.लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।'-हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है। हीरा के इस कथन के माध्यम से पता चलता है कि प्रेमचंद नारी जाति का अत्यधिक सम्मान करते थे। नारी विभिन्न रिश्ते बनाकर समाज में अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। वह त्याग, दया, ममता, सहनशीलता का जीता जागता उदाहरण है। विपरीत परिस्थितियों में यदि नारी में क्रोध जैसे भाव आ भी जाते हैं तो इससे उसकी गरिमा कम नहीं हो जाती है और न उसके सम्मान में कमी आ जाती है। लेखक महिलाओं के प्रति अत्यधिक सम्मान रखता है। उसने यह भी कहना चाहा है कि जब पशु भी नारी जाति का सम्मान करते हैं तो मनुष्य को नारी जाति का सम्मान हर स्थिति में करना चाहिए।

प्रश्न 7.कहानी में पशु और किसान के आपसी संबंधों को किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर-किसान जीवन में पशुओं और मनुष्यों के आपसी संबंध बहुत गहरे तथा आत्मीय रहे हैं।किसान पशुओं को घर के सदस्य की भाँति प्रेम करते रहे हैं और पशु अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहे हैं। झूरी हीरा और मोती को बच्चों की तरह स्नेह करता था। तभी तो उसने उनके सुंदर-सुंदर नाम रखे-हीरा-मोती। वह उन्हें अपनी आँखों से दूर नहीं करना चाहता था। जब हीरा-मोती उसकी ससुराल से लौटकर वापस उसके थाने पर आ खड़े हुए तो उसका हृदय आनंद से भर गया। गाँव-भर के बच्चों ने भी बैलों की स्वामिभक्ति देखकर उनका अभिनंदन किया। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8.क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?

उत्तर-हाँ, हीरा-मोती ने अपनी परतंत्रता से मुक्ति पाने के लिए जिस तरह से नाना प्रकार की कठिनाइयाँ सहीं और मृत्यु के करीब जाकर भी बच निकले। वे अंततः अपने घर वापस आ गए, इससे यही संकेत मिलता है। हीरा-मोती गया के घर से पहली बार रस्सी तुड़ाकर आ जाते हैं। वे दुबारा गया के घर जाते हैं, तो उन्हें अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ता है। और भूखा भी रहना पड़ता है। वहाँ से भागने पर उन्हें साँड रूपी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। अंत में कांजीहौस में बंद होना तथा कसाई के हाथों बिकना तथा इसके उपरांत भी बचकर झुरी के पास आ जाना आदि आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है।

प्रश्न 9.सहनशीलता के मामले में गाय और कुत्ता गधे से किस तरह भिन्न हैं?

उत्तर-गाय और कुत्ता गधे जितना सहनशील नहीं है। गाय नाराज होने पर या अपने बच्चे को छेड़े जाते हुए देखकर हिंसक रूप धारण कर लेती है। इसी तरह कुत्ता भी काट लेता है जबकि गधा सब कुछ चुपचाप सहन कर लेता है।

प्रश्न 10.अफ्रीका और अमरीका में भारतीयों की दुर्दशा के क्या कारण हैं?

उत्तर- अफ्रीका और अमरीका में भारतीयों की दुर्दशा का कारण उनका सीधापन और उनकी सहनशीलता है। वे अपनी सहनशीलता के कारण शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते है और गम खाकर रह जाते हैं।

प्रश्न 11.बैल को गधे का छोटा भाई क्यों कहा गया है?

उत्तर-बैल को गधे का छोटा भाई इसलिए कहा गया है क्योंकि बैल भी सीधा-सादा जानवर है। वह भी सहनशील है पर गधे जितना नहीं। बैल सींग चलाकर, अड़ियल रुख अपनाकर तथा कई अन्य तरीके से अपना विरोध एवं असंतोष प्रकट कर देता है।

प्रश्न 12.हीरा-मोती एक-दूसरे के प्रति प्रेम और मित्रता कैसे प्रकट करते थे?

उत्तर-हीरा और मोती एक-दूसरे को चाट-चूटकर और सँघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। वे अपनी दोस्ती प्रकट करने के लिए कभी-कभी सींग भी मिला लेते थे। उनके ऐसा करने में विग्रह का भाव नहीं बल्कि मनोविनोद और आत्मीयता का भाव रहता था।

प्रश्न 13.हीरा और मोती अपने मालिक झूरी के साथ किस तरह का भाव रखते थे?

उत्तर-हीरा और मोती अपने मालिक झूरी के साथ अत्यंत गहरा प्रेम एवं आत्मीय व्यवहार रखते थे। वे अपने मालिक से प्रेम करते हुए उसकी हर बात मानते थे। वे झूरी से अलग नहीं रहना चाहते थे। उनकी इच्छा थी उनका मालिक चाहे जितना काम करा ले पर वह उन्हें अपने से अलग न करे। झूरी ने जब गया के साथ उन्हें भेजा तो वे रस्सीपगहे तुड़ाकर गया के घर से भागकर आ गए। इस समय उनकी आँखों में विद्रोहमयी स्नेह झलक रहा था। हीरा-मोती को भागने का अवसर मिलने पर भी वे अंत में भागकर झूरी के पास आ जाते थे जो उनके असीम लगाव का प्रमाण था।

प्रश्न 14.मोती ने बैलगाड़ी को खाई में गिरा देना चाहा पर हीरा ने सँभाल लिया। इस कथन के आलोक में हीरा की स्वाभाविक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-हीरा-मोती गया के साथ नहीं जाना चाहते थे, इसलिए गया उन दोनों को बैलगाड़ी में जोतकर ले जा रहा था। अपना विरोध जताने के लिए मोती बैलगाड़ी को खाई में गिरा देना चाहता था, पर हीरा ने रोक लिया। इससे उसकी इन विशेषताओं का पता चलता है-

- धैर्यवान-हीरा-मोती की तुलना में अधिक धैर्यवान है। वह किसी समस्या का धैर्यपूर्वक सामना करता है।
- सहनशील-गया ने जब हीरा की नाक पर डंडे बरसाए तो हीरा सहन कर गया। इसी घटना के लिए मोती ने जब गयों को मार गिराना चाहा तो हीरा ने कहा कि यह हमारी जाति का धर्म नहीं है।
- अहिंसक विद्रोही-कांजीहौस में मार खाकर भी हीरा शांत नहीं होता। यद्यपि उसे मोटी रस्सियों में बाँध दिया जाता है फिर भी वह कहता है 'ज़ोर तो मारता ही जाऊँगा चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।'
- सच्चा मित्र-हीरा मोती के साथ सच्ची मित्रता निभाता है। वह रखवालों के हाथ पड़े मोती को अकेला नहीं छोड़ता है।

प्रश्न 15.'संगठन में शक्ति है'-हीरा और मोती ने इसका नमूना किस तरह प्रस्तुत किया?

उत्तर-यह सर्वविदित है कि संगठन में शक्ति होती है। इसका एक नमूना हीरा-मोती ने अपने से बलशाली साँड को पराजित करके प्रस्तुत किया। गया के घर से भागे हीरा-मोती के सामने रास्ते में विशालकाय, मदमस्त साँड आ गया। हीरा-मोती ने सोच-विचार के बाद अपने से बलशाली शत्रु का मुकाबला करने की योजना बनाई मल्ल युद्ध में माहिर साँड को संगठित शत्रुओं से लड़ने का अनुभव न था। हीरा-मोती ने संगठित होकर साँड से युद्ध किया। एक ने आगे से

वार किया तो दूसरे ने पीछे से। साँड जब हीरा को मारने दौड़ता तो मोती उस पर सींग से वार कर देता। वह जब मोती पर वार करता तो हीरा उसके बगल में सींग घुसा देता। इससे साँड जख्मी होकर बेदम हो गया और गिर गया।

प्रश्न 16.हीरा और मोती स्वभाव से विद्रोही हैं पर उनके मन में दयाभाव भी है। इसका प्रमाण हमें कब और कहाँ मिलता है?

उत्तर-हीरा और मोती स्वभाव से विद्रोही हैं। इसी विद्रोह के कारण वे दूसरी बार भी गया के घर से भागते हैं और खेत के रखवालों द्वारा पकड़कर कांजीहौस में बंद कर दिए जाते हैं। कांजीहौस में हीरा-मोती ने देखा कि यहाँ भैसे, घोड़ियाँ, गधे बकरियाँ आदि पहले से बंद हैं। वे चारा न मिलने के कारण मुरदों जैसे जमीन पर पड़े हैं। इन्हें देखकर हीरा-मोती दयार्द्र हो जाते हैं। पहले हीरा ने बाड़े की दीवार गिराना शुरू किया परंतु चौकीदार ने देख लिया और उसे बंधन में डाल दिया। अब मोती ने उग्र रुख अपनाया और दो घंटे के परिश्रम के बाद बाड़ की आधी दीवार गिरा दी। अब उसने सींग मार-मारकर जानवरों को वहाँ से भगा दिया और उनकी जान बचाई। इस प्रकार हीरा-मोती एक ओर जहाँ विद्रोही हैं वहीं दूसरी ओर उनके मन में दयाभाव भी है।

ल्हासा की ओर

प्रश्न 1.थोड्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर-संबंधों का महत्त्वइसका मुख्य कारण था। तिब्बत में इस मार्ग पर यात्रियों के लिए एकजैसी व्यवस्थाएँ नहीं थीं। इसलिए वहाँ जान-पहचान के आधार पर ठहरने का उचित स्थान मिल पाता था। बिना जान-पहचान वालेयात्रियों को भटकना पड़ता था। दूसरी बात यह थी कितिब्बत के लोग शाम छः बजे के बाद छङ पीकर मस्त हो जाते थे। तब वे यात्रियों की सुविधा का ध्यान नहीं रखते थे।

प्रश्न 2.उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय रहताथा?

उत्तर-उस समय तिब्बत में हथियार संबंधी कानून न होने से यात्रियों को हमेशा अपनी जान को खतरा बना रहता था। लोग हथियारों को लाठी-डंडे की तरह लेकर चलते थे। डाकू अपनी रक्षा के लिए यात्रियों या लोगों को पहले मार देते थे, तब देखते थे कि उनके पास कुछ है भी या नहीं। इस तरह हमेशा जान जोखिम में रहती थी।

प्रश्न 3.लेखक लड्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर-लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से दो कारणों से पिछड़ गया था। पहली बात तो यह थी कि उसका घोड़ा बहुत सुस्त था और दूसरी बात यह थी कि वह रास्ता भटककर एक-डेढ़ मील गलत रास्ते पर चला गया था। उसे वहाँ से वापस आना पड़ा।

प्रश्न 4.प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर-इस यात्रा वृतांत से पता चलता है कि उस समय तिब्बती समाज में परदा प्रथा, छुआछूत जैसी बुराइयाँ न थीं। महिलाएँ अजनबी लोगों को भी चाय बनाकर दे देती थी। निम्न श्रेणी के भिखमंगों को छोड़कर कोई भी किसी के घर में आ जा सकता था। पुरुषवर्ग शाम के समय छङ पीकर मदहोश रहते थे। वे गंडों पर अगाध विश्वास रखते थे। समाज में अंधविश्वास का बोलबाला था।

प्रश्न 5.सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उत्तर-सुमति के यजमान और परिचितों के हर गाँव में मिलने से उनकी अनेक विशेषताओं का पता चलता है; जैसे-

- सुमति मिलनसार और हँस–मुख व्यक्ति थाउसकी जान-पहचान का दायरा विस्तृत था।
- सुमति अपने यजमानों को बोधगया से लाए कपड़े के गंडे बनाकर दिया करते था और उनसे दक्षिणा लेते था।
- सुमति लोगों की आस्था का अनुचित लाभ उठाते था पर इसकी खबर लोगों को नहीं लगने देता था।
- बौद्ध धर्म में उसकी गहरी आस्था थी।

प्रश्न 6.यात्रा-वृत्तांत के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए। वहाँ की स्थिति आपके राज्य/ शहर से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- यात्रा वृत्तांत से ज्ञात होता है कि तिब्बत भारत और नेपाल से लगता हुआ देश है जहाँ कुछ समय तक आने-जाने पर प्रतिबंध था। यह स्थान समुद्र तल से काफ़ी ऊँचा है। यहाँ सत्रह-अठारह हजार फीट ऊँचे डाँड़े हैं जो खतरनाक जगहें हैं। ये डाँडे नदियों के मोड़ और पहाड़ी की चोटियों के कारण बहुत ऊँचे-नीचे हैं। यहाँ एक ओर हज़ारों बरफ़ से ढंके श्वेत शिखर हैं तो दूसरी ओर भीटे हैं जिन पर बहुत कम बरफ़ रहती है। यहाँ विशाल मैदान भी हैं जो पहाड़ों से घिरे हैं। यहाँ के विचित्र जलवायु में सूर्य की ओर मुँह करके चलने पर माथा जलता है जबकि कंधा और पीठ बरफ़ की तरह ठंडे हो जाते हैं। यह स्थिति हमारे राज्य/शहर से पूरी तरह भिन्न है।

प्रश्न 7.लेखक ने तिब्बत की यात्रा किस वेश में की और क्यों?

उत्तर-लेखक ने तिब्बत की यात्रा भिखमंगों के वेश में की क्योंकि उस समय तिब्बत की यात्रा पर प्रतिबंध था। इसके अलावा डाँडे जैसी खतरनाक जगहों पर डाकुओं से इसी वेश में जान बचायी जा सकती थी।

प्रश्न 8.डाँड़े क्या है? वह सामान्य जगहों से किस तरह भिन्न है?

उत्तर-तिब्बत में डाँड़े सबसे खतरनाक जगह है। यह स्थान सत्रह-अठारह हजार फीट ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ आसपास गाँव न होने से डाकुओं का भय सदा बना रहता है।डाँड़े के देवता का स्थान सर्वोच्च स्थान पर था। उसे पत्थरों के ढेर रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों, जानवरों की सींगों आदि से सजाया गया था।

प्रश्न 9.लेखक जिस रास्ते से यात्रा कर रहा था वहाँ के किलों को परित्यक्त क्यों कहा गया है?

उत्तर-लेखक जिस रास्ते से यात्रा कर रहा था, वहाँ कई किले बने थे। इन किलों में कभी चीनी सेना रहती थी। आज ये किले देखभाल के अभाव में गिरने लगे हैं। कुछ किसानों ने आकर यहाँ बसेरा बना लिया है। अब यहाँ सैनिक नहीं रहते हैं, इसलिए इन्हें परित्यक्त कहा है।

प्रश्न 10.यात्रा करते समय लेखक और उसके साथियों ने डाकुओं से अपनी जान कैसे बचाई?

उत्तर-तिब्बतयात्रा के दौरान लेखक ने डाँड़े जैसी खतरनाक जगहों पर भिखमंगों का वेश बनाकर यात्रा की और डाकुओं को देखते ही टोपी उतारकर “कुची-कुची एक पैसा” कहकर यह बताने कोशिश की कि वह भी एक भिखारी है।

प्रश्न 11.तिब्बत का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-तिब्बत का प्राकृतिक सौंदर्य सचमुच अनुपम है। यह सुंदर एवं मनोहारी घाटियों से घिरा पर्वतीय क्षेत्र हैं। एक ओर हरी भरी घाटियाँ और हरे-भरे सुंदर मैदान हैं तो दूसरी ओर ऊँचे पर्वत हैं। इनके शिखरों पर बरफ़ जमी रहती है। वहीं कुछ भीटे जैसे स्थान हैं जिन पर कम ही बरफ़ दिखाई देती है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के कोने और नदियों के मोड़ इस खूबसूरती को और भी बढ़ाते हैं। यहाँ की ठंड जलवायु इसके सौंदर्य में वृद्धि करती हैं।

प्रश्न 12.सुमति लोगों की धार्मिक आस्था का अनुचित फायदा किस तरह उठाते थे?

उत्तर- सुमति मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्ति थे। वे तिब्बत में धर्मगुरु के समान माने जाते थे। सुमति बोध गया से कपड़े लाते और उन्हें पतले-पतले आकर में फाड़कर गाँठ लगाकर गंडा बना लेते थे। इन गंडों को वे अपने यजमानों में बाँटकर दक्षिणा के रूप में धन लिया करते थे। बोध गया से लाए ये कपड़े जब खत्म हो जाते तो वे लाल रंग के किसी

कपड़े का गंडा बनाकर यजमानों में बाँटने लगते ताकि वे दक्षिणा पाते रहें। इस तरह वे लोगों की धार्मिक आस्था का अनुचित फायदा उठाते थे।

प्रश्न 13.डाँड़े के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कीजिए।

उत्तर-तिब्बत में डाँड़े खतरनाक जगह है जो समुद्रतल से सत्रह-हज़ार फीट ऊँचाई पर स्थित है। यह सुंदर स्थान निर्जन एवं सुनसान होता है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के कोने और नदियों के मोड के अलावा चारों ओर फैली हरियाली इसकी सुंदरता बढ़ाती हैं। एक ओर बरफ़ से ढंकी पहाड़ों की चोटियाँ हैं तो दूसरी ओर घाटियों में विशाल मैदान हैं। वहाँ भीटे जैसे पहाड़ों पर न हरियाली दिखती है और न बरफ़ यह मिला-जुला रूप प्राकृतिक सौंदर्य बढ़ा देता है।

प्रश्न 14.तिब्बत में खेती की ज़मीन की क्या स्थिति है?'ल्हासा की ओर' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-तिब्बत में खेती की ज़मीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जमीनों का एक बड़ा हिस्सा जागीरों (मठों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में से हर जागीरदार खुद भी कुछ खेती कराता है। इसके लिए उन्हें मजदूरों को मेहनताना नहीं देना पड़ता है। खेती का इंतजाम देखने के लिए जिन भिक्षुओं को भेजा जाता है जो जागीर के आदमियों के लिए राजा जैसा होता है। इन भिक्षुओं और जागीरदारों पर ही खेती कराने की जिम्मेदारी होती है।

उपभोक्ता वाद की संस्कृति

प्रश्न 1.लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' का अभिप्राय केवल उपभोग-सुख नहीं है। अन्य प्रकार के मानसिक, शारीरिक और सूक्ष्म आराम भी 'सुख' कहलाते हैं। परंतु आजकल लोग केवल उपभोग-सुख को 'सुख' कहने लगे हैं।

प्रश्न 2.आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर-उपभोक्तावादी संस्कृति से हमारा दैनिक जीवन पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। आज व्यक्ति उपभोग को ही सुख समझने लगा है। इस कारण लोग अधिकाधिक वस्तुओं का उपभोग कर लेना चाहते हैं। लोग बहुविज्ञापित वस्तुओं को खरीदकर दिखावा करने लगे हैं। इस संस्कृति से मानवीय संबंध कमजोर हो रहे हैं। अमीर-गरीब के बीच दूरी बढ़ने से समाज में अशांति और आक्रोश बढ़ रहा है।

प्रश्न 3.लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है ?

उत्तर-गाँधी जी सामाजिक मर्यादाओं तथा नैतिकता के पक्षधर थे। वे सादा जीवन, उच्च विचार के कायल थे। वे चाहते थे कि समाज में आपसी प्रेम और संबंध बढ़े। लोग संयम और नैतिकता का आचरण करें। उपभोक्तावादी संस्कृति इस सबके विपरीत चलती है। वह भोग को बढ़ावा देती है और नैतिकता तथा मर्यादा को तिलांजलि देती है। गाँधी जी चाहते थे कि हम भारतीय अपनी बुनियाद पर कायम रहें, अर्थात् अपनी संस्कृति को न त्यागें। परंतु आज उपभोक्तावादी संस्कृति के नाम पर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी मिटाते जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है।

प्रश्न 4.आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर-(क) उपभोक्तावादी संस्कृति अधिकाधिक उपभोग को बढ़ावा देती है। लोग उपभोग का ही सुख मानकर भौतिक साधनों का उपयोग करने लगते हैं। इससे वे वस्तु की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना उत्पाद के गुलाम बनकर रह जाते हैं। जिसका असर उनके चरित्र पर पड़ता है।

(ख) लोग समाज में प्रतिष्ठा दिखाने के लिए तरह-तरह के तौर तरीके अपनाते हैं। उनमें कुछ अनुकरणीय होते हैं तो कुछ उपहास का कारण बन जाते हैं। पश्चिमी देशों में लोग अपने अंतिम संस्कार अंतिम विश्राम हेतु-अधिक-से-अधिक मूल्य देखकर सुंदर जगह सुनिश्चित करने लगे हैं। उनका ऐसा करना नितांत हास्यास्पद है।

प्रश्न 5.कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं।क्यों?

उत्तर-टी.वी. पर आने वाले विज्ञापन बहुत प्रभावशाली होते हैं। वे हमारी आँखों और कानों को विभिन्न दृश्यों और ध्वनियों के सहारे प्रभावित करते हैं। वे हमारे मन में वस्तुओं के प्रति भ्रामक आकर्षण जगा देते हैं। बच्चे तो उनके बिना रह ही नहीं पाते। 'खाए जाओ, खाए जाओ', 'क्या करें, कंट्रोल ही नहीं होता', जैसे आकर्षण हमारी लार टपका देते हैं। इसलिए अनुपयोगी वस्तुएँ भी हमें लालायित कर देती हैं।

प्रश्न 6.आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर-हमारे अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार उसकी गुणवत्ता होनी चाहिए न कि विज्ञापन। इस संबंध में कबीर की उक्ति पूर्णतया सटीक बैठती है कि-'मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।' विज्ञापन हमें वस्तुओं की विविधता, मूल्य, उपलब्धता आदि का ज्ञान तो कराते हैं परंतु उनकी गुणवत्ता का ज्ञान हमें अपनी बुधि-विवेक से करके ही आवश्यकतानुसार वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

प्रश्न 7.पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर-आज दिखावे की संस्कृति पनप रही है। यह बात बिल्कुल सत्य है। इसलिए लोग उन्हीं चीजों को अपना रहे हैं, जो दुनिया की नजरों में अच्छी हैं। सारे सौंदय-प्रसाधन मनुष्यों को सुंदर दिखाने के ही प्रयास करते हैं। पहले यह दिखावा औरतों में होता था, आजकल पुरुष भी इस दौड़ में आगे बढ़ चले हैं। नए-नए परिधान और फैशनेबल वस्त्र दिखावे की संस्कृति को ही बढ़ावा दे रहे हैं।

आज लोग समय देखने के लिए घड़ी नहीं खरीदते, बल्कि अपनी हैसियत दिखाने के लिए हजारों क्या लाखों रुपए की घड़ी पहनते हैं। आज हर चीज पाँच सितारा संस्कृति की हो गई है। खाने के लिए पाँच-सितारा होटल, इलाज के लिए पाँच सितारा हस्पताल, पढ़ाई के लिए पाँच सितारा सुविधाओं वाले विद्यालये-सब जगह दिखावे का ही साम्राज्य है। यहाँ तक कि लोग मरने के बाद अपनी कब्र के लिए लाखों रुपए खर्च करने लगे हैं ताकि वे दुनिया में अपनी हैसियत के लिए पहचाने जा सकें।

यह दिखावा-संस्कृति मनुष्य को मनुष्य से दूर कर रही है। लोगों के सामाजिक संबंध घटने लगे हैं। मन में अशांति जन्म ले रही है। आक्रोश बढ़ रहा है, तनाव बढ़ रहा है। हम लक्ष्य से भटक रहे हैं। यह अशुभ है। इसे रोका जाना चाहिए।

प्रश्न 8.आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर-आज की उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव से हमारे रीति-रिवाज और त्योहार अछूते नहीं रहे। हमारे रीति-रिवाज और त्योहार सामाजिक समरसता बढ़ाने वाले, वर्ग भेद मिटाने वाले सभी को उल्लासित एवं आनंदित करने वाले हुआ करते थे, परंतु उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से इनमें बदलाव आ गया है। इससे त्योहार अपने मूल उद्देश्य से भटक गए हैं। आज रक्षाबंधन के पावन अवसर पर बहन भाई द्वारा दिए गए उपहार का मूल्य आंकलित करती है। दीपावली के

त्योहार पर मिट्टी के दीए प्रकाश फैलाने के अलावा समानता दर्शाते थे परंतु बिजली की लड़ियों और मिट्टी के दीयों ने अमीर-गरीब का अंतर स्पष्ट कर दिया है। यही हाल अन्य त्योहारों का भी है।

प्रश्न 9.हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं’ -का आशय उपभोक्तावाद की संस्कृति के आधार पर कीजिए।

उत्तर-‘हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं’ का आशय यह है कि वस्तुओं की आवश्यकता और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना वस्तुओं को खरीदकर उनका उपभोग कर लेना चाहते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम उपभोग के लिए बने हो।

प्रश्न 10.पुरुषों का झुकाव सौंदर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। उपभोक्तावाद की संस्कृति’ पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-पुरुष पहले प्रायः तेल और साबुन से काम चला लेते थे परंतु उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण उनका झुकाव सौंदर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। अब वे आफ्टर शेव और कोलोन का प्रयोग करने लगे हैं।

प्रश्न 11.संस्कृति की नियंत्रक शक्तियाँ कौन-सी हैं। आज उनकी स्थिति क्या है?

उत्तर-कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो भारतीय संस्कृति पर नियंत्रण करती हैं। ये शक्तियाँ हैं- धर्म, परंपराएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, आस्थाएँ पूजा-पाठ आदि हैं। नई जीवन शैली के कारण लोगों का इनसे विश्वास उठता जा रहा है और ये शक्तियाँ कमजोर होती जा रही हैं।

प्रश्न 12.लोग उपभोक्तावादी संस्कृति अपनाते जा रहे हैं। इसका क्या परिणाम हो रहा है?

उत्तर-नई संस्कृति के प्रभाव स्वरूप लोगों द्वारा उपभोग को ही सबकुछ मान लिया गया है। विशिष्ट जन सुख साधनों का खूब उपयोग कर रहे हैं जबकि सामान्य जन इसे ललचाई नजरों से देख रहे हैं। इस कारण सामाजिक दूरियाँ बढ़ रही हैं तथा सुख शांति नष्ट हो रही है।

प्रश्न 13.सांस्कृतिक अस्मिता का क्या मतलब है?

उत्तर-सांस्कृतिक अस्मिताका मतलब है-हमारी सांस्कृतिक पहचान अर्थात् हमारे जीने, खान-पान, रहन-सहन, सोचने-विचारने आदि के तौर-तरीके जो हमें दूसरों से अलग करते हैं तथा जिनसे हमारी विशिष्ट पहचान बनी है। उपभोक्ता-वादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक अस्मिता कमजोर होती जा रही है।

प्रश्न 14.उपभोक्तावादी संस्कृति के विभिन्न दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। आप उनका उल्लेख करते हुए इनसे बचने के उपाय बताइए।

उत्तर-उपभोक्तावादी संस्कृति उपभोग और दिखावे की संस्कृति है। लोगों ने इसे बिना सोचे-समझे अपनाया ताकि वे आधुनिक कहला सकें। इस संस्कृति का दुष्परिणाम सामाजिक अशांति में वृद्धि, समरसता में कमी, विषमता आदि रूपों में सामने आने लगा है। इस कारण सामाजिक मर्यादाएँ टूटने लगी हैं, नैतिक मानदंड कमज़ोर पड़ते जा रहे हैं और लोग स्वार्थी होते जा रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणाम से बचने के लिए-

- भारतीय संस्कृति को अपनाए रखना चाहिए।
- आधुनिक बनने के चक्कर में पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए।
- दिखावे की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।
- आवश्यकतानुसार एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखकर वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

प्रश्न 15.गांधी जी उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रति क्या विचार रखते थे? वे किस संस्कृति को श्रेयस्कर मानते थे?

उत्तर-गांधीजी भारत के लिए उपभोक्तावादी संस्कृति को अच्छा नहीं मानते थे। यह संस्कृति मानवीय गुणों का नाश

करती है, लोगों में स्वार्थवृत्ति और आत्मकेंद्रिता बढ़ाती है, जिससे लोगों में परोपकार त्याग, दया, सद्भाव समरसता जैसे गुणों का अभाव होता जा रहा है। सुख-सुविधाओं का अधिकाधिक उपयोग और दिखावा करना मानो इस संस्कृति का लक्ष्य बनकर रह गया है। सुख-शांति का इससे कोई सरोकार ही नहीं है। इससे हमारी नींव कमज़ोर हो रही है जिससे भारतीय संस्कृति के लिए खतरा एवं चुनौती उत्पन्न हो गई है। गांधी जी भारतीय संस्कृति को श्रेयस्कर मानते थे जो मनुष्यता को बढ़ावा देती है।

प्रश्न 16.उपभोक्तावादी संस्कृति का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ा है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति विशेष को गहराई तक प्रभावित किया है। व्यक्ति इसके चमक-दमक और आकर्षण से बच नहीं पाया है। व्यक्ति चाहता है कि वह अधिकाधिक सुख-साधनों का प्रयोग करे। इसी आकांक्षा में वह वस्तुओं की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना उत्पाद के वश में हो गया है। इससे उसके चरित्र में बदलाव आया है। विज्ञापनों की अधिकता से व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं को प्रयोग कर रहा है जो विज्ञापनों में बार-बार दिखाई जाती है। व्यक्ति महँगी वस्तुएँ खरीदकर अपनी हैसियत का प्रदर्शन करने लगा है।

साँवले सपनों की याद

प्रश्न 1.किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?

उत्तर-एक बार बचपन में सालिम अली की एयरगन से एक गौरैया घायल होकर गिर पड़ी। इस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया। वे गौरैया की देखभाल, सुरक्षा और खोजबीन में जुट गए। उसके बाद उनकी रुचि पूरे पक्षी-संसार की ओर मुड़ गई। वे पक्षी-प्रेमी बन गए।

प्रश्न 2.सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

उत्तर-सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सामने रेगिस्तानी हवा के गरम झोकों और उसके दुष्प्रभावों का उल्लेख किया। यदि इस हवा से केरल की साइलेंट वैली को न बचाया गया तो उसके नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। प्रकृति के प्रति ऐसा प्रेम और चिंता देख उनकी आँखें नम हो गईं।

प्रश्न 3.लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?"

उत्तर-लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा जानती थी कि लॉरेंस को गौरैया से बहुत प्रेम था। वे अपना काफी समय गौरैया के साथ बिताते थे। गौरैया भी उनके साथ अंतरंग साथी जैसा व्यवहार करती थी। उनके इसी पक्षी-प्रेम को उद्घाटित करने के लिए उन्होंने यह वाक्य कहा।

प्रश्न 4.आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) वो लॉरेंस की तरह, नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

(ख) कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

(ग) सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर-(क) लॉरेंस बनावट से दूर रहकर प्राकृतिक जीवन जीते थे। वे प्रकृति से प्रेम करते हुए उसकी रक्षा के लिए चिंतित रहते थे। इसी तरह सालिम अली ने भी प्रकृति की सुरक्षा, देखभाल के लिए प्रयास करते हुए सीधा एवं सरल जीवन जीते थे।

(ख) मृत्यु ऐसा सत्य है जिसके प्रभाव स्वरूप मनुष्य सांसारिकता से दूर होकर चिर निद्रा और विश्राम प्राप्त कर लेता है। उसका हँसना-गाना, चलना-फिरना सब बंद हो जाता है। मौत की गोद में विश्राम कर रहे सालिम अली की भी यही स्थिति थी। अब उन्हें किसी तरह से पहले जैसी अवस्था में नहीं लाया जा सकता था।
(ग) टापू समुद्र में उभरा हुआ छोटा भू-भाग होता है जबकि सागर अत्यंत विशाल और विस्तृत होता है। सालिम अली भी प्रकृति और पक्षियों के बारे में थोड़ी-सी जानकारी से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वे इनके बारे में असीमित ज्ञान प्राप्त करके अथाह सागर-सा बन जाना चाहते थे।

प्रश्न 5.इस पाठ में लेखक ने सालिम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-लेखक ने सालिम अली के विषय में बताया है कि वे एक प्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी होने के साथ-साथ प्रकृति-प्रेमी थे। एक बार बचपन में उनकी एअरगन से नीले कंठवाली गौरैया घायल होकर गिर पड़ी थी। उसकी हिफाजत और उससे संबंधित जानकारी पाने के लिए उन्होंने जो प्रयास किया,उससे पक्षियों के बारे में उठी जिज्ञासा ने उन्हें पक्षी-प्रेमी बना दिया। वे दूर-दराज घूम-घूमकर पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्र रहे हैं और उनकी सुरक्षा के लिए चिंतित रहे। उन्होंने केरल की साइलेंट वैली को रेगिस्तानी हवा के झोकों से बचाने के लिए प्रयास किया और तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से भी मिले। वे प्रकृति की दुनिया के अथाह सागर बन गए थे।

प्रश्न 6.'साँवले सपनों की याद' शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-'साँवले सपनों की याद' एक रहस्यात्मक शीर्षक है। इसे पढ़कर पाठक जिज्ञासा से आतुर हो जाता है।साँवले सपनेमनमोहक इच्छाओं के प्रतीक हैं। ये सपने प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सालिम अली से संबंधित हैं। सालिम अली जीवन-भर सुनहरे पक्षियों की दुनिया में खोए रहे। वे उनकी सुरक्षा और खोज के सपनों में खोए रहे। ये सपने हर किसी को नहीं आते। हर कोई पक्षी-प्रेम में इतना नहीं डूब सकता। इसलिए आज जब सालिम अली नहीं रहे तो लेखक को उन साँवले सपनों की याद आती है जो सालिम अली की आँखों में बसते थे। यह शीर्षक सार्थक तो है किंतु गहरा रहस्यात्मक है। चंदन की तरह घिस-घिसकर इसके अर्थ तथा प्रभाव तक पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न 7.साँवले सपनों का हुजूम कहाँ जा रहा है? उसे रोकना संभव क्यों नहीं है?

उत्तर-साँवले सपनों का हुजूम मौत की खामोश वादी की ओर जा रहा है। इसे रोकना इसलिए संभव नहीं है क्योंकि इस वादी ' में जाने वाले वे होते हैं जो मौत की गोद में चिर विश्राम कर रहे होते हैं। ये अपना जीवन जी चुके होते हैं।

प्रश्न 8. 'मौत की खामोश वादी'किसे कहा गया है? इसे घाटी की ओर किसे ले जाया जा रहा है?

उत्तर-'मौत की खामोश वादी' कब्रिस्तान को कहा गया है। इस घाटी की ओर प्रसिद्ध पक्षी प्रेमी सालिम अली को ले जाया जा रहा हैजो लगभग सौ वर्ष की उम्र में कैंसर नामक बीमारी का शिकार हो गए और मृत्यु की गोद में सो गए।

प्रश्न 9.सालिम अली के इस सफ़र को अंतहीन क्यों कहा गया है?

उत्तर-सालिम अली के इस सफ़र को इसलिए अंतहीन कहा गया है क्योंकि इससे पहले वाले सफ़रों में सालिम अली जब पक्षियों की खोज में निकलते थे तो वे पक्षियों को देखते ही उनसे जुड़ी दुर्लभ जानकारियाँ लेकर लौट आते थे परंतु इस सफ़र का कोई अंत न होने से सालिम अली लौट न सकेंगे।

प्रश्न 10.मृत्यु की गोद में सोए सालिम अली की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर-मृत्यु की गोद में सोए सालिम अली की तुलना उस वन-पक्षी से की गई है जो जिंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि सालिम अली भी अपनी जिंदगी के सौ वर्ष जीकर मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं। अब वे पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्र करने नहीं जा सकेंगे।

प्रश्न 11.सालिम अली की दृष्टि में मनुष्य क्या भूल करते हैं? उन्होंने इसे भूल क्यों कहा?

उत्तर-सालिम अली की दृष्टि में मनुष्य यह भूल करते हैं कि लोग पक्षियों जंगलों-पहाड़ों, झरने-आवशारों आदि को आदमी की निगाह से देखते हैं। उन्होंने इसे भूल इसलिए कहा क्योंकि मनुष्य पक्षियों, नदी-झरनों आदि को इस दृष्टि से देखता है कि इससे उसका कितना स्वार्थ पूरा हो सकता है।

प्रश्न 12..वृंदावन में यमुना का साँवला पानी किन-किन घटनाओं की याद दिलाता है?

उत्तर-वृंदावन में यमुना का साँवला पानी कृष्ण से जुड़ी विभिन्न घटनाओं की याद दिलाता है, जैसे-

- कृष्ण द्वारा वृंदावन में रासलीला रचाना। चंचल गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाना।
- माखन भरे बर्तन फोड़ना और दूध-छाली खाना।
- वाटिका में घने पेड़ों की छाँव में बंशी बजाना और ब्रज की गलियों को संगीतमय कर देना जिसे सुनते ही लोगों के कदम ठहर जाना।

प्रश्न 13.'बर्डवाचर' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर-'बर्डवाचर' प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सालिम अली को कहा गया है क्योंकि सालिम अली जीवनभर पक्षियों की खोज करते रहे। और उनकी सुरक्षा के लिए पूरी तरह समर्पित रहे। वे अपने सुख-दुख की चिंता किए बिना आँखों पर दूरबीन लगाए पक्षियों से जुड़ी जानकारी एकत्र करते रहे।

प्रश्न 14.सालिम अली पक्षी-प्रेमी होने के साथ-साथ प्रकृति प्रेमी भी थे। साँवले सपनों की याद पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-सालिम अली पक्षियों से जितना लगाव रखते हुए उनकी सुरक्षा के लिए चिंतित रहते थे उतना ही वे प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी चिंतित रहते थे। वे केरल की साइलेंट वैली को बचाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से मिले और वैली को बचाने का अनुरोध किया।

प्रश्न 15.तहमीना कौन थीं? उन्होंने सालिम अली की किस तरह मदद की?

उत्तर-तहमीना सालिम अली की सहपाठिनी थी जो बाद में उनकी जीवनसंगिनी बनी। उन्होंने सालिम अली के पक्षी-प्रेम के मार्ग में कोई बाधा नहीं खड़ी की। उन्होंने सालिम अली का साथ दिया और प्रकृति से जुड़ने में उनकी मदद की।

प्रश्न 16. फ्रीडा कौन थी? उसने लॉरेंस के बारे में क्या-क्या बताया?

उत्तर-फ्रीडा डी.एच.लॉरेंस की पत्नी थीं। लॉरेंस के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया था कि मेरे लिए लॉरेंस के बारे में कुछ कह पाना असंभव-सा है। मुझे लगता है कि मेरे छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। वह मुझसे भी ज्यादा जानती है। वह सचमुच ही इतना खुला-खुला और सादा दिल आदमी थे। संभव है कि लॉरेंस मेरी रगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो।

प्रश्न 17. 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर सालिम अली के व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-सालिम अली दुबली-पतली काया वाले व्यक्ति थे, जिनकी आयु लगभग एक सौ वर्ष होने को थी। पक्षियों की खोज में की गई लंबी-लंबी यात्राओं की थकान से उनका शरीर कमजोर हो गया था। वे अपनी आँखों पर प्रायः दूरबीन चढ़ाए रखते थे। पक्षियों की खोज के लिए वे दूर-दूर तक तथा दुर्गम स्थानों की यात्राएँ करते थे। उनकी एअर गन से घायल होकर गिरी नीले कंठवाली गौरैया ने उनके जीवन की दिशा बदले दी। वे पक्षी प्रेमी होने के अलावा प्रकृति प्रेमी भी थे। वे प्रकृतिमय जीवन जीते थे और उसकी सुरक्षा के लिए प्रयासरत रहते थे। वे नदी पहाड़-झरनों आदि को प्रकृति की दृष्टि से देखते थे।

प्रेमचंद के फटे जूते

प्रश्न 1.हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उसकी विशेषताएँ बताइए?

उत्तर-'प्रेमचंद के फटे जूते' नामक व्यंग्य को पढ़ने सेउनके व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं-

संघर्षशील लेखक-प्रेमचंद आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने मार्ग में आने वाली चट्टानों को ठोकरें मारीं। अगल-बगल के रास्ते नहीं खोजे और न ही समझौते किए। लेखक के शब्दों में"तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया।"

अपराजेय व्यक्तित्व-प्रेमचंद का व्यक्तित्व अपराजेय था। उन्होंने कष्ट सहकर भी कभी हार नहीं मानी। यदि वे मन-चाहा परिवर्तन नहीं कर पाए, तो कम-से-कम कमजोरियों पर हँसे तो सही। उन्होंने निराश-हताश जीने की बजाय सदैव मुसकान बनाए रखी। उनकी नज़रों में तीखा व्यंग्य और आत्मविश्वास था। लेखक के शब्दों में–"यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है।"

कष्टग्रस्त जीवन-प्रेमचंद जीवन-भर आर्थिक संकट झेलते रहे। उन्होंने गरीबी को सहर्ष स्वीकार किया। वे बहुत सीधे-सादे वस्त्र पहनते थे। उनके पास पहनने को ठीक-से जूते भी नहीं थे। फिर भी वे हीनता से पीड़ित नहीं थे। **सहजता-**प्रेमचंद अंदर-बाहर से एक थे। लेखक के शब्दों में-"इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी, इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है।"उन्होंने फोटो खिंचवाने में भी अपनी सहजता बनाए रखी।

मर्यादित जीवन-प्रेमचंद ने जीवन-भर मानवीय मर्यादाओं को निभाया। उन्होंने अपने नेम-धरम को, अर्थात् लेखकीय गरिमा को बनाए रखा। वे व्यक्ति के रूप में तथा लेखक के रूप में श्रेष्ठ आचरण करते रहे।

प्रश्न 2.नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

(ख) तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुरबान हो रहे हैं।

(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो।

उत्तर-**(क)** जीवन में यह विडंबना है कि जिसका स्थान पाँव में हैं, अर्थात् नीचे है, उसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। जिसका स्थान ऊँचा है, जो सिर पर बिठाने योग्य है, उसे कम सम्मान मिलता रहा है। आजकल तो जूतों का अर्थात् धनवानों का मान-सम्मान और भी अधिक बढ़ गया है। एक धनवान पर पच्चीसों गुणी लोग न्योछावर होते हैं। गुणी लोग भी धनवानों की जी-हुजूरी करते नजर आते हैं।

(ख) प्रेमचंद ने कभी पर्दे को अर्थात लुकाव-छिपाव को महत्व नहीं दिया। उन्होंने वास्तविकता को कभी भी ढकने का प्रयत्न नहीं किया। वे इसी में संतुष्ट थे कि उनके पास छिपाने-योग्य कुछ नहीं था। वे अंदर-बाहर से एक थे। यहाँ तक कि उनका पहनावा भी अलग-अलग न था।लेखक अपनी तथा अपने युग की मनोभावना पर व्यंग्य करता है कि हम पर्दा रखने को बड़ा गुण मानते हैं। जो व्यक्ति अपने कष्टों को छिपाकर समाज के सामने सुखी होने का ढोंग करता है, हम उसी को महान मानते हैं। जो अपने दोषों को छिपाकर स्वयं को महान सिद्ध करता है, हम उसी को श्रेष्ठ मानते हैं।

(ग) लेखक कहता है-प्रेमचंद ने समाज में जिसे भी घृणा-योग्य समझा, उसकी ओर हाथ की अँगुली से नहीं, बल्कि अपने पाँव की अँगुली से इशारा किया। अर्थात् उसे अपनी ठोकरों पर रखा, अपने जूते की नोक पर रखा, उसके विरुद्ध संघर्ष किए रखा।

प्रश्न 3.आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें अधिक आकर्षित करती हैं?

उत्तर-मुझे इस व्यंग्य की सबसे आकर्षक बात लगती है-विस्तारण शैली। लेखक एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ की ओर बढ़ता चला जाता है। वह बूंद में समुद्र खोजने का प्रयत्न करता है। जैसे बीज में से क्रमशः अंकुर का, फिर पल्लव का, फिर पौधे और तने का; तथा अंत में फूल-फल का विकास होता चला जाता है, उसी प्रकार इस निबंध में प्रेमचंद के फटे जूते से बात शुरू होती है। वह बात खुलते-खुलते प्रेमचंद के पूरे व्यक्तित्व को उद्घाटित कर देती है। बात से बात निकालने की यह व्यंग्य शैली बहुत आकर्षक बन पड़ी है।

प्रश्न 4.पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भो को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर-टीला शब्द 'राह' आनेवाली बाधा का प्रतीक है। जिस तरह चलते-चलते रास्ते में टीला आ जाने पर व्यक्ति को उसे पार करने के लिए विशेष परिश्रम करते हुए सावधानी से आगे बढ़ना पड़ता है उसी प्रकार सामाजिक विषमता, छुआछूत, गरीबी, निरक्षरता अंधविश्वास आदि भी मनुष्य की उन्नति में बाधक बनती है। इन्हीं बुराइयों के संदर्भ में 'टीले' शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5.आपकी दृष्टि में वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर-वेशभूषा के प्रति लोगों की सोच में बहुत बदलाव आया है। लोग वेशभूषा को सामाजिक प्रतिष्ठा का सूचक मानने लगे हैं। लोग उस व्यक्ति को ज्यादा मान-सम्मान और आदर देने लगे हैं जिसकी वेशभूषा अच्छी होती है। वेशभूषा से ही व्यक्ति का दूसरों पर पहला पड़ता है। हमारे विचारों का प्रभाव तो बाद में पड़ता है। आज किसी अच्छी-सी पार्टी में कोई धोतीकुरता पहनकर जाए तो उसे पिछड़ा समझा जाता है। इसी प्रकार कार्यालयों के कर्मचारी गण हमारी वेशभूषा के अनुरूप व्यवहार करते हैं। यही कारण है कि लोगों विशेषकर युवाओं में आधुनिक बनने की होड़ लगी है।

प्रश्न 6.लेखक की दृष्टि प्रेमचंद के जूते पर क्यों अटक गई?

उत्तर-लेखक ने देखा कि प्रेमचंद ने जिस जूते को पहनकर फ़ोटो खिंचाया है, उसमें बड़ा-सा छेद हो गया है। इसमें से प्रेमचंद की अँगुली बाहर निकल आई है। प्रेमचंद ने इस फटे जूते को ढंकने का प्रयास भी नहीं किया।

प्रश्न 7.फ़ोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी? पंक्ति के आधार पर प्रेमचंद की वेश-भूषा के बारे में लिखिए।

उत्तर-प्रेमचंद ने मोटे कपड़े का कुरता-धोती पहन रखा था। उनके सिर पर वैसी ही टोपी थी। उनके फटे जूते से अँगुली दिख रही थी। ऐसी ही अत्यंत साधारण वेश-भूषा में उन्होंने फ़ोटो खिंचा रखा था।

प्रश्न 8.प्रेमचंद ने अपने फटे जूते को ढंकने का प्रयास क्यों नहीं किया होगा?

उत्तर-प्रेमचंद दिखावा एवं आडंबर से दूर रहने वाले व्यक्ति थे। उन्हें सादगीपूर्ण जीवन पसंद था। वे जैसा वास्तव में थे, वैसा ही दिखना चाहते थे, इसलिए प्रेमचंद ने अपने फटे जूते को छिपाने का प्रयास नहीं किया गया।

प्रश्न 9.प्रेमचंद के चेहरे पर कैसी मुसकान थी और क्यों?

उत्तर-प्रेमचंद के चेहरे पर अधूरी मुसकान थी। इसका कारण यह था कि प्रेमचंद महान साहित्यकार होकर भी अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे थे। अभावों से उनकी मुसकान खो सी गई थी। फ़ोटोग्राफ़र के कहने पर भी वे ठीक से जल्दी से मुसकरा न पाए और मुसकान अधूरी रह गई।

प्रश्न 10.'जूता हमेशा कीमती रहा है'-ऐसा कहकर लेखक ने समाज की किस विसंगति पर प्रकाश डाला है ?

उत्तर-जूता 'धन और बल' का प्रतीक है। जूता समाज में सदा से ही आदर पाता आया है। अर्थात् गुणवान व्यक्तियों को भी धनवानों के सामने कमतर आंका गया है। धनवानों ने ज्ञानी व्यक्तियों को भी झुकने पर विवश किया है। आज के समाज की यह बहुत बड़ी विसंगति है।

प्रश्न 11.प्रेमचंद का जूता फटने के प्रति लेखक ने क्या-क्या आशंका प्रकट की है?

उत्तर-प्रेमचंद का जूता फटने के प्रति लेखक ने दो आशंकाएँ प्रकट की हैं-

- बनिए के तगादे से बचने के लिए मील-दो मील का चक्कर प्रतिदिन लगाकर घर पहुँचना।
- सदियों से परत दर परत जमी किसी चीज़ पर ठोकर मार-मारकर जूता फाड़ लेना।

प्रश्न 12.लेखक द्वारा कुंभनदास का उदाहरण किस संदर्भ में दिया गया है?

उत्तर-लेखक का मानना है कि चक्कर लगाने से जूता फटता नहीं, घिस जाता है। इसकी पुष्टि के लिए ही उन्होंने कुंभ दास का उदाहरण दिया है। कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी आते-जाते घिस गया था।

प्रश्न 13.'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की वेशभूषा एवं उनकी स्वाभाविक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ से पता चलता है कि उच्च कोटि को साहित्यकार होने के बाद भी प्रेमचंद साधारण-सा जीवन ": "बिता रहे थे। वे मोटे कपड़े का कुरता-धोती और टोपी पहनते थे। उनके जूतों के बंद बेतरतीब बँधे रहते थे।

इसके बाद भी प्रेमचंद को दिखावा एवं आडंबर से परहेज था। वे जिस हाल में थे, उसी में खुश थे और उसी रूप में दिखने में उन्हें कोई शर्म नहीं आती थी। वे अपनी कमियों और कमजोरियों को छिपाना नहीं जानते थे।

प्रश्न 14.लेखक ने प्रेमचंद को जनता के लेखक' कहकर उनकी किस विशेषता को बताना चाहा है?

उत्तर-प्रेमचंद अपने युग के महान कथाकार और उपन्यासकार थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से उन्होंने खुद गरीबीएवं दुख को अत्यंत निकट से देखा था। इसके अलावा प्रेमचंद पराधीन भारत में भारतीय किसानों और मजदूरों के प्रति अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार को देखा था। वे समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों और धार्मिक बुराइयों में फंसे लोगों को देख रहे थे। इन्हीं बातों को उन्होंने अपनी कृतियों का विषय बनाया है। 'पूस की रात' में हलकू का चित्रण'गोदान' .. में होरी की दुर्दशा, 'मंत्र' में डाक्टर चट्ढा की खेलप्रियता से सुजानभगत के बेटे की मृत्यु आदि का सजीव चित्रण करके जन सामान्य के दुख को मुखरित किया है। इस तरह लेखक ने 'जनता का लेखक' कहकर जनसाधारण के प्रति उनके लगाव को बताना चाहा है।

मेरे बचपन के दिन

प्रश्न 1.मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-

(क) उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?

(ख) लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर-**(क)** उस समय, अर्थात् सन् 1900 के आसपास भारत में लड़कियों की दशा अच्छी नहीं थी। प्रायः उन्हें जन्म देते ही मार दिया जाता था। उन्हें बोझ समझा जाता था। यदि उनका जन्म हो जाता था तो पूरे घर में मातम छा जाता था। महादेवी वर्मा अपने एक संस्मरण में लिखती हैं-'बैंड वाले, नौकर-चाकर सब लड़का होने की प्रतीक्षा में खुश बैठे रहते थे। जैसे ही लड़की होने का समाचार मिलता, सब चुपचाप विदा हो जाते।

ऐसे वातावरण में लड़कियों को कम भोजन देना, उन्हें घर के कामों में लगाना, पढ़ाई-लिखाई से दूर रखना आदि बुराइयों का पनपना स्वाभाविक था।।

(ख) आज लड़कियों के जन्म के संबंध में स्थितियाँ थोड़ी बदली हैं। पढ़े-लिखे लोग लड़का-लड़की के अंतर को धीरे-धीरे कम करते जा रहे हैं। बहुत-से जागरूक लोग लड़कियों का भी उसी तरह स्वागत सत्कार करते हैं, जैसे लड़के का। शहरों में लड़कियों को लड़कों की तरह पढ़ाया-लिखाया भी जाता है। परंतु लड़कियों के साथ भेदभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। आज जितनी भी भ्रूण-हत्याएँ हो रही हैं, लड़कियों के जन्म को रोकने के लिए हो रही हैं। देश में लड़के और लड़कियों का अनुपात बिगड़ता जा रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि महानगरों में सबसे कम लड़कियाँ चंडीगढ़ में हैं, जो देश का एक उन्नत शहर माना जाता है। वहाँ न शिक्षा कम है, न धन-वैभव। वास्तव में लड़कियों के जन्म को रोकना वहाँ के निवासियों की मानसिकता पर निर्भर करता है।

प्रश्न 2.लेख़िका उर्दू-फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाईं?

उत्तर-लेखिका उर्दू-फ़ारसी इसलिए नहीं सीख पाई क्योंकि लेखिका की रुचि उर्दू-फ़ारसी में नहीं थी। उसे लगता था कि वह उर्दू-फ़ारसी नहीं सीख सकती है। उसे उर्दू-फ़ारसी पढ़ाने के लिए जब मौलवी साहब आते थे तब वह चारपाई के नीचे छिप जाती थी। मौलवी साहब ने पढ़ाने आना बंद कर दिया और वह उर्दू-फ़ारसी नहीं सीख पाई।

प्रश्न 3.लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर-लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन के शौक का वर्णन किया है। वे हिंदी तथा संस्कृत जानती

थीं। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा। महादेवी की माता धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। सवेरे 'कृपानिधान पंछी बन बोले' पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं।

प्रश्न 4.जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?

उत्तर-जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्ने जैसा इसलिए कहा है क्योंकि जवारा के नवाब और लेखिका का परिवार अलग-अलग धर्म-के होकर भी आत्मीय संबंध रखते थे। उनमें भाषा और जाति की दीवार बाधक न थी। दोनों परिवार एक-दूसरे के परिवारों को मिल-जुलकर मनाते थे। वे एक-दूसरे को यथोचित संबंधों की डोर से बाँधे हुए थे। वे चाची, ताई, देवर, दुलहन जैसे आत्मीयता भरे रिश्तों से जुड़े थे। ऐसा वर्तमान में दुर्लभ हो गया है।

प्रश्न 5.जेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थीं। जेबुन्निसा के स्थान पर यदि आप होतीं होते तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?

उत्तर-जेबुन्निसा के स्थान पर अगर मैं महादेवी के लिए कुछ काम करती तो मैं संबंधों के आधार पर उनसे अपेक्षा करती। अगर मैं नौकरानी के रूप में उनकी सहायता करती, तो उनसे मजदूरी के साथ-साथ प्रेम और आदर की भी अपेक्षा करती। अगर सखी के रूप में उनकी सहायता करती तो बस उनसे प्रेम और स्नेह चाहती। यदि उनकी प्रशंसिका या कनिष्ठ साथिन के रूप में सहायता करती तो कभी-कभी उनसे कविता भी सुन लेती और पढ़ाई में सहायता लेलेती।

प्रश्न 6.महादेवी वर्मा को काव्य प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का कोई पुरस्कार मिला हो और वह देशहित में या किसी आपदा निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/करेंगी?

उत्तर- मुझे चाँदी के कटोरे जैसा कीमती पुरस्कार मिला हो और देशहित की बात आए तो मैं ऐसे पुरस्कार को खुशी-खुशी देता क्योंकि देश के हित से बड़ा कुछ नहीं। देश के हित में ही देशवासियों का हित निहित होता है। ऐसा करके मुझे दूनी खुशी प्राप्त होती और मैं गौरवान्वित महसूस करती।

प्रश्न 7.कल्पना के आधार पर बताइए कि लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा होगा?

उत्तर-लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का स्वरूप विकृत होगा। उससे सामाजिक संतुलन बिगड़ जाएगा। लड़कों के लिए बहुओं की समस्या बढ़ जाएगी। ऐसी स्थिति में महिलाओं की खरीद-फरोख्त की घटनाएँ बढ़ जाएँगी। समाज में अनैतिकता, दुराचार, बलात्कार, अपहरण जैसी घटनाएँ बढ़ जाएंगी। समाज में एक अव्यवस्था का वातावरण होगा जिसमें अशांति होगी। लड़कियों की संख्या यदि और कम हो गई तो एक दिन समाज में ऐसा समय आएगा जब हर लड़की को द्रौपदी बनने पर विवश होना पड़ेगी।

प्रश्न 8.महादेवी को अपने बचपन में वह सब नहीं सहना पड़ा ज अन्य लड़कियों को सहना पड़ता था। ऐसा क्यों?

उत्तर-महादेवी के परिवार में दो सौ वर्षों तक कोई लड़की पैदा ही नहीं हुई थी। उसके पहले लोग. लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। लेखिका महादेवी के बाबा ने कुल-देवी दुर्गा की पूजा की तब महादेवी का जन्म हुआ। इतनी मन्नते माँगने के बाद जन्म होने के कारण महादेवी को वह सब नहीं सहना पड़ा।

प्रश्न 9.महादेवी के बाबा की सोच समाज के अन्य पुरुषों से किस तरह अलग थी?

उत्तर-महादेवी के बाबा की सोच समाज के अन्य पुरुषों से बिल्कुल अलग थी। अन्य लोग जहाँ कन्या के पैदा होते ही उसे मार देते थे वहीं महादेवी के बाबा ने उसके पालन-पोषण पर ध्यान दिया और पढ़ा-लिखाकर विदुषी बनाना चाहा।

प्रश्न 10.महादेवी के परिवार में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती थीं? महादेवी पर किस भाषा का असर हुआ?

उत्तर-महादेवी के परिवार में उसके बाबा फ़ारसी और उर्दू के ज्ञाता थे जबकि उसके पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का वातावरण तो तब बना जब उसकी माँ जबलपुर से आई। वे हिंदी-संस्कृत की जानकारी थी। उनके सान्निध्य के कारण महादेवी पर हिंदी का असर हुआ और वे पंचतंत्र सीखने लगी।

प्रश्न 11.महादेवी की शिक्षा-दीक्षा में उनकी माता का क्या योगदान रहा?

उत्तर-महादेवी की शिक्षा-दीक्षा में उनकी माता का विशेष योगदान रहा। वे हिंदी भाषी घर से आई थीं। उन्होंने महादेवी को 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया। वे धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। उनके साथ बैठते-बैठते महादेवी ने संस्कृत सुनाना समझना शुरू कर दिया। इस तरह उनकी पढ़ाई की शुरुआत माँ ने ही कराई।

प्रश्न 12.क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण पढ़ाई के लिए आदर्श था। पठित पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण बहुत अच्छा था। वहाँ विभिन्न स्थानों से लड़कियाँ पढ़ने आती थी। उनमें कुछ हिंदू भी तो कुछ ईसाई यहाँ धर्म या क्षेत्र के स्थान पर कोई भेदभाव नहीं था। सब एक ही मेस में खाती थीं, जिसमें प्याज तक नहीं प्रयोग की जाती थी। इस तरह वहाँ का वातावरण पढ़ाई के लिए आदर्श था।

प्रश्न 13.महादेवी की रुचि लेखन में उत्पन्न करने में उनकी माँ का योगदान था, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-महादेवी की माँ हिंदी-संस्कृत की जानकार थी। वे पूजा-पाठ करने वाली धार्मिक विचारों की महिला थी। महादेवी उनके साथ पूजा पर बैठती और ध्यान से सुनती। उनकी माँ मीरा के पद गाती थी। इसे सुन-सुनकर महादेवी ने भी ब्रजभाषा में लिखना शुरू कर दिया। इस तरह उनकी माँ का विशेष योगदान था।

प्रश्न 14.सुभद्रा कुमारी ने महादेवी की काव्य प्रतिभा को निखारने में कैसे मदद की?

उत्तर-सुभद्रा कुमारी और महादेवी वर्मा छात्रावास के एक ही कमरे में रहती थीं। सुभद्रा उनसे दो साल बड़ी थी जो कविता लेखन में प्रसिद्ध थी। महादेवी जो अब तक ब्रजभाषा में लिखती थी, सुभद्रा कुमारी को देखकर खड़ी बोली में लिखने लगी। दोनों एक साथ कविताएँ रचतीं, इससे महादेवी की काव्य प्रतिभा निखरती गई।

प्रश्न 15.जेबुन्निसा कौन थी? वह महादेवी की मदद कैसे करती थी?

उत्तर-जेबुन्निसा कोल्हापुर से आई मराठी लड़की थी जो महादेवी के कमरे में रहने आई क्योंकि सुभद्रा छात्रावास से जा चुकी थीं। जेबुन महादेवी की डेस्क साफ़ कर देती, उनकी पुस्तकें ढंग से रख देती थी। इससे महादेवी को कविता लेखन के लिए कुछ और समय मिल जाता था। इस तरह वह महादेवी की मदद करती थी।

प्रश्न 16.महादेवी और सुभद्रा कुमारी की मुलाकात और मित्रता का वर्णने अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-जब महादेवी का दाखिला क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में करवाया गया तो वहाँ हॉस्टल में जो कमरा मिला, उसमें सुभद्रा कुमारी पहले से ही रह रही थीं। वे महादेवी से दो साल सीनियर थी जो कविता लिखा करती थीं। महादेवी को भी बचपन से लिखने का शौक था पर वह छिप-छिपाकर लिखती थी। उसने सुभद्रा के पूछने पर लिखने से तो मना कर दिया पर सुभद्रा द्वारा तलाशी लेने पर बहुत कुछ निकल आया। यह देखकर सुभद्रा ने महादेवी के बारे में सबको छात्रावास में बता दिया। इसके बाद दोनों में मित्रता हो गई।

प्रश्न 17.महादेवी को काव्य रचना में प्रसिद्धि दिलाने में काव्य-सम्मेलनों ने किस तरह बढ़ावा दिया? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में पढ़ते हुए महादेवी और सुभद्रा कुमारी कविताएँ लिखा करती थीं। उस समय कवि सम्मेलन हुआ करते थे। इन कवि सम्मेलनों में इन्हें लेकर क्रास्थवेट से मैडम जाया करती थी। जहाँ महादेवी कविताएँ सुनाती। इनके अध्यक्ष अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध', श्रीधर पाठक और रत्नाकर जैसे प्रसिद्ध कवि हुआ करते थे।

इनमें कविता सुनाने पर लेखिका महादेवी को पुरस्कृत किया जाता था। ये पुरस्कार उनके लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुए और उनकी प्रसिद्ध बढ़ती गई।

प्रश्न 18.जवारा के नवाब की बेगम ने सांप्रदायिक सौहार्द फैलाने की दिशा में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया, कैसे?

उत्तर-जवारा के नवाब की बेगम उसी कंपाउंड के एक बँगले में रहती थी जिसमें लेखिका का परिवार रहता था। वे हिंदू-मुसलमानका भेद माने बिना बच्चों से स्वयं को ताई कहने के लिए कहती। उनके बच्चे लेखिका की माँ को 'चची जान' कहते थे। वे अपने इकलौते लडके के हाथ पर रक्षाबंधन को राखी बँधवातीं और लेखिक को 'लरिया' या कुछ उपहारदेती। इसी तरह वे हिंदू त्योहारों को भी उतनी ही खुशी से मिल-जुलकर मनाती,जितना कि ईद या मुहर्रम को। उनका व्यवहार सांप्रदायिकता के मुँह पर तमाचा था। इस तरह उन्होंने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

पद्य भाग

साखियाँ एवं सबद

प्रश्न 1.'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर-मानसरोवर के दो अर्थ हैं-

- एक पवित्र सरोवर जिसमें हंस विहार करते हैं।
- पवित्र मन या मानस।

प्रश्न 2.कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर-कवि ने सच्चे प्रेमी की यह कसौटी बताई है कि उसका मन विकारों से दूर तथा पवित्र होता है। इस पवित्रता का असर मिलने वाले पर पड़ता है। ऐसे प्रेमी से मिलने पर मन की पवित्रता और सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न 3.तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर-इस दोहे में अनुभव से प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न 4.इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उत्तर-इस संसार में सच्चा संत वही है जो जाति-धर्म, संप्रदाय आदि के भेदभाव से दूर रहता है, तर्क-वितर्क, वैर-विरोध और राम-रहीम के चक्कर में पड़े बिना प्रभु की सच्ची भक्ति करता है। ऐसा व्यक्ति ही सच्चा संत होता है।

प्रश्न 5.अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर-अंतिम दो दोहों में कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है-

1. अपने-अपने मत को श्रेष्ठ मानने की संकीर्णता और दूसरे के धर्म की निंदा करने की संकीर्णता।
2. ऊँचे कुल के अहंकार में जीने की संकीर्णता।

प्रश्न 6.किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर-किसी व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती है, कुल से नहीं। कोई व्यक्ति यदि ऊँचे कुल में जन्म लेकर बुरे कर्म करता है तो वह निंदनीय होता है। इसके विपरीत यदि साधारण परिवार में जन्म लेकर कोई व्यक्ति यदि अच्छे कर्म करता है तो समाज में आदरणीय बन जाता है सूर, कबीर, तुलसी और अनेकानेक ऋषि-मुनि साधारण से परिवार में जन्मे पर अपने अच्छे कर्मों से आदरणीय बन गए। इसके विपरीत कंस, दुर्योधन, रावण आदि बुरे कर्मों के कारण निंदनीय हो गए।

प्रश्न 7.काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भैंकन दे झख मारि।

उत्तर-इसमें कवि ने एक सशक्त चित्र उपस्थित किया है। सहज साधक मस्ती से हाथी पर चढ़े हुए जा रहे हैं। और संसार-भर के कुत्ते भौंक-भौंककर शांत हो रहे हैं परंतु वे हाथी का कुछ बिगाड़ नहीं पा रहे। यह चित्र निंदकों पर व्यंग्य है और साधकों के लिए प्रेरणा है।

सांगरूपक अलंकार का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया हैज्ञान रूपी हाथी, सहज साधना रूपी दुलीचा, निंदक संसार रूपी श्वान,निंदा रूपी भौंकना।'झख मारि' मुहावरे का सुंदर प्रयोग।'स्वान रूप संसार है' एक सशक्त उपमा है।

प्रश्न 8.मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

उत्तर-मनुष्य अपने धर्म-संप्रदाय और सोच-विचार के अनुसार ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश जैसे पूजा स्थलों और धार्मिक स्थानों पर खोजता है। ईश्वर को पाने के लिए कुछ लोग योग साधना करते हैं तो कुछ सांसारिकता से दूर होकर संन्यासी-बैरागी बन जाते हैं और इन क्रियाओं के माध्यम से ईश्वर को पाने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 9.कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर-कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। उनके अनुसार ईश्वर ने मंदिर में है, न मसजिद में; न काबा में है, न कैलाश आदि तीर्थ यात्रा में; वह न कर्मकांड करने में मिलता है, न योग साधना से, न वैरागी बनने से। ये सब ऊपरी दिखावे हैं, ढोंग हैं। इनमें मन लगाना व्यर्थ है।

प्रश्न 10.कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में क्यों कहा है?

उत्तर-कबीर का मानना था कि ईश्वर घट-घट में समाया है। वह प्राणी की हर साँस में समाया हुआ है। उसका वास प्राणी के मन में ही है।

प्रश्न 11.कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर-कबीर के अनुसार, जब प्रभु ज्ञान का आवेश होता है तो उसका प्रभाव चमत्कारी होता है। उससे पूरी जीवन शैली बदल जाती है। सांसारिक बंधन पूरी तरह कट जाते हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे नहीं होता, बल्कि एकाएक और पूरे वेग से होता है। इसलिए उसकी तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से की गई है।

प्रश्न 12.ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- ज्ञान की आँधी आने से भक्त के जीवन पर अनेक प्रभाव पड़ते हैं-

- भक्त के मन पर छाया अज्ञानता का भ्रम दूर हो जाता है।
- भक्त के मन का कूड़ा-करकट (लोभ-लालच आदि) निकल जाता है।
- मन में प्रभु भक्ति का भाव जगता है।
- भक्त का जीवन भक्ति के आनंद में डूब जाता है।

प्रश्न 13.हंस किसके प्रतीक हैं? वे मानसरोवर छोड़कर अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहते हैं?

उत्तर-हंस जीवात्मा के प्रतीक हैं। वे मानसरोवर अर्थात् मेन रूपी सरोवर को छोड़कर अन्यत्र इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उसे प्रभु भक्ति का आनंद रूपी मोती चुगने को मिल रहे हैं। ऐसा आनंद उसे अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रश्न 14.कबीर ने 'जीवित' किसे कहा है?

उत्तर-कबीर ने उस व्यक्ति को जीवित कहा है जो राम और रहीम के चक्कर में नहीं पड़ता है। इनके चक्कर में पड़े

व्यक्ति राम-राम या खुदा-खुदा करते रह जाते हैं पर उनके हाथ कुछ नहीं लगता है। इन दोनों से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करने वालों को ही कबीर ने 'जीवित' कहा है।

प्रश्न 15.कबीर 'सुबरन कलश' की निंदा क्यों करते हैं?

उत्तर-कबीर 'सुबरन कलश' की निंदा इसलिए करते हैं क्योंकि कलश तो बहुत महँगा है परंतु उसमें रखी सुरा व्यक्ति के लिए हर तरह से हानिकारक है। सुरा के साथ होने के कारण सोने का पात्र निंदनीय बन गया है।'सुबरन कलश' अच्छे और प्रतिष्ठित कुल का प्रतीक है जिसमें जन्म लेकर व्यक्ति अपने-आप को महान समझने लगता है। सच तो यह है कि व्यक्ति तभी महान बनता है जब उसके कर्म भी महान हैं। अत: व्यक्ति को अच्छे कर्म करना चाहिए।

प्रश्न 16.कबीर मनुष्य के लिए क्रिया-कर्म और योग-वैराग्य को कितना महत्त्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर-कबीर मनुष्य के लिए क्रिया-कर्म और योग-वैराग्य को महत्त्वपूर्ण नहीं मानते हैं क्योंकि मनुष्य इन क्रियाओं के माध्यम से ईश्वर को पाने का प्रयास करता है, जबकि कबीर के अनुसार ईश्वर को इन क्रियाओं के माध्यम से नहीं पाया जा सकता है।

प्रश्न 17.कबीर ने संसार को क्या बताया है और क्यों?

उत्तर-कबीर ने संसार को श्वान रूपी कहा है क्योंकि जिस तरह हाथी को जाता हुआ देखकर कुत्ते अकारण भौंकते हैं उसी तरह ज्ञान पाने की साधना में लगे लोगों को देखकर सांसारिकता में फँसे लोग तरह-तरह की बातें बनाने लगते हैं। वे ज्ञान के साधक को लक्ष्य से भटकाना चाहते हैं।

प्रश्न 18.कबीर ने 'भान' किसे कहा है? उसके प्रकट होने पर भक्त पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर-कबीर ने 'भान' (सूर्य) ज्ञान को कहा है। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य के मन का अंधकार दूर हो जाता है। इस अंधकार के दूर होने से मनुष्य के मन से कुविचार हट जाते हैं। वह प्रभु की सच्ची भक्ति करता है और उस आनंद में डूब जाता है।

प्रश्न 19.स्पष्ट कीजिए कि कबीर खरी-खरी कहने वाले सच्चे समाज सुधारक थे।

उत्तर-कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों को अत्यंत निकट से देखा था। उन्होंने महसूस किया कि सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, भक्ति का आडंबर, मूर्तिपूजा, ऊँच-नीच की भावना आदि प्रभु-भक्ति के मार्ग में बाधक हैं। उन्होंने ईश्वर की वाणी को जन-जन तक पहुँचाते हुए कहामोको केही ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में। इसके अलावा ऊँचे कुल में जन्म लेकर महान कहलाने वालों के अभिमान पर चोट करते हुए कहा-'सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोय'। इससे स्पष्ट होता है कि कबीर खरी-खरी कहने वाले सच्चे समाज-सुधारक थे।

वाख

प्रश्न 1.'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर-'रस्सी' शब्द जीवन जीने के साधनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह स्वभाव में कच्ची अर्थात् नश्वर है।

प्रश्न 2.कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर-कवयित्री देखती है कि दिन बीतते जाने और अंत समय निकट आने के बाद भी परमात्मा से उसका मेल नहीं हो पाया है। ऐसे में उसे लगता है कि उसकी साधना एवं प्रयास व्यर्थ हुई जा रही है।

प्रश्न 3.भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर-(क) “जेब टटोली कौड़ी न पाई’ का भाव यह है कि सहज भाव से प्रभु भक्ति न करके कवयित्री ने हठयोग का सहारा लिया। इस कारण जीवन के अंत में कुछ भी प्राप्त न हो सका।
(ख) भाव यह है कि मनुष्य को संयम बरतते हुए सदैव मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। अधिकाधिक भोग-विलास में डूबे रहने से मनुष्य को कुछ नहीं मिलता है और भोग से पूरी तरह दूरी बना लेने पर उसके मन में अहंकार जाग उठता है।

प्रश्न 4.बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललयद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर-ललद्यद ने सुझाव दिया है कि भोग और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखो। न तो भोगों में लिप्त रहो, न ही शरीर को सुखाओ; बल्कि मध्यम मार्ग अपनाओ। तभी प्रभु-मिलन का द्वार खुलेगा।

प्रश्न 5.‘ज्ञानी’ से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर-‘ज्ञानी’ से कवयित्री का अभिप्राय है-जिसने परमात्मा को जान लिया हो।

प्रश्न 8.हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है।

(क) आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
(ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर-(क) हमारे समाज में जाति-धर्म, भाषा, संप्रदाय आदि के नाम पर भेदभाव किया जाता है। इससे समाज और देश को बहुत हानि हो रही है। इससे समाज हिंदू-मुसलमान में बँटकर सौहार्द और भाई-चारा खो बैठा है। दोनों एक-दूसरे के शत्रु से नजर आते हैं। त्योहारों के समय इनकी कट्टरता के कारण किसी न किसी अनहोनी की आशंका बनी। रहती है। इसके अलावा समय-असमय दंगे होने का भय बना रहता है। इससे कानून व्यवस्था की समस्या उठ खड़ी होती है तथा विकास पर किया जाने वाला खर्च अकारण नष्ट होता है।
(ख) आपसी भेदभाव मिटाने के लिए लोगों को सहनशील बनना होगा, सर्वधर्म समभाव की भावना लानी होगी तथा कट्टरता त्याग कर धार्मिक सौहार्द का वातावरण बनाना होगा। सभी धर्मों के अनुयायियों के साथ समानता का व्यवहार करना होगा तथा वोट की खातिर किसी धर्म विशेष का तुष्टीकरण बंद करना होगा ताकि अन्य धर्मानुयायियों को अपनी उपेक्षा न महसूस हो।

प्रश्न 9.नाव किसका प्रतीक है? कवयित्री उसे कैसे खींच रही है?

उत्तर-नाव इस नश्वर शरीर का प्रतीक है। कवयित्री उसे साँसों की डोर रूपी रस्सी के सहारे खींच रही है।

प्रश्न 10.कवयित्री भवसागर पार होने के प्रति चिंतित क्यों है?

उत्तर-कवयित्री भवसागर पार होने के प्रति इसलिए चिंतित है क्योंकि वह नश्वर शरीर के सहारे भवसागर पार करने का निरंतर प्रयास कर रही है परंतु जीवन का अंतिम समय आ जाने पर भी उसे अच्छी प्रार्थना स्वीकार होती प्रतीत नहीं हो रही है।

प्रश्न 11.कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर-कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना कच्चे सकोरों से की है। मिट्टी के इन कच्चे सकोरों में जल रखने से जल रिसकर बह जाता है और सकोरा खाली रहता है उसी प्रकार कवयित्री के प्रयास निष्फल हो रहे हैं।

प्रश्न 12.बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री क्या आवश्यक मानती है?

उत्तर-बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री का मानना है कि मनुष्य को भोग लिप्ता से आवश्यक दूरी बनाकर भोग और त्याग के बीच का मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। उसे संयम रखते हुए भोग और त्याग में समान भाव रखना चाहिए।

प्रश्न 13.कवयित्री किसे साहब मानती है? वह साहब को पहचानने का क्या उपाय बताती है?

उत्तर-कवयित्री परमात्मा को साहब मानती है, जो भवसागर से पार करने में समर्थ हैं। वह साहब को पहचानने का यह उपाय बताती है कि मनुष्य को आत्मज्ञानी होना चाहिए। वह अपने विषय में जानकर ही साहब को पहचान सकता है।

प्रश्न 14.‘वाख’ पाठ के आधार पर बताइए कि परमात्मा को पाने के रास्ते में कौन-कौन सी बाधाएँ आती हैं?

उत्तर-परमात्मा को पाने के रास्ते में आने वाली निम्नलिखित बाधाएँ पाठ में बताई गई हैं-मानव नश्वर शरीर और साँसों

के सहारे परमात्मा को पाना चाहता है। मनुष्य का मन परमात्मा को पाने के प्रति शंकाग्रस्त रहता है।अत्यधिक भोग में लिप्त रहना या भोग से पूरी तरह दूर होकर वैरागी बन जाना भी उचित नहीं है।मन में अभिमान आ जाना और सहज साधना का मार्ग त्यागकर हठयोग आदि का सहारा लेना और मत-मतांतरों के चक्कर में उलझे रहने से परमात्मा को प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

सवैये

प्रश्न 1.ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर-कवि को ब्रजभूमि से गहरा प्रेम है। वह इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी ब्रजभूमि का वासी बने रहना चाहता है। ईश्वर अगले जन्म में उसे ग्वाला बनाएँ, गाय बनाएँ, पक्षी बनाएँ या पत्थर बनाएँ-वह हर हाल में ब्रजभूमि में रहना चाहता है। वह ब्रजभूमि के वन, बाग, सरोवर और करील-कुंजों पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को भी तैयार है।

प्रश्न 2.कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण हैं?

उत्तर-कवि का ब्रज के वन-बाग और तालाब निहारने का कारण यह है कि वह इन सबसे श्रीकृष्ण का जुड़ाव महसूस करता है। कवि श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। वह अपने आराध्य से जुड़ी वस्तुओं से शांति और आनंद की अनुभूति करता है।

प्रश्न 3.एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर-कवि के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हैं-कृष्ण। इसलिए कृष्ण की एक-एक चीज़ उसके लिए महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि वह कृष्ण की लाठी और कंबल के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है।

प्रश्न 4.सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर-सखी ने गोपी से कृष्ण का ठीक वैसा ही रूप धारण करने का अग्रह किया था जैसा कृष्ण दिखते थे। इसके लिए उसने सिर पर मोर पंखों को बना मुकुट, गले में गूंज की माला, शरीर पर पीला वस्त्र पहने और हाथ में लाठी लेने का अग्रह किया था।

प्रश्न 5.आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर-कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य इसलिए प्राप्त करना चाहता है क्योंकि इन सबके साथ श्रीकृष्ण का जुड़ाव किसी न किसी रूप में रहा था।

प्रश्न 6.चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर-चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आपको इसलिए विवश पाती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण की मुसकान अत्यंत आकर्षक है। इस मुसकान के आकर्षण से बच पाना उनके लिए कठिन हो जाता है। इस मुसकान के कारण वे अपने तन-मन पर अपना नियंत्रण नहीं रख पाती है।

प्रश्न 7.भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर-**(क)** रसखान ब्रजभूमि से इतना प्रेम करते हैं कि वे वहाँ के काँटेदार करील के कुंजों के लिए करोड़ों महलों के सुखों को भी न्योछावर करने को तैयार हैं। आशय यह है कि वे महलों की सुख-सुविधा त्यागकर भी उस ब्रजभूमि पर रहना पसंद करते हैं।

(ख) एक गोपी कृष्ण की मधुर-मोहिनी मुसकान पर इतनी मुग्ध है कि उससे कृष्ण की मोहकता झेली नहीं जाती। वह पूरी तरह उस पर समर्पित हो गई है।

प्रश्न 8.'कालिंदी कुल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर-'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में 'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 9.रसखान अगले जन्म में मनुष्य बनकर कहाँ जन्म लेना चाहते थे और क्यों?

उत्तर-रसखान अगले जन्म में मनुष्य बनकर ब्रज क्षेत्र के गोकुल गाँव में जन्म लेना चाहते थे क्योंकि ब्रज उनके आराध्य श्रीकृष्ण की लीला भूमि रही है। ब्रज क्षेत्र में जन्म लेकर वह श्रीकृष्ण से जुड़ाव की अनुभूति करता है।

प्रश्न 10.रसखान ने ऐसा क्यों कहा है, 'जो पसु हौं तो कहा बस मेरो'?

उत्तर-'जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो' कवि रसखान ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि पशु की अपनी इच्छा नहीं चलती है। कोई भी उसके गले में रस्सी डालकर कहीं भी ले जा सकता है। उसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई महत्व नहीं रहती है।

प्रश्न 11.कवि किस गिरि का पत्थर बनना चाहते हैं और क्यों?

उत्तर-कवि गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता हैं क्योंकि इंद्र के प्रकोप और क्रोध से ब्रजवासियों को मचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को छाते की तरह उठाकरे श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा की थी। गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनकर कवि श्रीकृष्ण से जुड़ाव महसूस करता है।

प्रश्न 12.श्रीकृष्ण की मुसकान का गोपियों पर क्या असर होता है?

उत्तर-श्रीकृष्ण की मुसकान अत्यंत आकर्षक एवं मादक है। गोपियाँ इस मुसकान को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठती हैं। उनका खुद अपने तन-मन पर नियंत्रण नहीं रह जाता है। वे विवश होकर स्वयं को नहीं सँभाल पाती हैं।

प्रश्न 13.गोपियाँ ब्रज के लोगों से क्या कहना चाहती हैं और क्यों ?

उत्तर-गोपियाँ ब्रज के लोगों से यह कहना चाहती हैं कि कृष्ण के प्रभाव से बचने के लिए कानों में अँगुली रख लेंगी तथा उनके गोधन को नहीं सुनेंगी पर श्रीकृष्ण की मुसकान देखकर वह स्वयं को नहीं सँभाल पाएंगी और तन-मन पर वश नहीं रहेगा।

प्रश्न 14.श्रीकृष्ण और उनसे जुड़ी वस्तुओं का सान्निध्य पाने के लिए कवि क्या-क्या त्यागने को तैयार है?

उत्तर-रसखान श्रीकृष्ण के प्रति अगाध आस्था और लगाव रखते हैं। वे अपने आराध्य से जुड़ी हर वस्तु से प्रेम करते हैं। इन वस्तुओं को पाने के लिए वे अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार हैं। वे लकुटी और कंबल के बदले तीनों लोकों का राज्य, उनकी गाएँ चराने के बदले आठों सिधियाँ और नवों निधियों का सुख छोड़ने को तैयार हैं। श्रीकृष्ण जिन करील के कुंजों की छाया में मुरली बजाते हुए विश्राम किया करते थे उन कुंजों की छाया पाने के लिए कवि सोने के सैकड़ों महलों का सुख छोड़ने को तैयार है।

प्रश्न 15.'ब्रज के बन-बाग, तड़ाग निहारौं' का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-ब्रजे के बन-बाग और तड़ाग देखने का आशय है-ब्रजभूमि पर स्थित उन बन-बाग और तालाबों को निहारते रहना जहाँ श्रीकृष्ण गाएँ चराया करते थे और विश्राम किया करते थे। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि वह श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। वह श्रीकृष्ण से ही नहीं वरन उनसे जुड़ी हर वस्तु से अत्यधिक लगाव रखता है। इन वस्तुओं को पाने के लिए वह अपना हर सुख त्यागने को तैयार है। यह श्रीकृष्ण के प्रति कवि की भक्ति भावना की पराकाष्ठा है।

कैदी और कोकिला

प्रश्न 1.कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर-कोयल की कूक सुनकर कवि को लगा कि वह मानो उसे कुछ कहना चाहती है। या तो वह उसे निरंतर लड़ते रहने की प्रेरणा देना चाहती है या उसकी यातनाओं के दर्द को बाँटना चाहती है। उसे लगता है कि कोकिल कवि के कष्टों को

देखकर आँसू बहा रही है और चुपचाप अँधेरे को बेधकर विद्रोह की चेतना जगा रही है। इसलिए अंत में कवि उसके इशारों पर आत्म-बलिदान करने को तैयार हो जाता है।

प्रश्न 2.कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई?

उत्तर-कवि ने कोकिल के बोलने पर निम्नलिखित कारणों की संभावना जताई है-

- कोयल जेल में बंद क्रांतिकारियों को देशवासियों की दुर्दशा के बारे में बताने आयी है।
- कोयल कैदी क्रांतिकारियों को धैर्य बँधाने एवं दिलासा देने आई है।
- कोयल कैदी क्रांतिकारियों के दुखों पर मरहम लगाने आई है।
- कोयल पागल हो गई है जो आधी रात में चीख रही है।

प्रश्न 3.किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों?

उत्तर-ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है।ब्रिटिश शासकों ने बेकसूर भारतीयों पर घोर अत्याचार किए। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को कारागृह में तरह-तरह की यातनाएँ दीं। उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोता गया।

प्रश्न 4.कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-पराधीन भारत की जेलों में भारतीयों को पशुओं की भाँति-रखा जाता था। उन्हें ऐसी यातनाएँ दी जाती थीं कि सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- उन्हें ऊँची-ऊँची दीवार वाली जेलों में रखा जाता था।
- उन्हें दस फुट की छोटी-छोटी कोठरियों में रखा जाता था।
- उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया जाता था।
- उनके साथ पशुओं-सा व्यवहार किया जाता था।
- उन्हें बात-बात पर गालियाँ दी जाती थीं।
- उन्हें तड़प-तड़पकर मरने के लिए छोड़ दिया जाता था।

प्रश्न 5.भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!

(ख) हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

उत्तर-**(क)** कवि के अनुसार, वैसे तो संसार में कष्ट-ही-कष्ट हैं। यदि कहीं कुछ मृदुलता और सरसता बची है तो वह कोयल के मधुर स्वर में बची है। अतः कोयल मृदुलता की रखवाली करने वाली है। वह उससे पूछता है कि आखिर वह जेल में अपना मधुर स्वर गुँजाकर उसे क्या कहना चाहती है!

(ख) इसमें जेल की असहनीय यातनाएँ झेलता हुआ कवि स्वाभिमानपूर्वक कहता है कि वह अपने पेट पर कोल्हू का जूआ बाँधकर चरसा चला रहा है। आशय यह है कि उससे पशुओं जैसा सख्त काम लिया जा रहा है। फिर भी वह हार नहीं मान रहा। इससे ब्रिटिश सरकार की अकड़ ढीली पड़ रही है। अंग्रेज़ों को बोध हो गया है कि अब अत्याचार करने से भी वे सफल नहीं हो सकते।

प्रश्न 6.कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

उत्तर-कवि को कोयल से इसलिए ईर्ष्या हो रही है क्योंकि कोयल स्वतंत्र है, जबकि कवि बंदी है। कोयल हरियाली का आनंद ले रही है, जबकि कवि दस फुट की अँधेरी कोठरी में जीने के लिए विवश है। कोयल के गान की सभी सराहना करते हैं, जबकि कवि के लिए रोना भी गुनाह हो गया है।

प्रश्न 7.कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली है?

उत्तर-कवि के स्मृति पटल पर कोयल की कर्णप्रिय अत्यंत मधुर स्वर की स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें अब वह नष्ट करने पर तुली है।

प्रश्न 8.हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

उत्तर-गहना उस आभूषण को कहते हैं, जो धारणकर्ता का गौरव और सौंदर्य बढ़ाए। पं. माखनलाल चतुर्वेदी जैसे क्रांति-कारी, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए स्वयं प्रेरणा से संघर्ष का मार्ग अपनाया था, जेल को अपना प्रिय आवास तथा हथकड़ियों को गहना समझते थे। उन्हें किसी गलत कार्य के लिए हथकड़ी नहीं पहननी पड़ी। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के महान उद्देश्य के लिए हथकड़ियाँ स्वीकार कीं, अतः उनसे उनका गौरव बढ़ा। समाज ने उन्हें उन हथकड़ियों के लिए प्रतिष्ठा दी। इसलिए उन्होंने हथकड़ियों को गहना कहा।

प्रश्न 9.काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?

(ख) तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी-मेरी, बजा रही तिस पर रणभेरी!

उत्तर-**(क)**

- इस काव्य-पंक्ति में जेल की यातनाओं को दावानल की ज्वालाएँ कहा गया है। ब्रिटिश जेलों की असहनीय यातनाओं के लिए यह उपमान सटीक बन पड़ा है।
- इसमें कोयल की कूक को चीख मानकर कवि उससे प्रश्न कर रहा है। कोयल का मानवीकरण प्रभावी बन पड़ा है।
- दावानल की ज्वालाएँ में रूपकातिशयोक्ति तथा अनुप्रास अलंकार है।
- प्रश्न शैली का प्रयोग प्रभावी बन पड़ा है।

(ख)

- इसमें कोयल की मधुर तान और जेल में बंद कवि की यातनाओं का तुलनात्मक वर्णन बहुत मार्मिक बन पड़ा है। कोयले सब जगह प्रशंसा पाती है, जबकि कवि के लिए रोना भी संभव नहीं है।
- कोयल का मानवीकरण बहुत सुंदर बन पड़ा है। कवि को प्रतीत होता है कि कोयल रणभेरी बजाने वाली स्वतंत्रता-सेनानी है और अपनी कूक द्वारा संघर्ष की प्रेरणा दे रही है।
- भाषा अत्यंत सरल, प्रवाहमयी, संगीतात्मक तथा तुकांत है।
- 'तेरी-मेरी' में अनुप्रास और स्वरमैत्री का संगम है। रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 10.कवि जेल के आसपास अन्य पक्षियों का चहकना भी सुनता होगा लेकिन उसने कोयलसे ही बात क्यों की?

उत्तर-अन्य पक्षियों का चहकना सुनकर भी कवि केवल कोयल से ही बातें करता है क्योंकि कोयले का स्वर अन्य पक्षियों की अपेक्षा मधुर एवं कर्णप्रिय होता है। कोयल ही आधी रात के सुनसान में कूक रही थी। कोयल की कूक में ही उसे क्रांतिकारियों का संदेश होने की संभावना लगी।

प्रश्न 11.आपके विचार से स्वतंत्रता सेनानियों और अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार क्यों किया जाता होगा?

उत्तर-ब्रिटिश सरकार भारत की स्वतंत्रता के विरोध में थी। वह क्रांतिकारियों को दबाना चाहती थी। इसलिए वह उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से पीड़ित करती थी। उन्हें मानसिक रूप से तोड़ने के लिए उन्हें चोरों, अपराधियों, बटमारों के साथ रखती थी तथा आम अपराधियों जैसा दुर्व्यवहार करती थी।

प्रश्न 12.पराधीन भारत की कौन-कौन सी जेलें मशहूर थीं, उनमें स्वतंत्रता सेनानियों को किस-किस तरह ही यातनाएँ दी जाती थीं?

उत्तर-पराधीन भारत में निम्नलिखित जेलें मशहूर थीं-अंडमान निकोबार की जेल, पोरबंदर की जेल, इलाहाबाद की नैनी जेल, कोलकाता जेल, पूना की यरवदा जेल।

इन जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों को अमानवीय स्थितियों में रखा जाता था। उन्हें सीलन भरे छोटे-छोटे कमरे में रखा जाता था ताकि वे बीमार हो जाएँ। उन्हें पेटभर खाना नहीं दिया जाता था। उनसे जानवरों की भाँति काम करवाया जाता था। उन्हें बार-बात पर गालियाँ दी जाती थीं और मारा-पीटा जाता था। भित्ति पत्रिका पर प्रदर्शन का कार्य छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 13.'जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है'-ऐसा किसने कहा है और क्यों?

उत्तर-'जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है'-ऐसा कवि ने कहा है क्योंकि कवि को स्वतंत्रता की माँग करने के कारण जेल में कैदकर दिया गया है। उसे वहाँ भरपेट भोजन नहीं दिया जाता है और मरने भी नहीं दिया जाता है। कवि एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारियों की मृत्यु जेल में होने पर अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण बनने का भय था।

प्रश्न 14.कवि को हिमकर किस तरह निराश कर चला गया?

उत्तर-स्वतंत्रता सेनानी कवि को जेल में कैद कर दिया गया था। रात के सुनसान समय में वह चंद्रमा से बातें करते हुए उसके सहारे समय बिता रहा था परंतु रात बीतने से पहले ही चंद्रमा छिप गया। अब कवि अकेला पड़ गया। इस तरह हिमकर उसे निराश करके चला गया।

प्रश्न 15.कवि ने किसकी वेदना को बोझ के समान बताया है और क्यों?

उत्तर-कवि पराधीन भारत में रह रहे भारतीयों की वेदना को बोझ के समान बताया है क्योंकि पराधीन भारतीयों के साथ अंग्रेज़ नाना प्रकार की यंत्रनाएँ देते थे। वे निर्दोषों पर भी अत्याचार करते थे। अंग्रेजों का यह क्रूर व्यवहार भारतीयों की बोझ जैसी भारी वेदना बन गया था।

प्रश्न 16.कवि की अँगुलियाँ किस पर गाने लिख रही थीं और कैसे?

उत्तर-पराधीन भारत की जेलों में बंद कैदियों से पशुओं के समान काम लिया जाता था। उनसे मोट से पानी खिंचवाने, गिट्टियाँ तोड़ने जैसा काम लिया जाता था। गिट्टियाँ तोड़ने से उठने वाली आवाज़ों को सुन कर लगता था कि ये कवि की अँगुलियों द्वारा लिखे गए गीत हैं।

प्रश्न 17.जेल में कवि के रोने को भी गुनाह क्यों माना जाता था?

उत्तर-पराधीन भारत में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार किया था। वे निर्दोष भारतीयों को भी जेल में डाल देते थे। ऐसी ही दशा में स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाने वाले कवि को भी जेल में डाल दिया गया। यहाँ उसे रोने भी नहीं दिया जाता था। क्योंकि कवि का रोना सुनकर अन्य कैदियों के मन में कहीं उसके प्रति सहानुभूति और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश भड़क सकता था।

प्रश्न 18.'मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना' के आलोक में बताइए कि अंग्रेज़ कवि जैसे कैदियों को मरने भी नहीं देते थे, क्यों?

उत्तर-पराधीन भारत की जेलों में बंद स्वतंत्रता सेनानियों एवं क्रांतिकारियों पर अंग्रेज़ तरह-तरह के अत्याचार करते थे। उन्हें बैलों की जगह कोल्हू चलाने और मोट खींचने जैसे काम करने को विवश कर देते थे। ऐसे कठोर शारीरिक श्रम के बाद भी वे न उन्हें पेट भर खाना देते थे और न मरने देते थे। कवि जैसे कैदियों को न मरने देने का कारण यह था कि ये क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी अपने कार्यों से प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय होते थे। जेल में इनकी मृत्यु होने पर भारतीय जन का आक्रोश भड़क सकता था, जिसे नियंत्रित करना कठिन हो जाता था। ऐसे में उनके विरुद्ध घृणा का वातावरण बनने का भय था।

ग्राम श्री

प्रश्न 1. कवि ने गाँव को 'हरता जन-मन' क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने गाँव को 'हरता जन-मन' इसलिए कहा है क्योंकि उसकी शोभा अनुराग है। खेतों में दूर-दूर तक मखमली हरियाली फैली हुई है। उस पर सूरज की धूप चमक रही है। इस शोभा के कारण पूरी वसुधा प्रसन्न दिखाई देती है। इसके कारण गेहूँ, जौ, अरहर, सनई, सरसों की फसलें उग आई हैं। तरह-तरह के फूलों पर रंगीन तितलियाँ मँडरा रही हैं। आम, बेर, आड़, अनार आदि मीठे फल पैदा होने लगे हैं। आलू, गोभी, बैंगन, मूली, पालक, धनिया, लौकी, सेम, टमाटर, मिर्च आदि खूब फल-फूल रहे हैं। गंगा के किनारे तरबूजों की खेती फैलने लगी है। पक्षी आनंद विहार कर रहे हैं। ये सब दृश्य मनमोहक बन पड़े हैं। इसलिए गाँव सचमुच जन-मन को हरता है।

प्रश्न 2. कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

उत्तर- कविता में सरदी के मौसम के सौंदर्य का वर्णन है। इसी समय गुलाबी धूप हरियाली से मिलकर हरियाली पर बिछी चाँदी की उजली जाली का अहसास कराती है और पौधों पर पड़ी ओस हवा से हिलकर उनमें हरारक्त होने का भान होता है। इसके अलावा खेत में सब्ज़ियाँ तैयार होने, पेड़ों पर तरह-तरह के फल आने, तालाब के किनारे रेत पर मँगरौठ नामक पक्षी के अलसीकर सोने से पता चलता है कि यह सरदी के मौसम का ही वर्णन है।

प्रश्न 3. गाँव को 'मरकत डिब्बे-सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर-गाँव में चारों ओर मखमली हरियाली और रंगों की लाली छाई हुई है। विविध फसलें लहलहा रही हैं। वातावरण मनमोहक सुगंधों से भरपूर है। रंगीन तितलियाँ उड़ रही हैं। चारों ओर रेशमी सौंदर्य छाया हुआ है। सूरज की मीठी-मीठी धूप इस सौंदर्य को और जगमगा रही है। इसलिए इस गाँव की तुलना मरकत डिब्बे से की गई है।

प्रश्न 4. अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर-अरहर और सनई फलीदार फ़सलें हैं। इनकी फ़सलें पकने पर, जब हवा चलती है तो इनमें से मधुर आवाज़ आती है। यह मधुर आवाज़ किसी स्त्री की कमर में बँधी करधनी से आती हुई प्रतीत होती है। इन्हीं मधुर आवाजों के कारण कवि को अरहर और सनई के खेत धरती की करधनी जैसे दिखाई देते हैं।

प्रश्न 5.भाव स्पष्ट कीजिए-

1. बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती।
2. हँसमुख हरियाली हिम-आतप सुख से अलसाए-से सोए।

उत्तर-

1. गंगा-तट की रेत बल-खाते साँप की तरह लहरदार है और वह विविध रंगों वाली है।
2. हरियाली धूप के प्रकाश में जगमगाती हुई हँसमुख-सी लग रही है। सर्दी की धूप भी स्थिर और शांत है। उन्हें देखकर यों लगता है मानो दोनों अलसाकर एक-दूसरे के संग सो गए हों।

प्रश्न 6. निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

तिनकों के हरे हरे तन पर

हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उत्तर-

1. हरे-हरे' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
2. 'हरे-हरे' 'हिल-हरित' में अनुप्रास अलंकार है।

3. 'हरित रुधिर'-रुधिर का रंग हरा बताने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

4. 'तिनकों के हरे-भरे तन पर' में रूपक एवं मानवीकरण अलंकार है।

प्रश्न 7. इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है?

उत्तर- इस कविता में गंगा के तट पर बसे गाँव का चित्रण हुआ है।

प्रश्न 8. भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-'ग्राम श्री' कविता में उस ग्रामीण सौंदर्य का चित्रण है जो लोगों के मन को अनायास अपनी ओर खींच लेता है। गाँव हरियाली से भरपूर है। यह खेतों में लहराती फ़सलें हैं जिन पर रंग-बिरंगे फूल खिले हैं तो दूसरी ओर फलों से लदे पेड़ भी हैं जिन पर पके फलं मुँह में पानी ला देते हैं।

कविता में गंगा की सतरंगी रेती और जल क्रीड़ा करते पक्षियों का चित्रण भी है। हरा-भरा गाँव देखकर लगता है कि यह मरकत का कोई डिब्बा हो। कविता की भाषा सरल सहज बोधगम्य, प्रवाहमयी है जिसमें चित्रमयता है। वर्णन इतना प्रभावी है कि सारा का सारा दृश्य आँखों के सामने साकार हो उठता है। कविता में अनुप्रास, रूपक मानवीकरण और विरोधाभास अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक प्रयोग है। इस तरह ग्राम श्री' कविता भाव एवं भाषा की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

प्रश्न 9. चाँदी की उजली जाली के समान किसे कहा गया है? यह जाली कहाँ दिखाई दे रही है?

उत्तर- सूरज की सफ़ेद किरणों को चाँदी की उजली जाली के समान कहा गया है। यह जाली खेतों में दूर-दूर तक फैली हरियाली से लिपटी हुई दिखाई दे रही है।

प्रश्न 10. तिनकों पर ओस की बूंदें देखकर कवि ने क्या नवीन कल्पना की है? और क्यों?

उत्तर- तिनकों पर ओस की बूंदों को देखकर कवि ने हरे रक्त की नवीन कल्पना की है क्योंकि तिनकों पर पड़ी ओस की बूंदें हवा से हिल-डुल रही हैं। इससे बूंदें तिनकों के हरे रक्त-सी प्रतीत हो रही हैं।

प्रश्न 11. धरती रोमांचित-सी क्यों लगती है? यह रोमांच किस तरह प्रकट हो रहा है?

उत्तर- धरती रोमांचित-सी इसलिए लग रही है क्योंकि गेहूँ और जौ में बालियाँ आ गई हैं। जिस तरह रोमांचित होने पर हमारे शरीर के रोएँ खड़े हो जाते हैं, उसी प्रकार गेहूँ जौ की बालियों में दानों पर लगे नुकीले भाग को देखकर लगता है कि ये धरती के रोम हैं जिनसे उसका रोमांच प्रकट हो रहा है।

प्रश्न 12. सरसों फूलने का वातावरण पर क्या असर पड़ा है? इसे झाँककर कौन देख रहा है?

उत्तर- सरसों के फूलने से वातावरण में तेल की गंध भर गई है जो हवा के साथ उडती फिर रही है। इस पीली-पीली फूली सरसों को अलसी की कली हरी-भरी धरती से झाँक-झॉक कर देख रही है।

प्रश्न 13. खेतों में खड़ी मटर के सौंदर्य का वर्णन 'ग्राम श्री' कविता के आधार पर कीजिए।

उत्तर- खेतों में मटर की फ़सल खड़ी है। उस पर रंग-बिरंगे फूल और फलियाँ आ चुकी हैं। इन फूलों को देखकर लगता है कि मटर सखियों के संग हँस रही है। वह अपनी मखमली पेटियों जैसे छीमियों में बीजों की लड़ी छिपा रखी है।

प्रश्न 14. तितलियों के उड़ने से वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इस दृश्य को देखकर कवि अनूठी कल्पना कर रहा है?

उत्तर- पेड़-पौधे एवं फ़सलों पर रंग-बिरंगे सुंदर फूल खिले हैं। ये फूल हवा के साथ झूम रहे हैं तितलियाँ उड़ती-फिरती एक फूल से दूसरे फूल पर आ जा रही हैं। इससे वातावरण अत्यंत सुंदर बन गया है। इनको देखकर कवि यह कल्पना करता है कि स्वयं फूल ही उड़कर एक डाल से दूसरी डाल पर जा रहे हैं।

प्रश्न 15. अमरूद, बेर और आँवला जैसे फल और उनके पेड़ कवि का मन क्यों लुभा रहे हैं?

उत्तर- कच्चे हरे दिखाई देने वाले अमरूद अब पककर पीले हो गए हैं और उन पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं। बेर के फल अब पककर सुनहरे और मीठे हो गए हैं। आँवले की डालियाँ अब छोटे-छोटे आँवलों से जड़ी हुई दिखाई दे रही हैं। इस कारण ये फल और पेड़ कवि का मेन लुभा रहे हैं।

प्रश्न 16. कवि ने हरी थैली किसे कहा है और क्यों?

उत्तर- कवि ने शिमला मिर्च के पौधों पर आई बड़ी-बड़ी मिरचों को हरी थैली कहा है। ये मिर्च गुच्छों के रूप में इन पौधों पर लटक रहे हैं। इन्हें देखकर लगता है कि बड़ी-बड़ी हरी-हरी थैलियाँ लटक रही हैं।

प्रश्न 17. कवि द्वारा हरियाली और तारों का किस तरह मानवीकरण किया गया है? 'ग्राम श्री' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर- हरियाली पर सरदियों की धूप पड़ने से लग रहा है कि हरियाली हँस रही है जो धूप के साथ मिलकर सुखपूर्वक अलसाई-सी सो रही है। शाम के समय ओस पड़ने से रात भीगी-सी लग रही है। ऐसी रात में तारों को देखकर लगता है कि वे सपनों में खोए हुए हैं।

प्रश्न 18. गंगा के किनारों का सौंदर्य देखकर कवि अभिभूत क्यों है?

उत्तर- गंगा के दोनों किनारों की चमकती रेत धूप में सतरंगी प्रतीत हो रही है। हवा से पानी के लहराने के कारण रेत पर टेढ़ी मेढी रेखाएँ बन गई हैं, जो साँपों के चलने से बनी हुई लगती है। इनके किनारे सरपत से लँकी हुई तरबूजों की खेती सुंदर लग रही है। इसी सरपत नामक लंबी-लंबी घास से बनी कुछ झोपड़ियाँ भी हैं, जिनमें बैठकर तरबूजों एवं सब्जियों की रखवाली की जाती है। पानी में पक्षी अपनी-अपनी क्रीड़ा में व्यस्त हैं। यह सब देखकर कवि अभिभूत है।

मेघ आए

प्रश्न 1. बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर- बादलों के आने पर प्रकृति में चारों तरफ़ चहल-पहल होने लगी। नाचती-गाती बयार चलने लगी। पेड़ झुकने लगे, मानो वे गरदन उचकाकर बादलों को निहार रहे हों। आँधी आने लगी और धूल उठने लगी। नदी मानो बाँकी नज़र उठा कर ठिठक गई हो। पीपल का पेड़ झुकने लगा और लताएँ पेड़ों की शाखाओं में छिप गईं। तालाब जल से भर गए। नभ में बिजली चमकने लगी और मूसलाधार जल बरसने लगा, जिसके कारण जगह-जगह से बाँध टूट गए।

प्रश्न 2. दिए गये शब्दों के प्रतीक बताइए- धूल, पेड़, नदी, लता, ताल।

उत्तर- दिए गए शब्दों के प्रतीक इस प्रकार हैं-

1. **धूल-** मेघ रूपी मेहमान के आगमन से उत्साहित अल्हड़ बालिका का प्रतीक है।
2. **पेड़-** गाँव के आम व्यक्ति का प्रतीक है जो मेहमान को देखने के लिए उत्सुक है।
3. **नदी-** गाँव की नवविवाहिता का प्रतीक है जो पूँघट की ओर से तिरछी नज़र से मेघ को देखती है।
4. **लता-** नवविवाहिता मानिनी नायिका का प्रतीक है जो अपने मायके में रहकर मेघ का इंतजार कर रही है।
5. **ताल-** घर के नवयुवक का प्रतीक है जो मेहमान के पैर धोने के लिए पानी लाता है।

प्रश्न 3. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उत्तर- लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट में छिपकर देखा क्योंकि वह मानिनी स्त्री है। वह अपने प्रियतम के कई दिनों के बाद आने पर उनसे रूठी हुई है और उन्हें देखे बिना रह भी नहीं पाती है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

1. क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की
2. बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, पूँघट सरके।

उत्तर- 1. भाव यह है कि एक साल बीतने को हो रहे थे पर नवविवाहिता लता का पति मेघ उससे मिलने नहीं आया था। इससे लता के मन में जो भ्रम बन गया था वह मेघ के आने से टूट गया और वह क्षमा माँगने लगी।
2. मेघ रूपी मेहमान को देखने के लिए नदी रूपी नवविवाहिता ठिठक गई और उसने घूँघट उठाकर मेहमान को देखा।

प्रश्न 5. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर- मेघ के आने से बयार चलने लगी। पेड़ झुकने लगे। आँधी और धूल चलने लगी, नदी बाँकी होकर बहने लगी। बूढ़े पीपल झुकने लगे। लताएँ पेड़ की ओट में छिपने लगीं। तालाब जल से भर उठे। आकाश में मेघ छा गए। अंत में बहुत तेज बारिश हुई।

मेहमान (दामाद) के आने पर गाँव की कन्याएँ और युवतियाँ प्रसन्न हो उठीं। लोग अपने खिड़की-दरवाजे खोलखोलकर उन्हें निहारने लगे। आते-जाते लोग उन्हें गरदन उठाकर देखने लगे। नवयुवतियों ने घूँघट सरकाकर उन्हें निहारा। बूढी स्त्रियाँ विनम्रतापूर्वक उनका स्वागत करने लगीं। अतिथि की प्रिया मान करने लगी। फिर अचानक वह क्षमा माँगने लगी। दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु बह चले।

प्रश्न 6. मेघों के लिए 'बन-ठने के, सँवर के आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर- मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के आने की बात इसलिए कही गई है क्योंकि वर्षा के बादल काले-भूरे रंग के होते हैं। नीले आकाश में उनका रंग मनोहारी लगता है। इसके अलावा गाँवों में बादलों का बहुत महत्व है तथा उनका इंतजार किया जाता है।

प्रश्न 7. कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर- **मानवीकरण-**

- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
- आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
- पेड़ झुक झाँकने लगे, गरदन उचकाए
- धूल भागी घाघरा उठाए
- बाँकी चितवन उठा, नदी ठिटकी
- बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की
- 'बरस बाद सुधि लीन्हीं
  बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
- हरसायो ताल लाया पानी परात भर के।

रूपक – क्षितिज-अटारी गहराई।

प्रश्न 8. कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- कविता में अनेक रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है; जैसे-

- मेहमान के आने की सूचना पाकर सारा गाँव उल्लसित हो जाना।
- उत्साहित एवं जिज्ञासु होकर मेहमान को देखना।
- घर के बुजुर्ग द्वारा मेहमान का आदर-सत्कार करना।
- मेहमान के पैर धोने के लिए थाल में पानी भर लाना।
- नवविवाहिता स्त्री द्वारा घूँघट की ओट से मेहमान को देखना
- मायके वालों की उपस्थिति में नवविवाहिता नायिका द्वारा अपने पति से बात न करना।

प्रश्न 9. काव्य-सौंदर्य लिखिए-

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

उत्तर- भाव सौंदर्य- इन पंक्तियों में शहर में रहने वाले दामाद का गाँव में सज-सँवरकर आने का सुंदर चित्रण है।
शिल्प-सौंदर्य- पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के' में उत्प्रेक्षा अलंकार, 'बड़े बन-ठनके' में अनुप्रास तथा 'मेघ आए बड़े

बन-ठन के सँवर के' में मानवीकरण अलंकार है। भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। रचना तुकांत युक्त है। दृश्य बिंब साकार हो उठा है। माधुर्य गुण है।

प्रश्न 10. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है?

उत्तर- पीपल का पेड़ आकार में विशाल, हरा-भरा, छायादार होने के साथ ही शुभ माना जाता है। पूजा-पाठ और हर मांगलिक कार्यों में इसका पूजन किया जाता है, इसीलिए कवि ने पीपल को ही बड़ा बुज़ुर्ग कहा है।

प्रश्न 11. 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है- उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल, सहज और आडंबरहीन है। कविता में आम बोल-चाल के शब्दों के अलावा अनेक आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें कवि ने अपनी बात को अत्यंत सीधे-सादे सरल शब्दों में कह दिया है। भाषा में मुहावरों का प्रयोग करने तथा प्रकृति का मानवीकरण करने से भाषा की सजीवता एवं रोचकता बढ़ गई जिससे यह और भी सरल, सहज और बोधगम्य हो गई है।

प्रश्न 12. 'मेघ आए' कविता में बादलों को किसके समान बताया गया है?

उत्तर- 'मेघ आए' कविता में बादलों को शहर से आने वाले दामाद के समान बताया गया है क्योंकि बादल गाँव में उसी तरह सज-धजकर आ रहे हैं जैसे शहरी दामाद सज-धजकर आता है या इन बादलों का इंतज़ार भी दामाद की ही तरह किया जाता है।

प्रश्न 13. लता रूपी नायिका ने मेहमान से अपना रोष किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर- नवविवाहिता लता रूपी नायिका अपने पति का इंतज़ार कर रही थी पर उसका पति एक साल बाद लौटा तो लता ने उससे रोष प्रकट करते हुए कहा, "तुमने तो पूरे साल भर बाद सुधि लिया है।" अर्थात् वह पहले क्यों नहीं आ गया।

प्रश्न 14. प्राकृतिक रूप से किस भ्रम की गाँठ खुलने की बात कही गई है?

उत्तर- ग्रामीण संस्कृति में बादलों का बहुत महत्त्व है। वहाँ कृषि-कार्य बादलों पर निर्भर करता है, इसलिए बादलों की प्रतीक्षा की जाती है। इस बार जब साल बीत जाने पर भी बादल नहीं आए तो लोगों के मन में यह भ्रम हो गया था कि इस साल अब बादल नहीं आएँगे पर बादलों के आ जाने से उनके इस भ्रम की गाँठ खुल गई।

प्रश्न 15. 'मेघ आए' कविता में नदी किसका प्रतीक है? वह घूँघट सरकाकर किसे देख रही है?

उत्तर- 'मेघ आए' कविता में नदी गाँव की उस विवाहिता स्त्री का प्रतीक है जो अभी भी परदा करती है। वह किसी अजनबी या रिश्तेदार के सामने घूघट करती है। वह गाँव आ रहे बादल रूपी मेहमान को घूँघट सरकाकर देख रही है।

प्रश्न 16. ताल किसका प्रतीक है? वह परात में पानी भरकर लाते हुए किस भारतीय परंपरा का निर्वाह कर रहा है?

उत्तर- ताल घर के किसी उत्साही नवयुवक का प्रतीक है। मेघ रूपी मेहमान के आने पर वह परात में पानी भर लाता है। ऐसा करके वह घर आए मेहमान के पाँव धोने की भारतीय संस्कृति की परंपरा का निर्वाह कर रहा है।

प्रश्न 17. शहरी मेहमान के आने से गाँव में जो उत्साह दृष्टिगोचर होता है, उसे मेघ आए कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर- शहरी मेहमान के आने से गाँव में हर्ष उल्लास का वातावरण बन जाता है। गाँव में बादलों के आगमन का इंतज़ार किया जाता है। बादल के आते ही बच्चे, युवा, स्त्री, पुरुष सभी प्रसन्न हो जाते हैं। पेड़-पौधे झूम-झूमकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं। बच्चे भाग-भाग बादलों के आने की सूचना देते फिरते हैं। युवा उत्साहित होकर बादलों को देखते हैं तो स्त्रियाँ दरवाजे खिड़कियाँ खोलकर बादलों को देखने लगती हैं। बादलों के बरसने पर सर्वत्र उत्साह का वातावरण छा जाता है।

प्रश्न 18. 'मेघ आए' कविता में अतिथि का जो स्वागत-सत्कार हुआ है, उसमें भारतीय संस्कृति की कितनी झलक मिली है, अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- 'मेघ आए' कविता में मेघ रूपी मेहमान के आने पर उसका भरपूर स्वागत होता है। वह एक साल बाद अपनी ससुराल आ रहा है। यहाँ लोग उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। मेहमान के आते ही घर का सबसे बुज़ुर्ग और सम्मानित सदस्य उसकी अगवानी करता है, उसको सम्मान देते हुए राम-जुहार करता है और कुशल-क्षेम पूछता है। मेहमान को यथोचित स्थान पर बैठाकर घर का सदस्य उत्साहपूर्वक परात में पानी भर लाता है ताकि मेहमान के पैर धो सके। इस

तरह हम देखते हैं कि मेहमान का जिस तरह स्वागत किया गया है उसमें भारतीय संस्कृति की पर्याप्त झलक मिलती है।

बच्चे काम पर जा रहे हैं

प्रश्न 1. कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभारता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर- कविता की पहली दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

कोहरे से ढंकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं।

सुबह सुबह

इन्हें पढ़कर मेरे मन-मस्तिष्क में चिंता और करुणा का भाव उमड़ता है। करुणा का भाव इस कारण उमड़ता है कि इन बच्चों की खेलने-कूदने की आयु है किंतु इन्हें भयंकर कोहरे में भी आराम नहीं है। पेट भरने की मजबूरी के कारण ही ये ठंड में सुबह उठे होंगे और न चाहते हुए भी काम पर चल दिए होंगे। चिंता इसलिए उभरी कि इन बच्चों की यह दुर्दशा कब समाप्त होगी? कब समाज बाल-मजदूरी से मुक्ति पाएगा? परंतु कोई समाधान न होने के कारण चिंता की रेखा गहरी हो गई।

प्रश्न 2. कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर- कवि की दृष्टि में बच्चों के काम पर जाने की स्थिति को विवरण या वर्णन की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए क्योंकि ऐसा वर्णन किसी के मन में भावनात्मक लगाव और संवेदनशीलता नहीं पैदा कर सकता है, कुछ सोचने के लिए विवश नहीं कर सकता है। इसे प्रश्न के रूप में पूछे जाने पर एक जवाब मिलने की आशा उत्पन्न होती है। इसके लिए समस्या से जुड़ाव, जिज्ञासा एवं व्यथा उत्पन्न होती है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर- समाज की व्यवस्था और गरीबी के कारण बच्चे सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित हैं। भारत में करोड़ों लोग पेट भर रोटी नहीं जुटा पाते। इसलिए उनके बच्चों को भी बचपन से कामकाज करना पड़ता है। यह उनकी जन्मजात विवशता होती है। एक भिखारी, मजदूर या गरीब व्यक्ति का बच्चा गेंद, खिलौने, रंगीन किताबें कहाँ से लाए? समाज की व्यवस्था भी बाल-श्रमिकों को रोकने में सक्षम नहीं है। यद्‍यपि सरकार ने इस विषय में कानून बना दिए हैं। किंतु वह बच्चों को निश्चित रूप से ये सुविधाएँ दिला पाने में समर्थ नहीं है। न ही सरकार या समाज के पास इतने साधन हैं, न गरीबी मिटाने के उपाय हैं और न इच्छा-शक्ति। इसलिए बच्चे वंचित हैं।

प्रश्न 4. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा / रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- जीवन में बच्चों को काम पर जाते हुए देखकर भी लोग उदासीन बने रहते हैं। लोग इतने संवेदनहीन हो गए हैं कि वे सोचते हैं कि छोड़ो, यह कौन-सा हमारा बच्चा है। लोगों की स्वार्थ भावना इस उदासीनता को बढ़ाती है। वे अधिक लाभ कमाने और कम मजदूरी देने के लालच में बच्चों से काम करवाते हैं। बाल श्रम कानून का पालन कराने वाले अधिकारियों द्‍वारा अपने कर्तव्य का उचित निर्वाह न करना समाज की उदासीनता बढ़ाता है।

प्रश्न 5. आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?

उत्तर- मैंने अपने शहर में बच्चों को अनेक स्थलों पर काम करते देखा है। चाय की दुकान पर, होटलों पर, विभिन्न दुकानों पर, घरों में, निजी कार्यालयों में। मैंने उन्हें सुबह से देर रात तक, हर मौसम में काम करते देखा है।

प्रश्न 6. बच्चों को काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर- बच्चों का काम पर जाना एक बड़े हादसे के समान इसलिए है क्योंकि खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने की उम्र में काम करने से बालश्रमिकों का भविष्य नष्ट हो जाता है। इससे एक ओर जहाँ शारीरिक विकास अवरुद्‍ध होता है, वहीं

उनका मानसिक विकास भी यथोचित ढंग से नहीं हो पाता है। ऐसे बच्चे जीवनभर के लिए अकुशल श्रमिक बनकर रह जाते हैं। इससे उनके द्वारा समाज और देश के विकास में उनके द्वारा जो योगदान दिया जाना था वह नहीं मिलता है जिससे प्रगति की दर मंद पड़ती जाती है।

प्रश्न 7. आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

उत्तर- मेरे विचार से बच्चों को काम पर इसलिए नहीं भेजा जाना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों का बचपन नष्ट होता है। वे जीवन भर के लिए मजदूर बनकर रह जाते हैं। बच्चों का काम पर जाना समाज के माथे पर कलंक है। इस कलंक से बचने के लिए बच्चों से बाल मजदूरी नहीं करवानी चाहिए।

प्रश्न 8. बच्चों को किस समय और कहाँ जाते हुए देखकर कवि को पीड़ा हुई है? बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर- बच्चों को कड़ी सरदी में सवेरे-सवेरे कोहरे से ढंकी सड़क पर जाते हुए देखकर हुआ। ये बच्चे कारखानों और अन्य स्थानों पर बाल मजदूरी करने जा रहे थे। खेलने-कूदने की उम्र में बच्चों को काम पर जाते देख कवि को पीड़ा हुई।

प्रश्न 9. कवि के लिए बच्चों का काम पर जाना चिंता का विषय क्यों बन गया है? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर- कवि के लिए बच्चों का काम पर जाना चिंता का विषय इसलिए बन गया है क्योंकि आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। जिस उम्र में बच्चों को खेल-कूदकर बचपन का आनंद लेना चाहिए, स्वस्थ और सबल बनना चाहिए तथा पद-लिखकर योग्य नागरिक बनना चाहिए, उस उम्र में काम करके अपना भविष्य अंधकारमय कर रहे हैं।

प्रश्न 10. बालश्रम अपराध है फिर भी बच्चों को काम करते हुए देखा जा सकता है। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- बालश्रम अपराध है फिर भी हम बच्चों को काम करते हुए देखते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं। इनमें सबसे पहला कारण गरीबी है। बच्चों की मूलभूत ज़रूरतें पूरी न करने पर माँ-बाप उन्हें काम पर भेजने को विवश हो जाते हैं। इसके अलावा लोगों की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा संवेदनहीनता के कारण बच्चे काम करते हुए देखे जा सकते हैं।

प्रश्न 11. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं'- कविता में काले पहाड़ किसके प्रतीक हैं? ये काले पहाड़ किस तरह हानिप्रद हैं?

उत्तर- 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता में काले पहाड़ समाज में व्याप्त शोषण व्यवस्था के प्रतीक हैं। इसी व्यवस्था के कारण समाज का एक वर्ग बच्चों का शोषण करता है, उनसे काम करवाकर उनका भविष्य खराब करता है और बहुत कम मजदूरी देकर अपनी जेब भरता है।

प्रश्न 12. बालश्रम की समस्या बढ़ाने में समाज की संवेदनहीनता का भी योगदान है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बालश्रम की समस्या पर रोक लगाने पर भी यह समस्या बढ़ती ही जा रही है। इसका कारण है कि समाज के लोग बच्चों को काम पर जाता हुआ देखकर भी अनदेखा करते हैं और बच्चों के भविष्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। इस संवेदनहीनता के कारण यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

प्रश्न 13. कार्यस्थलों एवं कारखानों में काम करने वाले बच्चों के साथ कैसा व्यवहार किया है? अपने अनुभव एवं विवेक से लिखिए।

उत्तर- कार्यस्थलों और कारखानों में काम करने वाले बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। उन्हें बात-बात पर तथा ज़रा सी गलती के लिए डाँटा-फटकारा और मारा-पीटा जाता है। अनजाने में भी हुए नुकसान के लिए दंडस्वरूप उनकी मजदूरी काट ली जाती है। उनसे अधिक समय काम करवाने पर भी कम मजदूरी दी जाती है।

प्रश्न 14. 'तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ऐसा प्रश्न कवि कब और क्यों करता है?

उत्तर- 'तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?' कवि ऐसा प्रश्न तब करता है जब वह देखता है कि बहुत छोटे-छोटे बच्चे काम पर जाने को विवश हैं। कवि सोचता है कि यह बच्चों के खेलने और पढ़ने के दिन हैं। क्या किताबें, खिलौने, गेंदें विद्यालय आदि नष्ट हो गए हैं? यदि हाँ तो दुनिया में जीने के लायक कुछ भी नहीं बचा है।

प्रश्न 15. 'दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए' कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर- 'दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए' कहकर कवि ने बाल मजदूरी की समस्या की व्यापकता की ओर संकेत

किया है। यह समस्या किसी देश विशेष की न होकर पूरे विश्व की समस्या है। गरीबी के कारण दुनिया भर में लाखों-करोड़ों बच्चे बाल श्रमिक बनने को विवश हैं।

प्रश्न 16. बालश्रम क्या है? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' इसे रोकने के लिए आप कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर- छोटे-छोटे बच्चों से काम करवाना बालश्रम कहलाता है। इससे मासूमों का बचपन छिन जाता है। वे पढ़-लिख नहीं पाते हैं, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय बन जाता है। सरकार द्वारा इसे अपराध घोषित किया गया है। इसे रोकने के लिए कुछ सुझाव हैंसरकार को अत्यंत गरीबों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवानी चाहिए ताकि गरीबी के कारण वे अपने बच्चों को काम पर भेजने के लिए विवश न हों।

बच्चों से काम करवाने वालों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। बाल श्रमिकों की पहचानकर उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस दिशा में समाज को भी अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है।

कृतिका भाग-1

इस जल प्रलय में

प्रश्न 1. बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

उत्तर- बाढ़ की खबर सुनकर लोग अपनी सुरक्षा के प्रबंध और अत्यावश्यक सामानों को जुटाने में लग गए। उन्होंने जरुरी सामान ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, पीने का पानी और कंपोज की गोलियाँ इकट्ठी कर लीं ताकि बाढ़ से घिर जाने पर कुछ दिनों तक गुजारा चल सके।

प्रश्न 2. बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?

उत्तर- लेखक उस क्षेत्र का रहने वाला था जहाँ बाढ़ ग्रस्त लोग शरण लिया करते थे। वह बाढ़ पीड़ितों की मदद कई तरह से कर चुका था। उसने बाढ़ तो देखा था पर बाढ़ घिरने, बहने या भोगने का अनुभव नहीं किया था। वह का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए उत्सुक था। वह बाढ़ के प्रति जिज्ञासु था जिसे शांत करने के लिए वह बहुत बेचैन था

प्रश्न 3. सबकी जुबान पर एक ही जिज्ञासा- 'पानी कहाँ तक आ गया है?'-इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भावनाएँ व्यक्त होती हैं?

उत्तर- 'पानी कहाँ तक आ गया है- यह जिज्ञासा सबके मन में थी। सब अपनी जबान से यही शब्द कह रहे थे। इससे जनसमूह की उत्सुकता, सुरक्षा तथा कौतुहल की भावना प्रकट होती है। सब लोग नए अनुभव को अपनी आँखों से देखना चाहते हैं। वे जीवन-मृत्यु के खेल को देखने का मोह छोड़ नहीं पाते। इस खेल में गहरा आकर्षण होता है।

प्रश्न 4. मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- बाढ़ को गेरुआ-झाग-फेन वाला पानी जो मोटी डोरी की शक्ल में निरंतर बढ़ता आ रहा था, जो लोगों के मन में भय उत्पन्न कर रहा था तथा सब कुछ धीरे-धीरे डुबोता हुआ आ रहा था, ऐसे पानी को 'मृत्यु का तरल दूत' कहा गया है। इसका कारण यह है कि ऐसा पानी जन-धन की अपार हानि पहुँचाता है।

प्रश्न 5. आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर- आपदाओं से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए

- सरकार को सभी प्रकार के संभावित खतरों से निपटने के लिए साधन तैयार रखने चाहिए। उस सामान की लगातार देखरेख होनी चाहिए ताकि आपदा के समय उनका सदुपयोग किया जा सके।
- स्वयंसेवी संस्थाओं को बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक आपदा से निपटने के लिए आगे आना चाहिए।
- सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं के बीच गहरा तालमेल बिठाने के प्रयास होने चाहिए।
- उत्साही नवयुवकों-नवयुवतियों को शीघ्र ही किसी योजनाबद्ध कार्य में जुड़कर सहयोग करना चाहिए।

प्रश्न 6. 'ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए...अब बूझो!'-इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

उत्तर- उक्त कथन द्वारा लोगों की दूसरों को दुखी देखकर आनंदित होने की प्रवृत्ति, संकुचित, स्वार्थी मानसिकता, संवेदन-

हीनता की स्थिति पर चोट की गई है। एक समय जब दानापुर डूब रहा था तब पटना के लोगों ने उनकी मदद नहीं की थी। अब स्वयं के बाढ़ में फंसने पर बाढ़ की पीड़ा महसूस कर रहे हैं।

प्रश्न 7. खरीद-बिक्री बंद हो चुकने पर भी पान की बिक्री अचानक क्यों बढ़ गई थी?

उत्तर- बाढ़ आने का खतरा बढ़ गया था। इसलिए अन्य सामानों की दुकानें जहाँ बंद होने लगी थीं, वहीं पान की बिक्री अधिक बढ़ गई थी क्योंकि लोग बाढ़ को देखने के लिए बहुत बड़ी संख्या में इकट्टे हो गए थे। वे बाढ़ से भयभीत नहीं थे, बल्कि हँसी-खुशी और कौतुहल से युक्त थे। इस समय पान उनके लिए समय गुजारने का सबसे अच्छा साधन था।

प्रश्न 8. जब लेखक को यह अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो उसने क्या-क्या प्रबंध किए?

उत्तर- जब लेखक को अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो उसने सबसे पहले गैस के विषय में अपनी पत्नी से पूछा। गैस की कमी जानकर कोयला और कैरोसीन आयल का प्रबंध किया। उसने आलू, प्याज, मोमबत्ती, माचिस, सिगरेट कांपोज की गोलियाँ आदि का प्रबंध किया। उसने एक सप्ताह तक पढ़ने के लिए हिंदी, बाँग्ला और अंग्रेज़ी की फ़िल्मी पत्रिकाएँ खरीद ली ताकि बाढ़ के समय अपना समय बिता सके।

प्रश्न 9. बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौन सी बीमारियों के फैलने की आशंका रहती है?

उत्तर- बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में अकसर पकाही घाव हो जाता है। बाढ़ के गंदे-सड़े जल के कारण लोगों के पाँवों की 'तियाँ सड़ जाती हैं और तलवों में घाव हो जाते हैं।

प्रश्न 10. नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। दोनों ने किन भावनाओं के वशीभूत होकर ऐसा किया?

उत्तर- नौजवान के उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। ऐसा उसने नवयुवक अर्थात् अपने मालिक के प्रति अगाध लगाव रखने की भावना के कारण किया। कुत्ता और नवयुवक एक-दूसरे से भावनात्मक संबंधों के अलावा मित्रता और सुख-दुख में साथ न छोड़ने के अलावा स्नेहपूर्ण संबंध रखते थे। ऐसा करके कुत्ते ने स्वामिभक्ति की भावना भी प्रकट की।

प्रश्न 11. पटना में आई बाढ़ से लेखक ने जो कुछ अनुभव किया वह पिछले अनुभवों से किस तरह भिन्न है?

उत्तर- लेखक दस वर्ष की उम्र से ही बाढ़ पीड़ितों से विभिन्न रूपों में जुड़ा रहा है। उसने रिलीफ वर्कर की हैसियत से काम भी किया है परंतु वह बाढ़ का भुक्तभोगी नहीं रहा था। 1967 में पटना में जो बाढ़ आई थी, लेखक उसका भुक्तभोगी रहा है। उसने बाढ़ के पानी का भयावह रूप देखा ही नहीं, बल्कि उसकी पीड़ा को सहा है। इस तरह पटना में आई बाढ़ का अनुभव पिछले अनुभवों से बिलकुल अलग था।

प्रश्न 12. कॉफ़ी हाउस पहुँचकर लेखक आतंकित क्यों हो गया? इस आतंक का उस पर क्या असर हुआ?

उत्तर- कॉफ़ी हाउस के पास पहुँचने पर लेखक ने देखा कि कॉफ़ी हाउस बंद कर दिया गया था। सड़क के एक किनारे पर एक मोटी डोरी के आकारवाला गेरुए-झाग फेन में उलझा पानी तेज़ी से सरकता आ रहा है। लेखक को यह पानी 'मृत्यु के तरल दूत' जैसा लगा जिसे देखकर वह आतंकित हो गया। इस आतंक के कारण उसने इस 'दूत' को हाथ जोड़कर सभय प्रणाम किया।

प्रश्न 13. लेखक ने 'गैरिक आवरण' किसे कहा है? यह कब और क्यों आच्छादित करता आ रहा था?

उत्तर- लेखक ने अपनी यादों पर पड़ने वाले उस परदे को 'गैरिक आवरण' कहा है जिसके कारण गांधी मैदान से जुड़ी उसकी स्मृतियाँ धूमिल होती जा रही हैं। यह आवरण पटना में बाढ़ आने पर इसलिए आच्छादित करता आ रहा था क्योंकि गांधी मैदान की हरियाली पर धीरे-धीरे पानी भरता जा रहा था।

प्रश्न 14. गांधी मैदान पहुँचकर लेखक ने कैसा दृश्य देखा? इस मैदान से जुड़ी कौन-कौन-सी यादें भूलती जा रही थीं?

उत्तर- गांधी मैदान पहुँचकर लेखक ने देखा कि इस मैदान की रेलिंग के सहारे इतने लोग खड़े थे कि उनकी संख्या दशहरा के दिन रामलीला के 'राम' के रथ की प्रतीक्षा करते लोगों से अधिक ही रही होगी। इस मैदान से जुड़ी आनंद-उत्सव, सभासम्मेलन और खेलकूद की सारी यादें लेखक को भूलती जा रही थीं।

प्रश्न 15. लेखक ने दिल दहला देने वाला समाचार किसे कहा है और क्यों?

उत्तर- शाम साढ़े सात बजे आकाशवाणी के पटना केंद्र से प्रसारित स्थानीय समाचार में कहा गया कि 'पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है। लेखक ने इस समाचार को दिल दहलाने वाला कहा है क्योंकि इसे सुनते ही लेखक और उसके मित्र के चेहरे पर आतंक की रेखाएँ उभर आईं।

प्रश्न 16. पान की दुकान पर एकत्रित लोग बाढ़ के संबंध में तरह-तरह की बातें कर रहे थे पर लेखक ने वहाँ से हट जाने में ही अपनी भलाई क्यों समझी?

उत्तर- शहर में बाढ़ का पानी घुसने की आशंका से पान वाले की दुकान पर लोग एकत्र हो गए और तरह-तरह की बातें करने लगे। लोग आम दिनों की तरह ही हँस-बोल रहे थे पर लेखक और उसका मित्र बाढ़ की अनहोनी से आतंकित थे। वे चाहकर भी प्रसन्न नहीं दिख रहे थे। लोगों के बीच इन दोनों की सूरतें ही 'मुहर्रमी' लग रही थी। इनकी बुज़दिली पर लोग उपहास न उड़ाए, इसलिए दोनों ने वहाँ से हट जाने में ही अपनी भलाई समझी।

प्रश्न 17. गुरुजी ने लेखक को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में द्वीप जैसे बालूचर पर जाने से क्यों रोका?

उत्तर- लेखक ने बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में गुरुजी के साथ नाव से जाते हुए दूर एक द्वीप जैसा बालूचर देखा। लेखक वहाँ जाकर कुछ कदम चहलकदमी करना चाहता था परंतु गुरुजी ने उसे वहाँ जाने से इसलिए रोका क्योंकि ऐसी जगहों पर चींटे-चींटी, साँप-बिच्छू, लोमड़ी, सियार आदि जानवर पनाह लेने के लिए पहले ही पहुँच चुके होते हैं।

प्रश्न 18. मुसहरी में राहत सामग्री बाँटने गया लेखक राहत सामग्री बाँटना क्यों भूल गया?

उत्तर- लेखक और उसके साथी परमान नदी की बाढ़ में डूबे मुसहरों की बस्ती में राहत बाँटने गए। बाढ़ में फँसे ये लोग मछली और चूहों को झुलसाकर खाते हुए किसी तरह दिन बिता रहे थे। वहाँ पहुँचकर लेखक ने देखा की वहाँ तो बलवाही नाच हो रहा था। यहाँ धानी का अभिनय करता 'नटुआ' और दूसरे व्यक्ति ने अपने अभिनय से ऐसा दृश्य बना रखा है। कि जिसे देखकर कीचड़-पानी में लथपथ भूखे-प्यासे नर-नारियों के झुंड खिलखिलाकर हँस रहे हैं। उनकी ऐसी उन्मुक्त खिल-खिलाहट देखकर लेखक राहत सामग्री बाँटना भूल गया। मुसहरों के कार्य व्यवहार से हमें दुख को धैर्यपूर्वक सह लेने, विपरीत परिस्थितियों में खुश रहने, एक-दूसरे का दुख बाँटने तथा दुख का साहसपूर्वक सामना करते हुए उसे जीत लेने जैसे जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है।

मेरे संग की औरतें

प्रश्न 1. लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

उत्तर- लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा नहीं था, किंतु उनके बारे में सुना अवश्य था। उसने सुना था कि उसकी नानी ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्यारेलाल शर्मा से भेंट की थी। उस भेट में उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि वे अपनी बेटी की शादी किसी क्रांतिकारी से करवाना चाहती हैं, अंग्रेजों के किसी भक्त से नहीं। उनकी इस इच्छा में देश की स्वतंत्रता की पवित्र भावना थी। यह भावना बहुत सच्ची थी। इसमें साहस था। जीवन भर परदे में रहकर भी उन्होंने किसी पर पुरुष से मिलने की हिम्मत की। इससे उनके साहसी व्यक्तित्व और मन में सुलगती स्वतंत्रता की भावना का पता चला। लेखिका इन्हीं गुणों के कारण उनका सम्मान करती है।

प्रश्न 2. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर- लेखिका की नानी ने आज़ादी के आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया था, पर आज़ादी के आंदोलन में उनका अप्रत्यक्ष योगदान अवश्य था। वे अनपढ़ परंपरागत परदानशीं औरत थीं। उनके मन में आज़ादी के प्रति जुनून था। यद्यपि उनके पति अंग्रेजों के भक्त थे और साहबों के समान रहते थे पर अपनी मृत्यु को निकट देखकर उन्होंने अपने पति के मित्र स्वतंत्रता सेनानी प्यारेलाल शर्मा को बुलवाया और स्पष्ट रूप से कह दिया कि उनकी बेटी का वर वे ही अपने समान ही। किसी स्वतंत्रता के दीवाने लड़के को खोज कर दें। इससे उनकी बेटी का विवाह आज़ादी के आंदोलन में भाग लेने वाले उस लड़के से हो सका जिसे आई.सी.एस. परीक्षा में बैठने से रोक दिया गया था। इस तरह उसकी नानी ने आज़ादी के आंदोलन में भागीदारी निभाई।

प्रश्न 3. लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में-

(क) लेखिका की माँ की विशेषताएँ लिखिए।

(ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर- **(क)** लेखिका की माँ की स्थितियाँ और व्यक्तित्व-दोनों असाधारण थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के लिए काम करती थीं। उनकी सोच मौलिक थी। लेखिका के शब्दों में वह खुद अपने तरीके से आज़ादी के जुनून को निभाती थीं। इस विशेषता के कारण घर-भर के लोग उसका आदर करते थे। कोई उनसे घर गृहस्थी के काम नहीं करवाता था। उनका व्यक्तित्व ऐसा प्रभावी था कि ठोस कामों के बारे में उनसे केवल राय ली जाती थी और उस राय को पत्थर की लकीर मानकर निभाया जाता था।

लेखिका की माँ का सारा समय किताबें पढ़ने, साहित्य चर्चा करने और संगीत सुनने में बीतता था। वे कभी बच्चों के साथ लाड़-प्यार भी नहीं करती थीं। उनके मान-सम्मान के दो कारण प्रमुख थे। वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं। वे एक की गोपनीय बात दूसरे से नहीं कहती थीं।

(ख) लेखिका की दादी के घर में विचित्र विरोधों का संगम था। परदादी लीक से परे हटकर थीं। वे चाहती थीं कि उनकी पतोहू को होने वाली पहली संतान कन्या हो। उसने यह मन्नत मानकर जगजाहिर भी कर दी। इससे घर के अन्य सभी लोग हैरान थे। परंतु लेखिका की दादी ने इस इच्छा को स्वीकार करके होने वाली पोती को खिलाने-दुलारने की कल्पनाएँ भी कर डालीं। लेखिका की माँ तो बिलकुल ही विचित्र थीं। वे घर का कोई काम नहीं करती थीं। वे आज़ादी के आंदोलन में सक्रिय रहती थीं। उन्हें पुस्तकें पढ़ने, संगीत सुनने और साहित्य चर्चा करने से ही फ़ुर्सत नहीं थी। उनके पति भी क्रांतिकारी थे। वे आर्थिक दृष्टि से अधिक समृद्ध नहीं थे। विचित्र बात यह थी कि लेखिका के दादा अंग्रेजों के बड़े प्रशंसक थे। घर में चलती उन्हीं की थी। किंतु घर की नारियाँ अपने-अपने तरीके से जीने के लिए स्वतंत्र थीं। कोई किसी के विकास में बाधा नहीं बनता था।

प्रश्न 4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी ?

उत्तर- परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी ताकि वे परंपरा से अलग चलने की जो बात करती थीं, उसे अपने कार्य-व्यवहार द्वारा सबको दर्शा सकें। इसके अलावा उनके मन में लड़का और लड़की में अंतर समझने जैसी कोई बात न रही होगी।

प्रश्न 5. डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है - पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- इस पाठ से स्पष्ट है कि मनुष्य के पास सबसे प्रभावी अस्त्र है-अपना दृढ़ विश्वास और सहज व्यवहार। यदि कोई सगा संबंधी गलत राह पर हो तो उसे डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव देने की बजाय सहजता से व्यवहार करना चाहिए। लेखिका की नानी ने भी यही किया। उन्होंने अपने पति की अंग्रेज़ भक्ति का न तो मुखर विरोध किया, और न ही समर्थन किया। वे जीवन भर अपने आदर्शों पर टिकी रहीं। परिणामस्वरूप अवसर आने पर वह मनवांछित कार्य कर सकीं।

लेखिका की माता ने चोर के साथ जो व्यवहार किया, वह तो सहजता का अनोखा उदाहरण है। उसने न तो चोर को पकड़ा, न पिटवाया, बल्कि उससे सेवा ली और अपना पुत्र बना लिया। उसके पकड़े जाने पर उसने उसे उपदेश भी नहीं दिया, न ही चोरी छोड़ने के लिए दबाव डाला। उसने इतना ही कहा-अब तुम्हारी मर्जी चाहे चोरी करो या खेती। उसकी इस सहज भावना से चोर का हृदय परिवर्तित हो गया। उसने सदा के लिए चोरी छोड़ दी और खेती को अपना लिया।

प्रश्न 6. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'- इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस दिशा में लेखिका ने अथक प्रयास किए। उसने कर्नाटक के बागल-कोट जैसे छोटे से कस्बे में रहते हुए इस दिशा में सोचना शुरू किया। उसने कैथोलिक विशप से प्रार्थना की कि उनका मिशन वहाँ के सीमेंट कारखाने से मदद लेकर वहाँ स्कूल खोल दे, पर वे इसके लिए तैयार न हुए। तब लेखिका ने हिंदी

अंग्रेजी और कन्नड़ तीन भाषाएँ सिखाने वाला स्कूल खोला और उसे कर्नाटक सरकार से मान्यता दिलवाई। इस स्कूल के बच्चे बाद में अच्छे स्कूलों में प्रवेश पा गए।

प्रश्न 7. पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है?

उत्तर- इस पाठ के आधार पर स्पष्ट है कि ऊँची भावना वाले दृढ़ संकल्पी लोगों को श्रद्धा से देखा जाता है। जो लोग सद्भावना से व्यवहार करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर गलत रूढ़ियों को तोड़ डालने की हिम्मत रखते हैं, समाज में उनका खूब आदर-सम्मान होता है।

लेखिका की नानी इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने परिवार और समाज से विरोध लेकर भी अपनी पुत्री को किसी क्रांतिकारी से ब्याहने की बात कही। इस कारण वह सबकी पूज्या बन गई। लेखिका की परदादी इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने दो धोतियों से अधिक संचय न करने का संकल्प किया था। उसने परंपरा के विरुद्ध लड़के की बजाय लड़की होने की मन्नत मानी।

लेखिका की माता इसलिए श्रद्धेया बनी क्योंकि उसने देश की आज़ादी के लिए कार्य किया। कभी किसी से झूठ नहीं बोला। कभी किसी की गोपनीय बात को दूसरे को नहीं बताया। ये सभी व्यक्तित्व सच्चे थे, लीक से परे थे तथा दृढ़ निश्चयी थे। इस कारण इनका सम्मान हुआ। इन पर श्रद्धा प्रकट की गई।

प्रश्न 8. 'सच, अकेलेपन का मज़ा ही कुछ और है'-इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- "सच, अकेलेपन का मजा ही कुछ और है।" इस कथन के आधार पर ज्ञात होता है कि लेखिका और उसकी बहन दोनों ही अपने दृढ़ निश्चय और जिद्दीपन के कारण उक्त कथन को चरितार्थ ही नहीं करती हैं बल्कि उसका आनंद भी उठाती हैं। लेखिका की बहन रेणु तो लेखिका से भी दो कदम आगे थी। वह गरमी में भी उस गाड़ी में नहीं आती थी जिसे उसके पिता ने स्कूल से उसे लाने के लिए लगवा रखा था। एक बहन गाड़ी में आती थी जबकि रेणु पैदल। इसी तरह शहर में एक बार नौ इंच बारिश होने पर शहर में पानी भरने के कारण घरवालों के मना करते रहने पर भी वह लब-लब करते पानी में स्कूल गई और स्कूल बंद देखकर लौट आई।

लेखिका ने बिहार के डालमिया शहर में रूढ़िवादी स्त्री-पुरुषों के बीच जहाँ जागृति पैदा की और उनके साथ नाटक करते हुए सूखा राहत कोष के लिए धन एकत्र किया वहीं दूसरी ओर कर्नाटक के छोटे से कस्बे में बच्चों के लिए स्कूल खोला और मान्यता दिलवाई, यह काम लेखिका ने अकेले ही शुरू किया था।

प्रश्न 9. लेखिका खुद और अपनी दो बहिनों को लेखन में आने का क्या कारण मानती है?

उत्तर- लेखिका खुद और अपनी दो बहिनों को लेखन में आने का कारण यह मानती हैं कि वे अपनी नानी से कहानी नहीं सुन पाईं क्योंकि उनकी माँ की शादी होने से पहले ही नानी की मृत्यु हो चुकी थी। शायद नानी से कहानी न सुन पाने के कारण लेखिका और उसकी बहनों को खुद कहानियाँ लिखनी पड़ी। इससे वे लेखिका बन गईं।

प्रश्न 10. लेखिका पहले पहल अपनी नानी के बारे क्या जान पाई थी?

उत्तर- लेखिका पहले पहल अपनी नानी के बारे में बस इतना ही जान पाई थी कि उसकी नानी पारंपरिक, अनपढ़ और परदा करने वाली महिला थी। उनके पति उन्हें छोड़कर वकालत की पढ़ाई करने इंग्लैंड चले गए थे। वकालत की डिग्री लेकर लौटने के बाद वे साहबों जैसी जिंदगी व्यतीत करने लगे पर नानी पर इसका कोई अंतर नहीं पड़ा। वे अपनी मरजी से जीती रहीं और अपनी किसी पसंद-नापसंद का इज़हार अपने पति के सामने कभी नहीं किया।

प्रश्न 11. लेखिका की नानी ने स्वतंत्रता सेनानी प्यारे लाल शर्मा से कौन-सी इच्छा प्रकट की? यह इच्छा उन्होंने अपने पति से क्यों नहीं बताई?

उत्तर- लेखिका की नानी ने जब कम उम्र में ही स्वयं को मृत्यु के निकट पाया तो उन्होंने अपने पति के मित्र प्यारे लाल शर्मा को बुलवाया और कहा कि आप मेरी बेटी की शादी अपने जैसे ही किसी आज़ादी के सिपाही से करवा दीजिएगा। उन्होंने यह इच्छा अपने पति को इसलिए नहीं बताई क्योंकि वे जानती थी कि अंग्रेज़ों के भक्त उनके पति उनकी इस इच्छा को पूरा नहीं करेंगे। वे बेटी की शादी आज़ादी के सिपाही से होने को पसंद न करते।।

प्रश्न 12. लेखिका ने लिखा है कि उसकी नानी एकदम मुँहज़ोर हो उठीं। वे कब और क्यों मुँहज़ोर हो उठीं?

उत्तर- लेखिका की नानी उस समय मुँहज़ोर हो उठी थी जब वे कम उम्र में यह महसूस करने लगी कि उनकी मृत्यु निकट है। और उनकी इकलौती पंद्रह वर्षीया बेटी अभी अविवाहित है। उनके मुँहजोर होने का कारण अपने पति का आचार-विचार था। उनके उच्च शिक्षित पति अंग्रेजों के भक्त थे जबकि लेखिका की नानी स्वतंत्रताप्रिय नारी थीं। वे अपनी बेटी का विवाह किसी साहब से नहीं बल्कि आज़ादी के सिपाही से करने की पक्षधर थीं।

प्रश्न 13. लेखिका ने अपनी माँ को परीजात-सी जादुई क्यों कहा है? ससुराल में उनकी क्या स्थिति थी?

उत्तर- लेखिका ने अपनी माँ को परीजात-सी जादुई इसलिए कहा है क्योंकि उनमें खूबसूरती, नज़ाकत गैर दुनियादारी, ईमानदारी और निष्पक्षता जैसे गुणों का संगम था। इन गुणों के कारण ससुराल में उनकी स्थिति यह थी कि उनसे कोई ठोस काम करने के लिए कोई नहीं कहता था। हर काम के लिए उनकी ज़बानी राय जरूर माँगी जाती थी और उनकी राय को अकाट्य समझते हुए उस पर अमल भी किया जाता था।

प्रश्न 14. लेखिका को अपनी माँ और अन्य परंपरागत माताओं में क्या अंतर नज़र आया?

उत्तर- लेखिका को अपनी माँ और अन्य परंपरागत माताओं में यह अंतर नजर आया कि परंपरागत माएँ अपनी संतान का हर काम अपने हाथों से करती हैं, उनकी जरूरतों का ध्यान रखती हैं और उनके लिए समय निकालती हैं परंतु लेखिका की माँ ने अपने बच्चों को कभी लाड़-प्यार नहीं किया, न उनके लिए खाना बनाया और न अच्छी पत्नी-बहू होने की कभी सीख दी। घर के काम-काज में उनकी अरुचि थी। वे अपना अधिकांश समय पुस्तकें पढ़ने, साहित्यिक चर्चा करने में बिताती थीं। यह काम भी वे विस्तर नर लेते-लेते करती थीं।

प्रश्न 15. लेखिका ने अपनी नानी, माँ और परदादी में क्या समानता देखी? उसने अपनी परदादी के संबंध में ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- लेखिका ने अपनी नानी, माँ और परदादी में यह समानता दर्शायी है कि वे सब की सब लीक से खिसकी हुई थीं। उसने अपनी परदादी के संबंध में ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि दो से अधिक धोतियाँ होते ही वे तीसरी धोती दान कर देती थीं। इसके अलावा उन्होंने अपनी पतोहू (लेखिका की माँ) के गर्भवती होने पर उन्होंने मंदिर जाकर गैर खायती यह मन्नत माँगी कि उनकी पतोहू की पहली संतान लड़की ही हो। यह मन्नत उन्होंने कई बार माँगी जबकि सब लोग पहली संतान लड़का होने की मन्नत माँगते हैं।

प्रश्न 16. चोर से कहाँ गलती हुई कि सारा अनुमान लगाकर घुसने पर भी वह पकड़ा गया? 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- किसी शादी के सिलसिले में घर के पुरुष दूसरे गाँव में गए थे और औरतें रतजगा कर रही थीं। नाच-गाना जारी था और ढोलक पर थाप पूँज रहे थे। इसी बीच चोर ने उसे कमरे का अनुमान लगाया होगा और दीवार काटकर कमरे में घुस आया। इधर शादी में नाच-गाने के शोर से बचने के लिए माँ जी अपना कमरा छोड़ कर दूसरे कमरे में सो गई। इसी कमरे को खाली समझकर चोर घुस आया था। उसके कदमों की आहट होते ही दादी की नींद खुल गई। इस तरह तमाम अनुमान लगाकर घुसने के बाद भी चोर पकड़ा गया।

रीढ़ की हड्डी

प्रश्न 1. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर "एक हमारा ज़माना था..." कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर- रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद दोनों पुराने जमाने के बुजुर्ग हैं। दोनों को वर्तमान जमाने की तुलना में अपना जमाना याद आता है। ये यादें स्वाभाविक हैं। इन यादों के लिए इन्हें प्रयत्न नहीं करना पड़ता। ये अपने आप मन में आती हैं। परंतु इन तुलनाओं को दूसरों के सामने प्रकट करके उन्हें नीचा दिखाना गलत है। यह तर्कसंगत नहीं है। ऐसा करने से बुजुर्ग लोग अपने हाथों में ऐसा हथियार ले लेते हैं जिसकी काट वर्तमान पीढ़ी के पास नहीं होती। यों भी हर ज़माने की अपनी स्थितियाँ होती हैं। ज़माना बदलता है तो उसमें कुछ कमियों के साथ कुछ सुधार भी आते हैं। परंतु

बुजुर्ग लोग प्रायः अपने पक्ष में एकतरफा अनुभव सुनते हैं, जो कि तर्कसंगत नहीं है। यह मनोरंजन के लिए तो ठीक है, किंतु इसका कोई महत्त्व नहीं है।

प्रश्न 2. रामस्वरूप की अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?

उत्तर- रामस्वरूप लड़कियों को उच्च शिक्षा दिलाने के पक्षधर हैं। उन्होंने उमा को कॉलेज की शिक्षा दिलवाकर बी.ए. पास करवाया। इसके अलावा उमा को संगीत, कला आदि का भी ज्ञान है। रामस्वरूप चाहते हैं कि उमा की शादी अच्छे परिवार में हो। संयोग से परिवार तो उच्च शिक्षित मिला परंतु उसकी सोच अच्छी न थी। लड़के का पिता और स्वयं लड़का दोनों ही चाहते हैं कि उन्हें दसवीं पास लड़की ही चाहिए। एक लड़की का पिता होने के कारण लड़के वालों की इच्छा को ध्यान में रखकर कर्तव्य और वक्तव्य में विरोधाभास रखते हैं। ऐसी परिस्थिति एक विवाह योग्य पुत्री के पिता की विवशता को उजागर करता है।

प्रश्न 3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

उत्तर- अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप अपनी बेटी से अपेक्षा करते हैं कि वह सज धजकर सुंदर रूप में पेश आए। इसके लिए वह पाउडर आदि बनावटी साधनों का उपयोग करे। वह आने वाले मेहमानों के सामने ढंग से बात करे, अपनी व्यवहार कुशलता से उनका दिल जीत ले। उसमें जो-जो गुण हैं, उन्हें ठीक तरह प्रकट करे ताकि वह होने वाले पति और ससुर को पसंद आ जाए। वह उसे कम पढ़ी लिखी लड़की के रूप में भी पेश करना चाहता है। रामस्वरूप का व्यवहार ढोंग और दिखावे को बढ़ावा देता है। यह झूठ पर आधारित है। बी.ए. पढ़ी लिखी होकर भी उसे मैट्रिक बताना सरासर धोखा है। ऐसी ठगी पर खड़े रिश्ते कभी टिकाऊ नहीं होते। इसी प्रकार पाउडर लगाकर सुंदर दीखना भी धोखे में रखने जैसा है। रामस्वरूप के व्यवहार को हम उचित नहीं कह सकते।

प्रश्न 4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिज़नेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखें।

उत्तर- गोपाल प्रसाद वकील हैं। वे चालाक किस्म के इनसान हैं। वे मानवीय रिश्तों से अधिक महत्त्व पैसों को देते हैं। शादी जैसे पवित्र संस्कार को भी वे 'बिजनेस' की तराजू में तौलते हैं। बिजनेस' शब्द से उनकी इस मानसिकता का पता चल जाता है। इधर रामस्वरूप चाहते हैं कि उनकी बेटी उमा का रिश्ता गोपाल प्रसाद के लड़के शंकर से हो जाए जो मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है परंतु समस्या यह है कि गोपाल प्रसाद और उनका बेटा दोनों ही चाहते हैं कि लड़की अधिक से अधिक दसवीं पास होनी चाहिए। इस कारण रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाने के लिए झूठ बोलते हैं। यहाँ मेरा मानना है कि दोनों समान रूप से अपराधी हैं पर गोपाल प्रसाद का यह अपराध उनकी घटिया सोच तथा रूढ़िवादी सोच का परिणाम है जबकि रामस्वरूप का अपराध उनकी विवशता का परिणाम है।

प्रश्न 5. "आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं..." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

उत्तर- इस कथन के माध्यम से उमा शंकर की निम्नलिखित कमियों की ओर ध्यान दिलाना चाहती है-

1. शंकर बिना रीढ़ की हड्डी के है, अर्थात् व्यक्तित्वहीन है। उसका कोई निजी मत, स्थान या महत्त्व नहीं है। वह अपने पिता के इशारों पर हीं-हीं करने वाला बेचारा जीव है। उसे जैसा कहा जाता है, वैसा ही करता है। वह पिता की उचित-अनुचित सभी बातों पर हाँ-हाँ करता चलता है। ऐसा व्यक्ति पति होने योग्य नहीं है।
2. शंकर लड़कियों के पीछे लग-लगकर अपनी रीढ़ की हड्डी तुड़वा बैठा है। उसका सरेआम अपमान हो चुका है। अतः वह अपमानित, लंपट और दुश्चरित्र है।
3. उसका शरीर कमज़ोर है। उससे सीधा तन कर बैठा भी नहीं जाता। इसलिए वह विवाह के योग्य नहीं है।

प्रश्न 6. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की- समाज को कैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी का पात्र शंकर उन नवयुवकों का प्रतीक है जो सामाजिक और वैचारिक प्रगति से आज भी अछूते हैं। ऐसे युवक महिलाओं को उचित स्थान नहीं देना चाहते हैं। वे पुरुषों के बराबर नहीं आने देना चाहते

हैं। शिक्षा जैसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं मानवीयता जगाने वाली मणि को पुरुषों के लिए ही उचित मानते हैं। ऐसे युवा न शारीरिक रूप से मजबूत हैं और न चारित्रिक रूप से। ऐसा व्यक्तित्व समाज को चारित्रिक पतन की ओर उन्मुख करता है। इसके विपरीत उमा उन लड़कियों का प्रतीक है जो सजग और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। उनका चरित्र समाज को उन्नति की ओर उन्मुख करने वाला है। अतः समाज को उमा जैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है।

प्रश्न 7. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का शीर्षक सार्थक, सफल और व्यंग्यात्मक है। वर का व्यक्तित्वहीन होना इस नाटक की मूल समस्या है। यदि शंकर समझदार और व्यक्तित्व-संपन्न युवक होता तो गोपाल प्रसाद की इतनी हिम्मत न होती कि वह दो सुशिक्षित वयस्कों के बीच में बैठकर अपनी फूहड़ बातें करे और अशिक्षा को प्रोत्साहन दे। कम पढ़ी लिखी बहू चाहना गोपाल प्रसाद की जरूरत हो सकती है, शंकर की नहीं। अगर शंकर अपने पिता के रोबदाब के आगे यूँ भी नहीं कर सकता, बल्कि उनकी हाँ में हाँ मिलाता है तो वह उसकी कायरता है। उस कायरता को दिखाने के लिए उसे रीढ़ की हड्डी के बिना दिखाया गया है। इस प्रकार, रीढ़ की हड्डी' व्यंग्यात्मक, संकेतपूर्ण, सार्थक और सफल शीर्षक है। एक अच्छे शीर्षक में जिज्ञासा होनी चाहिए, जो पाठक को आतुर कर दे। यह शीर्षक जिज्ञासातुर करने वाला है।

प्रश्न 8. कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उत्तर- कथावस्तु के आधार पर मैं नि:संदेह एकांकी का मुख्य पात्र उमा को ही मानता हूँ क्योंकि एकांकी की सारी कथावस्तु उसी के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। एकांकी के मुख्य पुरुष पात्र शंकर पर वह चारित्रिक, शारीरिक और तार्किक कौशल में भारी पड़ती है। उमा उच्च शिक्षित होने के साथ-साथ कला एवं संगीत में भी निपुण है। एकांकी में एक बार जब उसकी एंट्री होती है तो वह मंच पर अंत तक बनी रहती है। वह अपनी निपुणता से गोपाल प्रसाद और शंकर के निरुत्तर ही नहीं करती है बल्कि उनकी आँखें भी खोलकर रख देती है। एकांकी का समापन भी उमा के माध्यम से होता है। अतः उमा एकांकी की मुख्य पात्र है।

प्रश्न 9. इस एकांकी का क्या उद्देश्य है?

उत्तर- रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य है-समाज के लोगों की दोहरी मानसिकता सबके सामने लाना, लड़कियों के विवाह में आनेवाली समस्याओं की ओर समाज का ध्यान खींचना तथा युवाओं द्वारा अपनी शिक्षा और चरित्र की मजबूती का। ध्यान न रखना। एकांकी में गोपाल प्रसाद और उनका बेटा शंकर जैसे लोग हैं जो उच्च शिक्षित होकर भी कम पढ़ी-लिखी बहू चाहते हैं और स्त्रियों को समानता का दर्जा नहीं देना चाहते हैं। उमा को देखने आए लड़के वाले उसे वस्तु की तरह देखते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से दहेज की माँग करते हैं। इसके अलावा शंकर जैसे युवा का अपनी पढ़ाई पर ध्यान न देना तथा उसकी चारित्रिक दुर्बलता की ओर ध्यान आकर्षित करना इस एकांकी का उद्देश्य है।

प्रश्न 10. समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

उत्तर- हम निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं-

1. लोगों में सुशिक्षित नारी के लाभों का प्रचार कर सकते हैं।
2. सुशिक्षित बहू को स्वीकार करके उन्हें सम्मान दे सकते हैं।
3. सुशिक्षित कन्याओं को नौकरी दिलाकर उन्हें पुरुषों के समान महत्त्व दे सकते हैं।
4. कम पढ़ी लिखी बहू चाहने वालों को समझा-बुझाकर रास्ते पर ला सकते हैं।

प्रश्न 11. उमा की शिक्षा के विषय में प्रेमा और रामस्वरूप के विचार किस तरह अलग थे? इनमें से किसके विचार आप उचित मानते हैं और क्यों?

उत्तर- उमा की शिक्षा के विषय में प्रेमा और रामस्वरूप के विचार अलग-अलग थे। प्रेमा चाहती थी कि उमा को इंट्रेस तक ही पढ़ाया जाए जबकि रामस्वरूप उच्च शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने अपनी बेटी को कॉलेज में पढ़ाकर बी.ए. करवाया। मुझे इनमें से रामस्वरूप के विचार अधिक उचित लगते हैं क्योंकि शिक्षा से व्यक्ति का विकास होता है। उच्च शिक्षा पाकर व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होता है। उसमें साहस आता है जिससे वह अपनी बात उचित ढंग से कह

सकता है। शिक्षा स्त्री-पुरुष के बीच समानता लाने में सहायक होती है। इसके अलावा रामस्वरूप के विचार से स्त्रियाँ समाज में उचित सम्मान एवं गरिमा पाने की पात्र बनती हैं।

प्रश्न 12. गोपाल प्रसाद ऐसा क्यों चाहते थे कि उनकी बहू ज्यादा से ज्यादा दसवीं ही पास हो?

उत्तर- गोपाल प्रसाद स्वयं उच्च शिक्षित थे। वे वकालत के पेशे से जुड़े थे। उनका बेटा शंकर मेडिकल की पढ़ाई कर रहा था। इसके बाद भी वे चाहते थे कि उनकी बहू ज्यादा से ज्यादा दसवीं ही पास हो। उनकी ऐसी चाहत के पीछे यह सोच रही होंगी कि उच्च शिक्षा प्राप्त लड़कियाँ अधिक जागरूक होती है। इससे वे अपने अधिकारों के प्रति सजग होती है। उनमें सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ जाती हैं। ऐसी लड़कियों को बहू बनाने से उन पर अत्याचार नहीं किया जा सकता, उन्हें डरवाया नहीं जा सकता और अपने ऊपर हुए अत्याचार पर मुँह बंद नहीं रखती हैं।

प्रश्न 13. यदि उमा की स्थिति कम पढ़ी-लिखी लड़कियों जैसी होती तो एकांकी का अंत किस तरह अलग होता?

उत्तर- एकांकी की प्रमुख नारी पात्र उमा यदि बी.ए. पास और सुशिक्षित न होती और उसकी स्थिति कम पढ़ी-लिखी लड़कियों-सी होती तो वह सादगी पूर्ण जीवन जीने के बजाय अपनी माँ के कहने पर सज-धजकर गोपाल प्रसाद और शंकर के सामने आती। गोपाल प्रसाद और शंकर उससे अपनी मर्जी से तरह-तरह के सवाल करते और वह सिर झुकाए उत्तर देने को विवश रहती। वह शंकर की चारित्रिक कमजोरी जानते हुए भी खामोश रहती और अपनी बातें दृढ़ता एवं साहस से कह पाती। गोपाल प्रसाद और शंकर को तो ऐसी ही लड़की चाहिए थी। वे उमा को पसंद कर लेते तब एकांकी का अंत सुखद होता और सब खुश रहते।

प्रश्न 14. लड़कियों की शिक्षा और खूबसूरती के बारे में गोपाल प्रसाद के विचार किस तरह अलग थे? 'रीढ़ की हड्डी' नामक पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर- गोपाल प्रसाद पढ़े-लिखे सुशिक्षित वकील थे। उनका बेटा मेडिकल की पढ़ाई कर रहा था परंतु लड़कियों की शिक्षा के बारे में उनका विचारे यह था कि लड़कियों को अधिक पढ़ा-लिखा नहीं होना चाहिए। पढ़ाई-लिखाई तो मर्दो के लिए बनी चीज़ है। इसके विपरीत वे स्त्री के लिए खूबसूरती आवश्यक मानते हैं। यह खूबसूरती चाहे स्वाभाविक हो या कृत्रिम पर नारी के लिए आवश्यक है। इस बारे में पुरुष एक बार तो मान भी जाते हैं पर स्त्रियाँ यह कभी भी मानने को तैयार नहीं। होती हैं कि वे खूबसूरत न दिखें। इस तरह लड़कियों की शिक्षा अरै उनकी खूबसूरती के बारे में गोपाल प्रसाद के विचार परस्पर विरोधी हैं।

प्रश्न 15. गोपाल प्रसाद और शंकर के सामने गीत गाती उमा ने अपना गीत अधूरा क्यों छोड़ दिया?

उत्तर- गोपाल प्रसाद अपने पुत्र शंकर के साथ उसके विवाह के लिए उमा को देखने आए थे। उमा अपने पिता रामस्वरूप के कहने पर मीरा का पद 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरों न कोई तल्लीनता से गा रही थी। अचानक उमा की दृष्टि ऊपर उठी, उसने शंकर को देखा और पहचान लिया कि यह वह शंकर है जो लड़कियों के हॉस्टल में आगे-पीछे घूमता था। वहाँ नौकरानी द्वारा पकड़े जाने पर उसके (नौकरानी के) पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे। ऐसे चरित्रहीन लड़के के सामने से उसका आत्मसम्मान रोक रहा था और उसने अपना गीत अधूरा छोड़ दिया।

प्रश्न 16. इस एकांकी में आपको शंकर के व्यक्तित्व में कौन-कौन-सी कमियाँ नज़र आईं, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- गोपाल प्रसाद पेशे से वकील हैं। शंकर उनका पुत्र है जो मेडिकल की पढ़ाई कर रहा है। शंकर उच्चशिक्षित होकर भी चाहता है कि उसकी शादी किसी ऐसी लड़की से हो जो दसवीं से अधिक पढ़ी-लिखी न हो ताकि वह शंकर की किसी उचित-अनुचित बात का जवाब न दे सके और न विरोध कर सके, बस उसकी हाँ में हाँ मिलाती रहे। इसके अलावा शंकर में मौलिक विचारों की कमी है। वह शारीरिक और चारित्रिक रूप से दुर्बल है। वह अपने पिता की हाँ में हाँ मिलाता रह जाता है।

प्रश्न 17. 'रीढ़ की हड्डी' नामक यह एकांकी अपने उद्देश्य में कितना सफल रही है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी के माध्यम से समाज में व्याप्त दहेज की समस्या, लड़कियों को शिक्षा से दूर रखने की साजिश, लड़की के पिता की विवशता, लड़के के पिता की दहेज लोलुपता, युवाओं में शिक्षा एवं चरित्र की मजबूती के प्रति घटती रुचि आदि समस्याओं को उभारने का प्रयास किया गया है। एकांकी की प्रमुख नारी पात्र उमा ने अपनी उच्च शिक्षा, साहस और वाक्पटुता से शंकर और उसके पिता को जवाब दिया है और शंकर की पोल खोलकर लड़कियों

के लिए उच्च शिक्षा की सार्थकता सिद्ध कर दिया है, उसे देखते हुए यह एकांकी अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल रही है।

प्रश्न 18. रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर उमा की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि वर्तमान में इनकी कितनी उपयोगिता है?

उत्तर- उमा 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की प्रमुख नारी पात्र है। वह बी.ए. पास सुशिक्षित है। उसमें अवसर पर अपनी बातें कहने की योग्यता है। एकांकी की कथावस्तु उमा के इर्द-गिर्द घूमती है। उमा की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- बी.ए. पास उमा सुशिक्षित तथा प्रगतिशील विचारों वाली लड़की है। उसे उच्च शिक्षा पाने पर शर्म नहीं बल्कि गर्व है।
- उमा बनावटी सुंदरता से दूर रहने वाली तथा सादगी पसंद लड़की है।
- उमा शिक्षा के साथ ही संगीत एवं पेंटिंस में भी रुचि रखती है।
- उमा स्वाभिमानिनी है। उसे गोपाल प्रसाद द्वारा अपने बारे में तरह-तरह से पूछताछ किया जाना अच्छा नहीं लगता है।
- उमा साहसी एवं वाक्पटु है। वह गोपाल प्रसाद की बातों का जवाब देकर निरुत्तर कर देती है।

प्रश्न 19. रामस्वरूप अपने घर की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान देते हुए दिखाई देते हैं। उनका ऐसा करना समाज की किस मानसिकता की ओर संकेत करता है तथा ऐसी प्रथाओं के पीछे क्या कारण होते होंगे?

उत्तर- गोपाल प्रसाद अपने बेटे शंकर के साथ उमा को देखने आने वाले हैं। यह जानकर रामस्वरूप अपने बैठक के कमरे को सजाते हैं। वे तख्त बिछवाकर उस पर दरी और चादर बिछवाते हैं। कमरे में हारमोनियम और सितार रखवा देते हैं। उन्होंने घर की सजावट पर विशेष ध्यान दे रखा है। उनका ऐसा करना समाज की दिखावटी या अधिक बढ़-चढ़कर दिखाने की मानसिकता की ओर संकेत करता है ताकि दूसरे लोग प्रभावित हों और उसे सामर्थ्यवान समझे। ऐसी प्रथाओं के पीछे आगंतुकों को प्रभावित करने की प्रवृत्ति, अपनी सुंदर अभिरुचि का प्रदर्शन तथा अपनी हैसियत दर्शाने की चाहत होती है।

अनुच्छेद-लेखन

आशय : किसी दिए हुए विषय पर क्रमबद्ध ढंग से सीमित शब्दों में संबद्ध विचारों अथवा भावों को प्रस्तुत करना ही अनुच्छेद-लेखन कहलाता है।

विशेषताएँ :

1. अनुच्छेद-लेखन किसी निबंध का सार नहीं होता है बल्कि यह अपने-आप में पूर्ण होता है।
2. इसमें भूमिका लिखने और निष्कर्ष देने की आवश्यकता नहीं होती।
3. इसे किसी निश्चित ढाँचे में बँधने की अपेक्षा नहीं होती है।
4. दिए गए विषय को केंद्र में रखकर उसका विस्तार किया जाता है।
5. निर्धारित शब्द-सीमा (80-100) में लिखने का प्रयत्न किया जाता है।

सावधानियाँ :

1. सबसे ऊपर शीर्षक अवश्य लिखना चाहिए।
2. अनुच्छेद दिए गए विषय पर केन्द्रित होना चाहिए।
3. वाक्य एक-दूसरे से जुड़े और क्रमिक विकास करते हुए दिखाई देने चाहिए।
4. अनुच्छेद में स्पष्टता और सहजता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
5. अनावश्यक प्रसंगों को शामिल करने से बचना चाहिए।
6. अनुच्छेद-लेखन में अनावश्यक विस्तार, बड़े उदाहरणों, लंबे उद्धरणों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
7. दिए गए संकेत बिन्दुओं को अनुच्छेद-लेखन में शामिल करना चाहिए।

(1)

विषय : संघर्ष ही जीवन है

संकेत-बिंदु :

- संघर्ष और जीवन एक-दूसरे के पूरक
- जीवन के संघर्ष का आधार कर्म
- संघर्ष से बचने वाला कायर।

संघर्ष ही जीवन है

संघर्ष का दूसरा नाम ही जीवन है। एक तरह से दोनों एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं और पूरक भी। उसी का जीना सार्थक है, जिसने जीवन के रहस्य को समझ लिया है। भयंकर से भयंकर विपरीत स्थिति पर विजय पाने का एक ही रास्ता है पूरे आत्मविश्वास के साथ बाधा-विरोधों से जूझ जाना और संघर्ष करना। जो संघर्ष से बचकर चलता है वह कभी सफल नहीं हो सकता है बल्कि कायर कहलाता है। जो संसार रूपी सागर की ऊँची-उफनती लहरों को चुनौती देना सीख लेता है, सफलता की अनुपम-मणियाँ वही बटोरता है। जो कर्म से हीन होकर और डरकर किनारे बैठ गया, वह तो जीवन का दाँव ही हार जाता है। इसी भाव को कबीर ने इस तरह से कहा है- 'जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।' यह 'गहरे पानी' पैठकर खोजना क्या है? यही है संघर्ष अथवा चुनौती को स्वीकारना, कर्म की आँच में तपना। 'गीता' का यही अमर संदेश है कि 'कर्म करना ही मनुष्य का अधिकार है'।

जीवन-पथ पर सफलता मिले या विफलता, संघर्ष करने का संकल्प शिथिल नहीं पड़ना चाहिए। एक कवि के शब्दों में :

जब नाव जल में छोड़ दी, तूफ़ान में ही मोड़ दी,
दे दी चुनौती सिंधु को, तो पार क्या, मझधार क्या!

जिसमें अपने उसूलों पर अटल रहने की दृढ़ता है, जिसका संकल्प सच्चा है, वही जीवन के संघर्ष में विजयी होता है। जीवन में सभी को विपत्तियाँ सहनी पड़ती हैं। जीवन में भले ही कितने संकट आए, परंतु जो व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होता, जो कष्टों का साहस से सामना करता है, जो यह मानता है कि कर्म ही जीवन का मूल आधार है और सदा प्रयत्न, परिश्रम, साहस और उद्योग में लगा रहता है, वस्तुतः उसी मनुष्य का जीवन सफल होता है।

(2)

विषय : वृक्षारोपण

संकेत बिंदु :

- वृक्षों से लाभ
- वृक्ष काटने से हानियाँ
- भूमि संरक्षण में वृक्षों का योगदान।

वृक्षारोपण

वृक्ष प्रकृति की अनुपम देन हैं। ये पृथ्वी और मनुष्य के लिए वरदान हैं। किसी क्षेत्र विशेष में अनेक वृक्षों का समूह वन कहलाता है। वन हमारे लिए ईश्वर की सबसे विशिष्ट भेंट हैं। ये पृथ्वी और देश की सुंदरता बढ़ाते हैं। ये देश की सुरक्षा और समृद्धि में भी सहायक होते हैं। वृक्ष लगाना उसे पूजना उसकी सुरक्षा करने की महत्ता पुराने जमाने से ही चली आ रही है। पुराणों के अनुसार, एक वृक्ष लगाने का उतना पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों के सुयश से मिलता है। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम पेड़ों के इसी महत्त्व को भूलते चले जा रहे हैं।

मानव बस्ती बसाने के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। वन काटे जा रहे हैं और उनके स्थान पर मैदान बनाकर खेती की जा रही हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने लगा है। वनों से मिलने वाले लाभ अब समाप्त हो रहे हैं। वनों से मिलने वाली इमारती लकड़ी, लाख, रबर, गोंद आदि भी कम हो गए हैं। हर तरफ वनों के कटने से अनेक लोगों की रोजी-रोटी भी समाप्त हो गई है। वन भूमि का कटाव रोकने में सहायक होते हैं तथा नदियों की गति को भी नियंत्रित रखते हैं।

वनों की बदौलत भूमि के उपजाऊ कण सुरक्षित रहते हैं लेकिन आज इन सभी चीजों का अभाव हो गया है। वृक्षों की जड़ें भूमि के कटाव को रोकते हैं। धरती की नमी को बनाए रखते हैं जिससे गर्मी से राहत मिलती है। आज अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मानव जीवन को खुशहाल बनाने की आवश्यकता है।

(3)

विषय : ओछी मानसिकता है दहेज

संकेत बिंदु :

- दहेज एक सामाजिक बुराई
- दहेज के दुष्परिणाम
- दहेज-समस्या का समाधान

ओछी मानसिकता है दहेज

दहेज बहुत ही विकट एक सामाजिक बुराई है। वर्तमान समय में दहेज मायावी जाल का रूप धारण करते जा रहा है। अब विवाह दो परिवारों को जोड़ता नहीं बल्कि सौदेबाजी और व्यापार का जरिया बन गया है। सौदा हो जाने के बाद भी वर-पक्ष का लालची मन जब सौदे की धज्जियाँ उड़ाते हुए और अधिक धन की माँग करता है तो दहेज प्रबल समस्या बन जाता है। गरीब कन्याएँ तथा उनके माता-पिता दहेज के नाम से भी घबराते हैं। परिणाम यह होता है कि उनके जीवन में अशांति, भय और उदासी छा जाती है। माँ-बाप बच्चों का पेट काटकर पैसे बचाने लग जाते हैं। यहाँ तक कि वे रिश्वत, गबन जैसे अनैतिक कार्य करने से भी नहीं चूकते हैं।

दहेज के लालची लोग नई-नवेली बहुओं को परेशान करते हैं। माँग पूरी न होने पर उन्हें बुरी तरह से मारा-पीटा जाता है, उन्हें बेइज्जत करके घर से बाहर निकाल दिया जाता है। दहेज़ के आगे सभ्य और शिक्षित समाज का चोला उतर जाता है। यदि बहू को शारीरिक कष्ट और मानसिक पीड़ा देने पर भी दहेज पूरा नहीं हुआ तो मिट्टी का तेल छिड़क कर उसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है।

दहेज की समस्या के समाधान के लिए कानून भी बने हैं। दो-चार परिवार पुलिस की ज़्यादतियों और अदालतों के निर्णयों से दंडित भी हुए, पर इससे क्या? दहेज लोभी कानून की खिल्ली उड़ाते हुए फिर किसी और बहू-बेटी को निशाना बनाते हैं। यह समस्या पूरे देश में महामारी की तरह फैल हुई है। इस समस्या के समाधान के लिए समाज में जागरुकता फैलाने की जरुरत है। लड़का-लड़की को एक समान मानना, दहेज़ माँगने वालों का सामाजिक बहिष्कार करना तथा तड़क-भड़क और खर्चीली शादियों का विरोध करना जरुरी है।

पत्र-लेखन

पत्र का महत्त्व- दैनिक व्यवहार में पत्र-लेखन अति महत्त्वपूर्ण है। पत्र सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचना भेजने एवं प्राप्त करने में पत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्र सदैव लिखित रूप में ही होता है।

पत्र के अंग-

आरंभ- (1) संबोधन (2) अभिवादन (3) विषय निरुपण

मध्य- (4) विषय विस्तार (5) निवेदन

समापन- (6) धन्यवाद ज्ञापन (7) प्रेषक का नाम, पता व दिनांक

पत्र के प्रकार :

(1) औपचारिक पत्र - जो पत्र अधिकारियों, कार्यालय के प्रमुखों, संस्था के प्रधानों तथा किसी प्रतिष्ठान के संचालकों को आवश्यकता पढ़ने पर लिखे जाते हैं, वे औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

इन पत्रों में कार्यालयी, शिकायती, संपादकीय और व्यावसायिक पत्र शामिल होते हैं।

(2) अनौपचारिक पत्र - जो पत्र सगे संबंधियों, रिश्तेदारों, पारिवारिक लोगों एवं मित्रों को यथावसर लिखे जाते हैं, वे अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं।
इन पत्रों में व्यक्तिगत (निजी), पारिवारिक और सामाजिक पत्र शामिल होते हैं।

औपचारिक पत्र का उदाहरण

अपने विद्यालय के प्राचार्य को संध्याकालीन खेल की उचित व्यवस्था के लिए पत्र लिखिए।

दिनांक 10.08.2023

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र.-1,
सेक्टर 31-डी, चंडीगढ़।

विषय : **विद्यालय में संध्याकालीन खेलों की उचित व्यवस्था के संबंध में।**

महोदय,
आपसे सविनय निवेदन है कि मैं रघुवीर इस विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा नौवीं का छात्र हूँ। इस विद्यालय के कई छात्र और छात्राएँ संकुल एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। अब वे सभी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना चाहते हैं किन्तु विद्यालय में शाम को अभ्यास करने और खेलने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। कुछ छात्र-छात्राएँ क्रिकेट, हॉकी, खो-खो, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल आदि खेलों में भाग लेना चाहते हैं जबकि कुछ छात्रों की अभिरुचि एथलेटिक्स लंबी दौड़, ऊंची दौड़, बाधा दौड़ इत्यादि में है। मेरा विश्वास है कि कुशल प्रशिक्षक और खेलों की समुचित व्यवस्था मिलने से बच्चे विद्यालय का गौरव बढ़ा सकते हैं।
अत: आपसे आग्रह है कि विद्यालय में संध्याकालीन खेलों की उचित व्यवस्था कराने की महती कृपा करें। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।
धन्यवाद सहित।

आपका विश्वासी

रघुवीर
कक्षा नौवीं

<u>अनौपचारिक</u> पत्र का उदाहरण

परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

दिनांक 12.09.2023
3/15 टैगोर नगर,
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

प्रिय मित्र त्रिलोचन,
नमस्ते।
ईश्वर की असीम अनुकंपा से मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और तुम्हारे कुशल होने की कामना करता हूँ। मैंने कल शाम को तुम्हारे पिताजी को फोन किया तो उनसे ज्ञात हुआ कि तुमने दसवीं बोर्ड की परीक्षा में आगरा मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह समाचार सुनकर मेरा मन खुशी से भर गया। दसवीं बोर्ड की परीक्षा में और आगरा मंडल में प्रथम स्थान आने पर तुम्हें बहुत बहुत बधाई। मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम परीक्षा में प्रथम श्रेणी से जरुर उत्तीर्ण होगे

लेकिन आगरा मंडल में भी प्रथम स्थान प्राप्त करोगे यह उम्मीद से बढ़कर है और बहुत ही अच्छा है। तुम्हारी मेहनत और नियमित अध्ययन ने ही तुम्हें इस सफलता तक पहुंचाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इससे आगे भी तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी और तुम मेरे अनुमान को सच साबित करोगे। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम से जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

मैं सदा यही कामना करूंगा कि तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इतना ही नहीं तुम पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी प्राप्त करो और देश की सेवा करते हुए अच्छा जीवन व्यतीत करो। दसवीं परीक्षा और आगरा मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक बार पुन: तुम्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र
श्याम शरण

लघुकथा-लेखन

लघुकथा : किसी नैतिक उद्देश्य को ध्यान में रखकर पात्रों के माध्यम से किसी घटना के संक्षिप्त एवं रोचक वर्णन को लघुकथा कहते हैं।

विशेषताएँ : लघुकथा लिखना एक कला है। इसकी विशेषताएँ निम्नवत हैं -

(1) कोई घटना सीमित शब्दों में प्रस्तुत होती है।
(2) पाठक को चिंतन करने के लिए उद्वेलित करती है।
(3) कहानी का कथानक, पात्र या वातावरण प्रभावशाली होता है।
(4) इसमें नैतिक संदेश निहित होता है।
(5) काल्पनिक वर्णन में भी यथार्थ दिखाई पड़ता है।

सावधानियाँ : लघुकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(1) लघुकथा का शीर्षक उपयुक्त एवं आकर्षक होना चाहिए।
(2) लघु कथा में पात्र अथवा चरित्र काम होने चाहिए।
(3) एक ही मुख्य घटना का उल्लेख होना चाहिए।
(4) दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कथा का वर्णन होना चाहिए।
(5) कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए, जिससे पाठकों को आसानी से समझ आ जाए।
(6) घटनाओं में पारस्परिक सामंजस्य होना चाहिए।
(7) लघुकथा से कोई-न-कोई उपदेश / संदेश मिलना चाहिए।

लघुकथा (1)

शीर्षक – सीख

एक दिन कुछ बालक विद्यालय से लौट रहे थे कि रास्ते में एक बगीचे में अमरूद से लदे पेड़ देखकर सभी बच्चे उसमें घुस गए। माली को वहाँ न पाकर बच्चे पेड़ पर चढ़ गए और अमरूद तोड़कर खाने लगे। एक बच्चा नीचे खड़ा बड़े बच्चों से कह रहा था कि वे उसे भी थोड़े अमरूद तोड़ कर दे दें। पेड़ पर चढ़े एक बच्चे ने एक अमरूद उसकी ओर उछाल दिया।

अमरूद पाकर बालक बड़ा प्रसन्न हुआ और अमरूद खाने लगा। इतने में ही एक ने ज़ोर से शोर मचाया, माली आ गया भागो.....। बच्चे पेड़ से उतरकर भागने लगे। वह छोटा बालक अमरूद खाने में लगा हुआ था उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था तभी माली ने आकर उसे धर दबोचा। माली उस बालक को पहचान गया। उससे बोला, तुम्हें बगीचे में चोरी करते हुए लज्जा नहीं आती? एक तो तुम्हारे पिता नहीं हैं ऊपर से तुम इन बच्चों के साथ गंदी आदतें सीख रहे हो।

बालक यह सुनकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। बालक को रोता देखकर माली ने समझाया, "तुम्हारी माता भविष्य के सुनहरे सपने देखती हैं। तुम्हें तो अच्छी तरह पढ़ना चाहिए ताकि तुम बड़े होकर अपनी माँ का हाथ बँटा सको।"

बालक समझ गया उसने माली की बात गाँठ बाँध ली। इसके बाद वह बालक कभी उस बगीचे में नज़र नहीं आया। आगे चलकर यही बालक हमारे देश के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के रूप में विख्यात हुए।

लघुकथा (2)

शीर्षक – मूर्खता का परिणाम

रेगिस्तान के किनारे स्थित एक गाँव में एक व्यापारी रहता था। वह ऊँटों का व्यापार करता था। वह ऊँटों के बच्चों को खरीदकर उन्हें शक्तिशाली बनाकर बेच देता था। इससे वह ढेर सारा धन कमाता था। व्यापारी ऊँटों को पास के जंगल में घास चरने के लिए भेज देता था जिससे उनके चारे का खर्च बचता था। उनमें से एक ऊँट का बच्चा बहुत शैतानथा। वह प्राय: समूह से दूर चलता था और इस कारण पीछे रह जाता था। बड़े ऊँट हरदम उसे समझाते थे, परंतु वह सुनता नहीं था। इसलिए उन सबने उसकी परवाह करना छोड़ दिया।

एक बार जंगल में एक शेर गुजरा जहाँ ऊँट चर रहे थे। उसने झुरमुट में से झाँककर देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि ऊँट का एक बड़ा समूह है लेकिन वह ऊँटों पर हमला नहीं कर सकता था क्योंकि समूह में ऊँट उससे बलशाली थे। इस कारण वह मौके की तलाश में वहाँ छुपकर खड़ा हो गया। समूह के एक बड़े ऊँट को खतरे का आभास हो गया। ऊँटों ने एक मंडली बनाकर जंगल से बाहर निकलना आरंभ कर दिया। शेर ने मौके की तलाश में उनका पीछा करना शुरू किया।

बड़े ऊँट ने विशेषकर छोटे ऊँट को सावधान किया। कहीं वह कोई परेशानी न खड़ी कर दे। पर छोटे ऊँट ने ध्यान नहीं दिया और वह लापरवाही से चलता रहा। छोटा ऊँट अपनी मस्ती में अन्य ऊँटों से पीछे रह गया। जब शेर ने उसको देखा तो वह उस पर झपट पड़ा। छोटा ऊँट अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागा, पर वह अपने आप को उस शेर से नहीं बचा पाया। उसका अंत बुरा हुआ क्योंकि उसने अपने बड़ों की आज्ञा का पालन नहीं किया था।

लघुकथा (3)

शीर्षक – संगति का प्रभाव

बनारस के पास एक छोटे-से नगर में सेठ श्यामदास रहते थे। उनका इकलौता पुत्र था, जो बहुत ही होनहार था जिसका नाम आदित्य था। विद्यालय के सभी शिक्षक आदित्य को बहुत पसंद किया करते थे क्योंकि वह आज्ञाकारी होने के साथ-साथ पढ़ाई में भी बहुत अच्छा था। उसकी कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे भी पढ़ते थे जिनकी आदत खराब थी। न मालूम कैसे धीरे-धीरे आदित्य की मित्रता उन बच्चों के साथ हो गई। अब वह भी उन बच्चों की भाँति विद्यालय से भागने लगा। उसे कक्षा छोड़कर जाना अच्छा लगने लगा। वह पहले की भाँति विद्यालय तो आता, लेकिन बीच में ही विद्यालय से बाहर निकलकर उन मित्रों के साथ सिनेमा देखता, बाज़ार घूमता और जुआ खेलता। उसे सिगरेट पीने की लत भी लग गई थी। सेठ श्यामदास इन सब बातों से बेखबर थे। वे नहीं जानते थे कि उनका प्रिय पुत्र किस प्रकार बुरी संगति में पड़ गया है।

एक दिन किसी कार्य से वे बाज़ार निकले, तो उन्होंने देखा कि आदित्य कुछ बच्चों के साथ पेड़ के नीचे बैठकर सिगरेट पी रहा है। पहले तो उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ किंतु पास जाकर देखा, तो समझ गए कि आदित्य अब बुरी संगति में पड़ चुका है। अपने पिता को सामने खड़ा देखकर आदित्य झेंप गया। उसे कुछ जवाब देते नहीं बन पड़ा। बिना कुछ कहे वह अपने पिता के साथ हो लिया। रास्ते भर पिता-पुत्र में कोई बातचीत नहीं हुई। वह समझ चुका था कि उसने अपने पिता को बहुत कष्ट पहुँचाया है। घर आकर उसने अपने पिता से क्षमा माँगी और उन गलत दोस्तों का साथ छोड़ देने का प्रण लिया। उसे समझ आ गया था कि बुरे लोगों के साथ रहकर कुछ भला नहीं हो सकता।

ई-मेल-लेखन

प्रश्न-1 ई-मेल लेखन क्या है?

उत्तर- ई-मेल का अर्थ है- इलेक्ट्रॉनिक संदेश। अर्थात् कंप्यूटर और इंटरनेट की सहायता से एक ई-मेल आईडी से अन्य लोगों की ई-मेल आई डी पर सूचनाएँ भेजना ही ई-मेल कहलाता है।

प्रश्न-2 ई-मेल के लिए क्या-क्या आवश्यक होता है?

उत्तर- कंप्यूटर या स्मार्ट फोन, इंटरनेट, ब्राउजर, सर्वर, मेल एड्रेस, प्रिंटर एवं पावर सप्लाई एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक चीजों की जरूरत होती है।

प्रश्न-3 ई-मेल कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर- ई-मेल दो प्रकार के होते हैं। एक होता है personal email और दूसरा होता है official email

Personal Email - इसे लोग अपने लिए काम के लिए बनाते हैं। इसके लिए बहुत सारी वेबसाइट हैं जो ई-मेल की सुविधा देती हैं। पर्सनल ई-मेल में उन वेबसाइट का डोमेन यूज़ होता है।

Official Email - इन ई-मेल का यूज़ ऑफिसियल वेबसाइट या कंपनी के लिए किया जाता है इसके लिए आपके पास खुद की वेबसाइट या डोमेन होना चाहिए जैसे मेरी कंपनी है example तो मेरी वेबसाइट का डोमेन है example.xyz तो मेरी कंपनी का ऑफिसियल मेल इस डोमेन पर होगा जैसे info@example.xyz

प्रश्न-4 ई-मेल का उदाहरण :

सुझाव (छात्र-छात्राएँ कंप्यूटर शिक्षक की सहायता से ई-मेल करना सीखें।)

संवाद-लेखन

संवाद - 'वाद' मूल शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से 'संवाद' शब्द बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बातचीत' है। इसे वार्तालाप भी कहा जाता है। सामान्य रूप से दो लोगों के बीच होने वाली बातचीत को संवाद कहा जाता है।

संवाद लेखन - दो लोगों में हुई बातचीत को रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से लिखने की कला को संवाद-लेखन कहते हैं।

विशेषताएँ -

(1) संवाद में सहजता और स्वाभाविकता होनी चाहिए।

(2) पात्रों की भाषा उनकी स्थिति तथा संस्कार के अनुसार ही होनी चाहिए।

(3) संवाद की शैली प्रभावशाली होनी चाहिए।

(4) संवाद की भाषा में शालीनता अवश्य होनी चाहिए। अशिष्ट भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।

(5) संवाद लेखन में सरल तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।

(6) भावों एवं विचारों की पुनरुक्ति से बचना चाहिए।

उदाहरण-1

प्रश्न 1. गाँव से कुछ दूरी पर रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। दो मित्र वहाँ पीड़ितों की सहायता के लिए जाना चाहते हैं। उनके मध्य हुए संवाद का लिखिए।

उत्तर-

अक्षर – नमस्ते संजीव! घबराए हुए कहाँ से भागे आ रहे हो।

संजीव – नमस्ते अक्षर! तुमने सुना नहीं शायद, रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए हैं।

अक्षर – क्या जान-माल की ज़्यादा क्षति हुई है?

संजीव – हाँ, दो डिब्बे पटरी से उतरकर आपस में टकरा गए हैं।

अक्षर – पर, अब तुम कहाँ जा रहे हो?

संजीव – मैं गाँववालों को खबर करने जा रहा हूँ।

अक्षर – मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं लोगों से कहूँगा कि यात्रियों के लिए कुछ आवश्यक सामान भी ले चलें।

संजीव – यह ठीक रहेगा।

अक्षर – मैं गोपी चाचा से कहता हूँ कि वे अपनी जीप से सबको ले चलें। उनकी जीप से घायलों को अस्पताल तक पहुँचाया जा सकता है।

संजीव – डॉ. रमेश अंकल को भी साथ ले चलना। वे घायलों की प्राथमिक चिकित्सा कर सकेंगे।

अक्षर – तुम्हारा यह सुझाव बहुत अच्छा है।

संजीव – चलो, सबको लेकर वहाँ जल्दी से पहुंचते हैं।

उदाहरण-2

प्रश्न 2. बाढ़ आने से कई गाँव जलमग्न हो गए हैं। दो मित्र उनकी सहायता के लिए जाना चाहते हैं। उनके बीच हुए संवाद का लेखन कीजिए।

उत्तरः

पंकज – अमर! क्या तुमने आज का अखबार पढ़ा?

अमर – नहीं, क्या कोई विशेष खबर छपी है?

पंकज – हाँ बाढ़ के कारण कई गाँव पानी में डूब रहे हैं। खेतों में पानी भरने से फसलें डूब रही हैं।

अमर – ऐसे में लोगों को बड़ी परेशानी हो रही होगी?

पंकज – लोग जैसे-तैसे अपने सामान और मवेशियों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं।

अमर – ऐसो की मदद के लिए हमें तुरंत चलना चाहिए। वे जहाँ भी हैं, उनकी मदद करनी चाहिए।

पंकज – मैं अपने मित्रों के साथ कुछ कपड़े, खाने की वस्तुएँ, मोमबत्ती, माचिस आदि इकट्ठा करके आज दोपहर तक पहुँच जाना चाहता हूँ।

अमर – यह तो बहुत अच्छा रहेगा। मैं अपने साथियों से कहूँगा कि वे कुछ रुपये भी दान स्वरूप दें, ताकि उनके लिए पानी की बोतलें और ज़रूरी दवाइयाँ खरीदा जा सके। पंकज – तुमने बहुत अच्छा सोचा है। क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?

अमर – मैं अवश्य साथ चलूँगा और मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करूँगा।

उदाहरण-3

प्रश्न 3.बिजली की बार-बार कटौती से उत्पन्न स्थिति से परेशान महिलाओं की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

उत्तरः

तनु – क्या बात है विभा? कुछ परेशान-सी दिख रही हो?

विभा – क्या कहूँ तनु, बिजली की कटौती से परेशान हूँ।

तनु – ठीक कह रही हो बहन, बिजली कब कट जाए, कुछ कह ही नहीं सकते हैं।

विभा– तनु, बिजली न होने से आज तो घर में बूंदभर भी पानी नहीं है। समझ में नहीं आता, नहाऊँ कैसे, बरतन कैसे धोऊँ।

तनु – आज सवेरे बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजने में बड़ी परेशानी हुई।

विभा – यह तो रोज़ का नियम बन गया है। सुबह-शाम बिजली कट जाने से घरेलू कामों में बड़ी परेशानी होने लगी है।

तनु – दिनभर ऑफिस से थककर आओ कि घर कुछ आराम मिलेगा, पर हमारा चैन बिजली ने छीन लिया है।

विभा – अगले सप्ताह से बच्चों की परीक्षाएँ हैं। मैं तो परेशान हूँ कि उनकी तैयारी कैसे कराऊँगी?

तनु – चलो आज बिजली विभाग को शिकायत करते हुए ऑफिस चलेंगे।

विभा – यह बिलकुल ठीक रहेगा।

उदाहरण-4

प्रश्न 4. परीक्षा के एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

उत्तरः

अक्षर – नमस्ते विमल, कुछ परेशान से दिखते हो?

विमल – नमस्ते अक्षर, कल हमारी गणित की परीक्षा है।

अक्षर – मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?

विमल – पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।

अक्षर – ऐसा क्यों?

विमल – जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।

अक्षर – कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ। शायद तुम्हारी समस्या हल हो जाए।

विमल – पर इससे तो तुम्हारा समय बेकार जाएगा।

अक्षर – कैसी बातें करते हो यार, अरे! तुम्हें पढ़ाते हुए मेरा दोहराने का काम स्वतः हो जाएगा। फिर, इतने दिनों की मित्रता कब काम आएगी।

विमल – पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।

अक्षर – सूत्र रटने की चीज़ नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम ज़रूर हल कर लोगे।

विमल – तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

उदाहरण-5

प्रश्न 5. नए विद्यालय में अपने पुत्र का दाखिला दिलवाने गए अभिवावक और प्रधानाचार्य के मध्य हुए वार्तालाप का संवाद लेखन कीजिए।

उत्तरः

अभिभावक – सर! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?

प्रधानाचार्य – 'हाँ-हाँ' अवश्य आइए और काम बताइए।

अभिभावक – मैं अपने बेटे का दाखिला इस स्कूल में कराना चाहता हूँ।

प्रधानाचार्य – कौन-सी कक्षा में?

अभिभावक – ग्यारहवीं कक्षा में।

प्रधानाचार्य – उसने दसवीं कौन से विद्यालय से उत्तीर्ण की है?

अभिभावक – ....पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन से।

प्रधानाचार्य – तुम अपने बच्चे को पब्लिक स्कूल से यहाँ सरकारी स्कूल में पढ़ाना चाहते हो, ऐसा क्यों?

अभिभावक – मैंने इस स्कूल का नाम सुना है। यहाँ पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था है और खर्च नाम मात्र का भी नहीं है। यह पब्लिक स्कूल वाले तो हमें लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

प्रधानाचार्य – आपके बेटे की दसवीं कक्षा में कितनी सी.जी.पी. है?

अभिभावक – जी, 8.5 सी.जी.पी.।

प्रधानाचार्य – आप दाखिला कहाँ चाहते हैं-विज्ञान, कॉमर्स या ......।

अभिभावक – मुझे विज्ञान वर्ग में दाखिला दिलवाना है।

प्रधानाचार्य – आप कमरा सं.15 में मिस्टर शर्मा से मिल लीजिए।

अभिभावक – जी, धन्यवाद।

सूचना-लेखन

आशय : मनुष्य तरह-तरह की जानकारियों से अवगत होना चाहता है। इसलिए वह सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। इसी तरह सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ भी कुछ आवश्यक सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाना चाहती हैं। जन साधारण की भलाई हेतु वे समय-समय पर ऐसा करती रहती हैं।

सूचना- लेखन : सूचना-लेखन एक तरह की कला है। आम लोगों के लिए किसी तथ्य, विषय या घटना की लिखित रूप में जानकारी देना ही सूचना-लेखन कहलाता है।

महत्त्व : सूचना-लेखन के माध्यम से आम जनता से सीधे संवाद स्थापित किया जाता है। इसके माध्यम से कम खर्च और अल्प परिश्रम से अधिकाधिक लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाई जाती हैं। छात्रों को भी तरह-तरह की सूचनाएँ विद्यालय के सूचनापट्ट पर लिखी मिलती हैं। सूचनाएँ प्रायः ऐसे स्थान पर लिखी जाती हैं, जहाँ लोगों द्वारा वे आसानी से देखी और पढ़ी जा सकें। इन्हें कॉलोनियों और रिहायशी इलाकों के मुख्य द्वार पर या प्रायः कॉलोनी के सूचनापट्टों पर लिखी मिल जाती हैं।

सूचना-लेखन में ध्यान देने योग्य बातें-

- सूचना प्रायः तीन या चार वाक्यों में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना पूर्ण और आसानी से समझ में आने वाली होनी चाहिए।
- सूचना सरल शब्दों में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना की भाषा प्रभावपूर्ण और मर्यादित शब्दों में लिखी जानी चाहिए।
- सूचना की लिखावट पठनीय होनी चाहिए।
- सूचना देने वाले का नाम या स्थान विशेष की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।
- सूचना देने वाले के हस्ताक्षर और दिनांक अवश्य लिखा जाना चाहिए।

सूचना-लेखन की विधि-

- सूचना लिखते समय सबसे ऊपर विद्यालय या संस्था का नाम लिखा जाता है। इससे ज्ञात होता है कि सूचना किस कार्यालय द्वारा दी जा रही है; जैसे-

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, मुरार छावनी, ग्वालियर

खेल परिषद

- मोटे अक्षरों में **सूचना** लिखना चाहिए और दाहिनी तरफ सूचना देने की तारीख लिखना चाहिए।
- इसके बाद सटीक तथा कम शब्दों में शीर्षक **'ट्रायल कार्यक्रम का आयोजन'** लिखना चाहिए।
- उसके नीचे एक अनुच्छेद में मुख्य बातें लिखनी चाहिए।

विद्यालय की खेल परिषद द्वारा आगामी सोमवार दिनांक- 01.05.2023 को प्रातः 9 बजे एक ट्रायल कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा जिसके माध्यम से विभिन्न खेलों- क्रिकेट, टेबल-टेनिस, लंबी दौड़, फुटबॉल, वॉलीबाल, कबड्डी आदि की टीम बनाने हेतु संभावित खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। जो छात्र-छात्राएँ इन गतिविधियों में अपनी खेल प्रतिभा दिखाना चाहते हैं, वे अधोहस्ताक्षरी के पास तीन दिनों के भीतर अपना नामांकन अवश्य करा दें।

करतार सिंह
(खेल शिक्षक)
सचिव, खेल परिषद्

1. सूचना-लेखन की भाषा अलग होती है।
2. इसे अन्य पुरुष में लिखा जाता है। जैसे- सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि
3. सूचना लेखन में कम शब्दों के माध्यम से गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है।
4. शीर्षक दो-तीन शब्दों का होता है। जैसे:- रक्तदान शिविर का आयोजन, कवि सम्मेलन का आयोजन
5. अंत में एक कोने में सूचना लेखक का नाम, पद आदि का उल्लेख होता है।

उदाहरण (1)

प्रश्न 1. आप केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, शक्ति नगर, ग्वालियर के सांस्कृतिक इकाई के सचिव प्रत्यूष / प्रत्यूषा हैं। आपके विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्ति पूर्ण कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिसमें अन्य शहरों के प्रसिद्ध कवि भी पधारेंगे। इस संबंध में सूचना-आलेखन कीजिए।

उत्तर-

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, शक्ति नगर, ग्वालियर

सूचना

दिनांक- 10.08.2023

कवि सम्मेलन का आयोजन

अत्यंत हर्ष का विषय है कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना को जगाने के उद्देश्य से विद्यालय परिसर में देशभक्ति से पूर्ण एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें ग्वालियर के साथ-साथ अन्य शहरों के प्रसिद्ध कवियों को भी आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम की रुपरेखा निम्नवत है-

दिनांक - 15.08.2023

समय - अपराह्न 4:00 बजे

स्थान - विद्यालय परिसर

प्रत्यूष

सांस्कृतिक सचिव

उदाहरण (2)

प्रश्न 2. आप अपने विद्यालय के प्रधान छात्र समीर रंजन हैं। गाँधी जयंती के पावन अवसर पर आपके विद्यालय ने स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय लिया है। इसके लिए सामने वाली बस्ती में साफ़-सफ़ाई करने के अलावा लोगों में स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता फैलाए जाने का निश्चय किया गया है। इसकी सूचना देते हुए एक सूचना आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर-

केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर 47 बी, चंडीगढ़

सूचना

दिनांक- 25.09.2023

स्वच्छता अभियान

विद्यालय की उच्चतर कक्षा के समस्त छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि गाँधी जयंती के पावन अवसर पर उनके स्वच्छता संबंधी सपनों को साकार करने के लिए विद्यालय ने पास के हरिहर नगर की बस्ती में स्वच्छता अभियान चलाने एवं वहाँ रहने वाले लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करने का निर्णय लिया है। सफाई कार्यक्रम में योगदान देने के लिए इच्छुक छात्र-छात्राएँ दिनांक 28.09.2023 तक अधोहस्ताक्षरी के पास अपना नामांकन अवश्य करा लें। कार्यक्रम की रुपरेखा निम्नवत है-

दिनांक - 02.10.2023

समय - प्रात: 8:00-10:00 बजे तक

स्थान - हरिहर नगर

समीर रंजन

प्रधान छात्र

हिंदी पाठ्यक्रम-अ (कोड सं. 002)

कक्षा 9वीं हिंदी - अ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2023-24

- **प्रश्नपत्र दो खंडों, खंड 'अ' और 'ब' में विभक्त होगा।**
- **खंड 'अ' में 44 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।**
- **भारांक-{80(वार्षिक बोर्ड परीक्षा)+20 (आंतरिक परीक्षा)**

निर्धारित समय- 3 घंटे **भारांक-80**

	वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन		
	खंड – अ (बहुविकल्पी प्रश्न)		
	विषयवस्तु	**उपभार**	**कुल भार**
1	अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न		**10**
अ	एक अपठित गद्यांश लगभग 250 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5=5)	5	
ब	एक अपठित काव्यांश लगभग 120 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5) (1x5=5)	5	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/ संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न | (1x16) कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे |		**16**
	व्याकरण		
1	शब्द निर्माण उपसर्ग – 2 अंक, प्रत्यय – 2 अंक, समास – 4 अंक उपसर्ग-प्रत्यय- (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे), समास (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	8	
2	अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद – 4 अंक (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
3	अलंकार – 4 अंक (शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक) (अर्थालंकार : उपमा, रूपक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
3	**पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 1**		**14**
अ	**गद्य खंड**	**7**	
1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x5)	5	

		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन क्षमताओं एवं अभिव्यक्ति का आकलन करने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	ब		**काव्य खंड**	**7**	
		1	क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्य-बोध परखने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)				
	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 1 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 1				
1	अ	**गद्य खंड**			
		क्षितिज से निर्धारित पाठों में से विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे।(विकल्प सहित- 25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)		6	
	ब	**काव्य खंड**			
		क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)		6	**20**
	स	**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 1**			
		कृतिका से निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे। (4x2) (विकल्प सहित- 50-60 शब्द-सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे)		8	
2	**लेखन**				
	क	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों में से किन्हीं तीन विषयों पर लगभग 100 शब्दों में किसी एक विषय पर अनुच्छेद (6x1)		6	
	ख	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में लगभग 100 शब्दों में किसी एक विषय पर पत्र। (5x1)		5	**20**
	ग	दिए गए विषय/शीर्षक आदि के आधार पर लगभग 100 शब्दों में लघुकथा लेखन। (5x1) **अथवा**		5	

		विविध विषयों पर आधारित लगभग 100 शब्दों में औपचारिक ई-मेल लेखन।		
	घ	दी गई परिस्थितियों के आधार पर लगभग 80 शब्दों में संवाद लेखन। (4x1) **अथवा** व्यावहारिक जीवन से संबंधित विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में सूचना लेखन।	4	
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन		20
	अ	**सामयिक आकलन**	5	
	ब	**बहुविध आकलन**	5	
	स	**पोर्टफ़ोलियो**	5	
	द	**श्रवण एवं वाचन**	5	
		कुल		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग–1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग–1,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट – निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे–

क्षितिज, भाग – 1	काव्य खंड	• केदारनाथ अग्रवाल - चंद्र गहना से लौटती बेर (पूरा पाठ) • चंद्रकांत देवताले – यमराज की दिशा (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• चपला देवी – नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया (पूरा पाठ) • हजारीप्रसाद द्विवेदी – एक कुत्ता और एक मैना (पूरा पाठ)
कृतिका, भाग – 1	• विद्यासागर नौटियाल – माटी वाली (पूरा पाठ) • शमशेर बहादुर सिंह – किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया (पूरा पाठ)	

संदर्भ एवं विशेष आभार

1- www.learncbse.in>ncert-solutions- for class 12-hindi

2- https://keepinspringme.in>question

3- www.studyrankers.com>ncert

4- www.cbsetuts.com>ncert-solutions

5- cbseacademic-nic.in

6- ncert.nic.in/textbook